जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

Rashtradoot

जयपुर, शनिवार 18 मार्च, 2023

बड़ी-बड़ी कोठी
बड़े-बड़े फ्लैट

2 साइड ओपन कोठी और फ्लैट्स

60 एमेनिटीज

KEDIA सेजस्थान

KOTHI & WALK-UP APARTMENT

Ajmer Road, Jaipur

एम.आई. रोड़ से एक LEFT पर !

NPO NEW PRODUCT OFFER

WALK-UP APARTMENT

2BHK	GROUND FLOOR	1350 Sq Ft	45 LACS
3BHK	2ND FLOOR	1900 Sq Ft	50 LACS
3BHK	1ST FLOOR	1900 Sq Ft	55 LACS

KOTHI

KOTHI BIG	3BHK	2000 Sq Ft	60 LACS
KOTHI BIGGER	4BHK	2325 Sq Ft	70 LACS
KOTHI BIGGEST	4BHK+M+S	3200 Sq Ft	1 CRORE

WALK-UP APARTMENT

KOTHI BIG

KOTHI BIGGER

KOTHI BIGGEST

www.rera.rajasthan.gov.in | RERA No. RAJ/P/2023/2387

KEDIA

78770 72737

info@kedia.com www.kedia.com

LOCATION QR CODE

विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

मनुष्य प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है

प्रकृति और मानव एक दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। मानव के मनुष्य के जन्म के साथ ही उसका प्रकृति से निकट का सम्बन्ध जुड जाता हैं। प्रकृति अपनी चीजों का उपभोग स्वयं नहीं करती। हमारी आधारभूत जरूरतें जैसे हवा, पानी, भोजन आदि सभी प्रकृति से ही प्राप्त होते है साथ ही प्रकृति ने हमें कई प्रकार के फूल, पक्षियां, पशु, पेड़ पौधे, नीला आकाश, ज़मीन, नदिया, समुद्र, पहाड़, प्रदान किया है। जिससे मनुष्य एक बेहतर और अच्छा जीवन व्यतीत कर पाता है।

यह कहा जा सकता है प्रकृति ही मानव का पोषण करती आई हैं। मनुष्य प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है। यदि मनुष्य प्रकृति के साथ छेडछाड करता रहा तो प्रकृति भी एक दिन इंसान के वजूद के साथ छेडछाड शुरू कर देगी । मनुष्य का यह शरीर भी प्रकृति के पाँच तत्वों से मिल कर बना है, वायु, अग्नि, जल, आकाश, मिट्टी और फिर यह प्रकृति हीं इस शरीर को वापस अपने में मिला लेती है। हम पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व को जारी रखना चाहते हैं तो प्रकृति का संतुलन हर हालत में बनाये रखना होगा। यदि प्रकृति के अनुरूप हमने अपने आप को ढाल लिया तो ठीक नहीं तो अस्तित्व समाप्त होने का खतरा उत्पन्न हो जायेगा।

प्रकृति व पर्यावरण एक–दूसरे के पूरक हैं। प्राकृतिक संपदाओं के महत्व को समझना, उनका किफायती उपयोग करना, उनके संरक्षण को प्राथमिकता देना हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। जल, जंगल और जमीन प्रकृति के तीन प्रमुख तत्व हैं जिनके बगैर हमारी प्रकृति अधूरी है। प्रकृति के इन तीनों तत्वों का इस कदर दोहन किया जा रहा है कि इसका सन्तुलन डगमगाने लगा है। प्रकृति के साथ हम बडे पैमाने पर छेडछाड कर रहे हैं, यह उसी का नतीजा है कि पिछले कुछ समय से भयानक तूफानों, बाढ़, सूखा, भूकम्प जैसी आपदाओं का सिलसिला तेजी से बढ़ा है।

हम प्रकृति की चिंता नहीं करते और यही वजह है कि प्रकृति ने भी अब हमारी चिंता छोड दी है। हमनें बिना सोचे–समझे संसाधनों का दोहन किया है। यही वजह है कि अब पर्यावरण का संतुलन बिगड गया है और बाढ़, सूखा, सुनामी जैसी आपदाएं आ रही हैं। बरसों से पर्यावरण को हम इंसानों ने बहुत नुकसान पहुंचाया है। प्रकृति के साथ इंसान का लगातार खिलवाड एक भयानक विनाश को आमंत्रण दे रहा है, जहां किसी को बचने की जगह नहीं मिलेगी।

मनुष्य का प्रकृति से अटूट सम्बंध है। प्रकृति की रक्षा, उसके संरक्षण और विलुप्ति की कगार पर पहुंच रहे जीव-जंतु तथा वनस्पति की रक्षा का संकल्प प्रत्येक मानव का है। प्रकृति का संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से सबंधित है। इनमें मुख्यतः पानी, धूप, वातावरण, खनिज, भूमि, वनस्पति और जानवर शामिल हैं।

जल को व्यर्थ में बहा रहे हैं जंगलों को काट रहे हैं और जमीन पर जहरीले कीटनाशक का उपयोग करके उसकी उर्वरक क्षमता और उपजाऊ शक्ति को कमजोर कर रहे हैं। प्रकृति पर मंडराता खतरा जस का तस बना हुआ है। सबसे बड़ा खतरा तो इसे ग्लोबल वार्मिंग से है। धरती के तापमान में लगातार बढ़ते स्तर को ग्लोबल वार्मिंग कहते है।

वर्तमान में ये पूरे विश्व के समक्ष बड़ी समस्या के रुप में उभर रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि धरती के वातावरण के गर्म होने का मुख्य कारण का ग्रीनहाउस गैसों के स्तर में वृद्धि है। इसे लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है जिससे प्रकृति पर खतरा बढ़ता जा रहा है। ये आपदाएँ पृथ्वी पर ऐसे ही होती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से जीव–जन्तु व वनस्पति का अस्तिव ही समाप्त हो जाएगा।

मनुष्य का प्रकृति से अटूट सम्बंध है। प्रकृति की रक्षा, उसके संरक्षण और विलुप्ति की कगार पर पहुंच रहे जीव–जंतु तथा वनस्पति की रक्षा का संकल्प प्रत्येक मानव का है। प्रकृति का संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से सबंधित है। इनमें मुख्यत: पानी, धूप, वातावरण, खनिज, भूमि, वनस्पति और जानवर शामिल हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़–पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनाते हैं।

प्रकृति का संरक्षण हमारे सुनहरे भविष्य का आधार है। मनुष्य जन्म से ही प्रकृति और पर्यावरण के सम्पर्क में आ जाता है। प्राणी जीवन की रक्षा हेतु प्रकृति की रक्षा अति आवश्यक है। वर्तमान समय में विभिन्न प्रजाति के जीव–जंतु, वनस्पतियां और पेड़–पौधे विलुप्त हो रहे हैं जो प्रकृति के संतुलन के लिए बहुत ही भयावह है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समय–समय पर प्रकृति का दोहन करता चला आ रहा है। अगर प्रकृति के साथ खिलवाड होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमें शुद्ध पानी, हवा, उपजाऊ भूमि, शुद्ध पर्यावरण, वातावरण एवं शुद्ध वनस्पतियाँ नहीं मिल सकेंगी। इन सबके बिना हमारा जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा।

हमारा शरीर प्रकृति के पांच तत्वों से मिल कर बना है। यदि हम प्रकृति की रक्षा करेंगे तथा उससे अपनापन रखते हैं तो प्रकृति भी हमारे शरीर की रक्षा करेगी। हम अनेक प्रकार की बीमारियों से बचे रहेंगे। प्रकृति का संरक्षण मानव जाति का संरक्षण है क्योंकि ये प्राकृतिक तत्व ही हैं जो हमें जीवन देते हैं। ऐसे में यह समाज के हर व्यक्ति का दायित्व है कि वह अपने आसपास के प्रकृतिक संसाधनों की रक्षा करे।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

एक अनसुलझी बात

नाम जाने पहचाने हैं, त्रिकोण भी जगजाहिर रहा। किसी एक के प्रति मेरे मत की अभिव्यक्ति को अभद्र न माना जाय! स्वतंत्र मत रखने की मेरी लेखनी के मूल अधिकार को ध्यान में रख कर मेरी अनाधिकार सोच को क्षमा किया जाय!

मेरा अंतस अमृता की रूहानी छटपटाहट को समझ पाता है, इमरोज़ के समर्पण को भी, पर साहिर के confusion को नहीं!

आप सब की प्रतिक्रिया अपेक्षित है....

एक शायर, बहुत नामचीन, affluent, much in demand फिल्म जगत पर अपनी शायरी से छाये हुए,

दूसरा पेंटर...इतना मक़बूल नहीं, कुछ ही जानते होंगे इंद्रजीत पेंटर को!

अपनी लेखनी को अपने से भी ज़्यादा प्यार करने वाला शायर, जो सारी दुनिया से नाराज़! इसके रिवाज़ों रवायतों से शिकायत करता सा, कुछ लेफ्टिस्ट, सारी दुनिया से बग़ावत की उम्मीद रखने वाला, ख़ुद ही वो रवायतें न तोड़ सका..!

और ये पेंटर साहब अपनी कूंची को, जो उनकी रोज़ी रोटी भी थी, विश्राम दे कर अमृता के ड्राइवर बन गये। ये बिना शोर किए इन सारी जंज़ीरों जिन्हें जात पांत, समाज, रिवाज़ कहते हैं, तोड़ कर अपनी मर्ज़ी का एक रिश्ता गढ़ लेते हैं।

शायर प्यार तो करता है पर प्यार के ज़ख्म को भरना नहीं चाहता, कि कहीं शायरी कुन्द न हो जाये! उसे अपने बहुत हो गए नाम से प्यार है, कुछ अमृता के प्यार से ज्यादा!

पेंटर को सिर्फ अमृता से प्यार है, अमृता के नाम, उसकी शोहरत, अपना वजूद..किसी का भी दबाव उसके प्यार पर नहीं!

तू मेरा समाज मैं तेरा समाज
इससे ज्यादा और कोई समाज नहीं

शायर विधर्मी (मुस्लिम) है, intellectual भी!

सो धर्म परिवर्तन की बात नहीं कर पाते।

अमृता ने कहा भी और लिखा भी कि–

एक बार आवाज़ देते तो धर्म और मज़हब की सब दीवारें पार कर जाती

वो कायर रहे या समझदार, या बस बच के निकलना चाहते रहे, नहीं मालूम...

इमरोज़ लगातार एक ही आवाज़ देते रहे.. अमृता....अमृता और अमृता

ख़ाली कागज़ भी साफ़ दिल जैसा होता है, जिस पर लिख सकते हैं, अपनी जान किसी के नाम

और उसने अपना सारा वजूद ही अमृता के नाम लिख दिया।

अमृता ने कहा–

तुम्हारी जैसी सोच, तुम्हारी जैसी शख्सियत अगर इस दुनियां में न होती, तो तुम्ही बताओ कहाँ जाती मैं!

शायर और पेंटर....

दोनों शख्सियत बिलकुल अलग हैं, कुछ विरोधाभासी सी !

एक समर्पण मांग रहा..और उस मांग में भी दंभ है, हिचक भी है, डर है... धर्म मज़हब समाजो का! अपना अलग मुकाम, एक स्वतंत्र अस्तित्व, और पहले ही से _not so indianised image_ रखने वाली औरत का साथ मांगे या न मांगे..माँगना भी इस को शायद मंजूर न था!

अमृता ने लिखा–

साहिर की एक ख़ामोशी थी..जिसे मेरी जिंदगी के बरसों के बरस कभी समझ नहीं पाए

अपनी इस मांग को साहिर भी मैं खूबसूरत नहीं के कवच में लपेटे रहे।

उधर इमरोज़ ने कहा–

तेरी नज़र मुझे मेरी नज़र में ही खूबसूरत बना देती है

ये क्या था कि अमृता ने इमरोज़ का साथ चाहा? बेशक उन्होंने अपने प्यार को (साहिर के प्रति) कभी छुपाया नहीं।

प्यार में हारना ही जीत है।

ये क्या कि हम प्यार, इश्क़ की नाकामी को ही ज्यादा तवज्जो देते हैं!

जो प्यार में पा सका, उसका समर्पण, कमिटमेंट, dedication, emotional investment नाकामी के आंसुओं के सामने छोटा क्यों पड़ जाता है?

कुछ से ही रहे ये शायर, या कुछ कायर या कुछ ..!

इमरोज़ का प्यार सम्पूर्ण है, समर्पण अदभुद है। वो रिवाज़, समाज, जात–धर्म नहीं मानते। बस एक मनचाही सी जिंदगी उसे देना चाहते है जो उन्हें एक वायदा दे "सदा खुश रहने का"

कैसा प्यार,कैसी दीवानगी! वो जानते हैं, admit भी करते हैं कि..

रेडियो स्टेशन जाते समय पर बैठे मेरी पीठ पर ऊँगली से साहिर–साहिर लिखती रहती थी

ये कैसा पुरुषत्व है जो आहत नहीं होता, शिकायत भी नहीं करता, बस प्यार किये जाता है, और शिद्दत भी कम नहीं होती! किसी भी प्रेम करने वाले की नज़र में इमरोज़ प्यार में समर्पण को epitomise करते है। एक मुक्कमल इंसान..!

इमरोज़ एक अकेला इंसान..जो judgmental नहीं रहा। उसने अमृता को उसकी बेबाक़ी, सिगरेट और शराबनोशी से ऊपर देखा, जो बहुत sensitive थी, intelectual थी, इतने सारे तिरस्कार, तिर्यक नज़रों के दंश और व्यंग झेल चुकी थी पर अडिग थी अपने पर! वो झुक नहीं रही थी, पर टूटन के कगार पर थी। उसकी टूटन से (जो थी...she was under treatment for depression) क्या हो सकता था पता नहीं! कितनी भी कमज़ोर थी वो बांहे इमरोज़ की, पर अमृता का सम्बल बनी।

अमृता ने अपनी जिंदगी में आये तीनों संबंधों को बेबाक़ी से लिखा। उसका लेखक रूप बहुत चकाचौंध भरा था, औरत सदा दूसरे दर्ज़े पर ही रही।

शादी के बारे में उन्होंने Dr. Lateef को बताया कि "ब्याही जिंदगी में कोई तकलीफ़ न थी, पर अपना आप जिन्दा नहीं लगता"

कविता की तरह ही साहिर की तरफ उनका प्यार गहरा रहा, और लिखा

ज़ेहन में बसे हुए साये घर की छत नहीं बनते

साहिर की indecisiveness से थक गयी थी अमृता!

इमरोज़ जिसने अपना नाम इंद्रजीत से इमरोज़ रख लिया। फ़ारसी में जिसका मतलब होता है 'आज'

बीत गए और आने वाले कल से गैर बस 'आज'

मेरे अकेलेपन का शाप इमरोज़ ने तोडा है, ऐसा लिखा अमृता ने ।

क्या ये समाज अपने रास्ते बनाने वालों के प्रति सहिष्णु है? क्या गलत है, क्या सही है, क्या ये नजरिया वैयक्तिक नहीं हो सकता? अमृता के सन्दर्भ में कई प्रश्न अनुत्तरित ही रहे और इमरोज़ भी कई मायनों में इन प्रश्नों की धुंध में छुपे रहे।

–डॉ. सरोज आचार्य

सूरतगढ़ के नत्थूराम ने 50 बीघा जमीन धर्मार्थ ट्रस्ट को दान की

- **संस्कृत वैदिक स्कूल, गौशाला और मंदिर का होगा निर्माण**

सूरतगढ़, (निसं)। सूरतगढ़ के वार्ड 19 निवासी नत्थूराम स्वामी (62) पुत्र गजानंद ने शहर के पास ही मानकसर से सटी 50 बीघा जमीन एक धर्मार्थ ट्रस्ट को दान कर दी। शुक्रवार को रजिस्ट्रार कार्यालय में इसकी गिफ्ट डीड के डॉक्यूमेंट्स तैयार करवाकर ट्रस्ट के मुखिया को सौंपे गए। दान की गई इस भूमि पर जल्द ही आश्रम का निर्माण करने के साथ ही संस्कृत वैदिक स्कूल, मंदिर, गौशाला आदि का निर्माण करवाया जाएगा। इस अवसर पर स्वामी गुणप्रकाश चैतन्य महाराज ने उपस्थित लोगों को लड्डू खिलाकर मुंह मीठा करवाया। मौके पर सब–रजिस्ट्रार विनोद गोदारा, जगदीश कुमार, मुरलीधर पारीक, नरेश शास्त्री, सुमित गुप्ता, अमित कुमार, विमल सिंह, केके शर्मा, कुलदीप कुमार सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

स्वामी करपात्री फाउंडेशन मुंबई के अध्यक्ष गुणप्रकाश चैतन्य (42) पुत्र प्रबल सन्यासी ने बताया कि नासिक पंचवटी में महाकुंभ के दौरान इनका छोटा भाई आश्रम में रुका। इसी दौरान उसने 50 बीघा (2 मुरब्बा) भूमि दान देने का संकल्प लिया था। 2016 में 108 कुंडीय यज्ञ का आयोजन स्व. प्रबल जी महाराज के सानिध्य में संत प्रेम केश्वर महाराज और उनके सानिध्य में पशु चिकित्सालय में किया गया था। उस समय इस संबंध में चर्चा कर जमीन की खातेदारी करवाने की प्रक्रिया शुरू की थी। जिसकी पिछले दिनों खातेदारी मिलने पर आश्रम के नाम रजिस्ट्री करवाकर माता पिता का नाम अमर करने के लिए दान की है।

दानदाता नत्थूराम स्वामी ने बताया कि वो तीन भाई है और तीनों ही अविवाहित है। उम्र के इस पड़ाव में उनका मानना है कि उनके बाद इस संपत्ति को कौन संभालेगा, तो उन्होंने इसे धर्मार्थ के काम में दान देने की सोची और अपनी इच्छा से महाराज को अवगत करवाया। नत्थूराम ने कहा कि वे इसे अपने माता पिता की याद में ट्रस्ट को समर्पित कर रहे हैं।

दानदाता नत्थूराम ने बताया कि इससे पूर्व भी उनके एक भाई ने धर्मार्थ के काम के लिए कई बीघा भूमि दान की थी। ईश्वर में आस्था रखने वाले और पूजा पाठ करने वाले अविवाहित नत्थूराम ब्रदर्स की सूरतगढ़ शहर के मुख्य बाजार स्थित पुराने मोटर मार्केट के पास भी करोड़ों रुपए कीमत की दुकान है। वहीं मानकसर के पास दान की गई। इस भूमि की कीमत करोड़ों रुपए में शुमार है। ऐसे में उनके द्वारा नेकी स्वरूप किए गए इस कार्य की लोग प्रशंसा कर रहे हैं।

हरनौली हैड पर नहर का पुल ढहा, कई गांवों का संपर्क टूटा

- **ग्रामीण कर रहे मरम्मत के प्रयास, सिंचाई विभाग को जानकारी दी**
- **ग्रामीणों ने बताया कि पुल के टूटने के समय इस पर किसी वाहन अथवा व्यक्ति के नहीं होने से हादसा टल गया**

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले के गजसिंहपुर इलाके में एफ नहर का गांव हरनौली हैड के पास पुल टूट गया। इससे कई गांवों का दूसरे गांवों से संपर्क टूट गया। जानकारी मिलने पर ग्रामीण मौके पर एकत्र हो गए। उन्होंने सिंचाई विभाग को घटना की जानकारी दी। वहीं खुद अपने स्तर पर भी पुल की तरफ आने वालों को रोका। इन लोगों ने वाहन चालकों को अन्य रास्तों से पास के गांवों को जाने के लिए कहा।

जानकारी के अनुसार गजसिंहपुर इलाके के गांव हरनौली के पास बना हरनौली हैड का पुल शुक्रवार सुबह अचानक ढह गया। इससे तेज आवाज हुई। आसपास के लोगों को जब इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने आसपास के गांवों के लोगों को इस बारे में सूचना दी। गांव हरनौली की तरफ आने वाले वाहनों के चालकों को भी अन्य रास्तों से जाने के लिए कहा गया। जिन गांवों तक जाने के लिए यह पुल एक मात्र रास्ता है, उनका अन्य गांवों से संपर्क टूट गया है। पुल टूटने से गांव तीन एफएफए, चार एफएफए, एक एफडी सहित कई गांवों से आसपास के अन्य गांवों का संपर्क टूट गया है। दोपहर तक ग्रामीण पुल की मरम्मत में लगे थे। यह नहर गजसिंहपुर इलाके से 28 एफएफ कंवरपुरा की तरफ जाती है। ग्रामीणों ने बताया कि पुल के टूटने के समय इस पर किसी वाहन अथवा व्यक्ति के नहीं होने से हादसा टल गया।

रोजगार शिविर बना औपचारिक, लोगों की भीड़ ही नहीं जुटी

- **प्रचार-प्रसार के अभाव में शिविर में इक्का दुक्का रोजगार लेने पहुंचे**
- **शिविर में ना कोई अधिकारी नजर आया तथा ना ही कोई बैंक के अधिकारी रोजगार देने को लेकर देखे गये**

जालोर, (कासं)। इन्दिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना के तहत काम पाओ अभियान के द्वितीय चरण के क्रियान्वयन के लिए शुक्रवार को जालोर नगर परिषद, भीनमाल, सांचौर व रानीवाड़ा नगरपालिका में रोजगार शिविरों का आयोजन हुआ। जालोर नगरपरिषद में आयोजित शिविर फ्लाप शो साबित हुआ। प्रचार–प्रसार के अभाव में शिविर में इक्का दुक्का रोजगार लेने पहुंचे।

जालोर नगरपरिषद के सभागार में आयोजित रोजगार शिविर में लोगो की भीड़ जुट नही पाई। शिविर में ना कोई अधिकारी नजर आया तथा ना ही कोई बैंक के अधिकारी रोजगार देने को लेकर देखे गये। शिविर में दोपहर तक सारी कुर्सी खाली नजर आई। नगरपरिषद के कार्मिक व अधिकारी भी शिविर को लेकर संवेदनशील नजर नही आये। कई लोग खाली कुर्सी देखकर वापस अपने घरो की तरफ चले गये। शिविर में श्रमिकों की शिकायतों व समस्याओं को सुनने वाला भी नजर नही आया। वहीं श्रमिकों के नए जॉब कार्ड के लिए भी श्रमिक इधर उधर भटकते नजर आये। शिविर में श्रमिकों के जनाधार कार्ड में बैंक खाता संख्या व आईएफएससी कोड का अपडेशन, श्रमिकों की भुगतान संबंधी समस्याओं का समाधान भी अधिकारियो की अनुपस्थिति से नही पाया। नगरपरिषद ने 'काम पाओ अभियान' के तहत आयोजित रोजगार मेले में केवल मात्र खानापूर्ति की।

जालोर नगरपरिषद में आयोजित शिविर में कुछ लोग ही रोजगार लेने पहुंचे।

शिविर के दौरान बाद में कार्मिको ने कागजी खानापूर्ति पूर्ण की। शहरी रोजगार गांरटी योजना के कार्य भी शहर में नगरपरिषद ने अपने चेहतो को देकर सरकार राशि का जमकर दुरपयोग किया जा रहा हैं। वहीं मेट भी फर्जी मेस्टरोल व श्रमिकों की फर्जी हाजरी भरकर सरकार राशि का जमकर दुरुपयोग किया जा रहा है। लेकिन परिषद में स्थाई आयुक्त की नियुक्ति नहीं होने से परिषद का कोई धोरी धणी नजर नहीं आ रहा है। शुक्रवार को शिविर औपचारिक बन रह गया।

उदयपुर में खिला दुर्लभ "सीता अशोक"

उदयपुर, (कासं)। रावण की लंका में स्थित अशोक वाटिका का वह वृक्ष जिसकी छांव तले बैठने तथा इसके फूलों की महक से देवी सीता के शोक का हरण हुआ था, इन दिनों उदयपुर जिले में भी अपनी मोहक आभा बिखेरने लगा है। दुर्लभ और औषधीय गुणों से युक्त यह वृक्ष उदयपुर शहर में कुछ स्थानों पर अपनी पूरे सौंदर्य के साथ पुष्पित हो चुका है और लोगों को आकर्षित कर रहा है। इस दुर्लभ सीता अशोक के पेड़ और पुष्पों को क्लिक किया है जनसंपर्क विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. कमलेश शर्मा ने।

इस दुर्लभ वृक्ष के बीजों से पौधे तैयार कर शहर में कई स्थानों पर रोपित कर इसकी वंशवृद्धि के कार्य में लगे हुए है सेवानिवृत्त उप वन संरक्षक वीएस राणा। वर्तमान में सीता–अशोक (सराका इंडिका) नामक यह दुर्लभ वृक्ष राणा के हिरण मगरी सेक्टर 6 स्थित निवास के साथ ही कुछ अन्य स्थानों पर भी पुष्पित हुआ है।

करीब 12 साल पहले रोपे गए इस वृक्ष पर खिले नारंगी–लाल रंगों की फूलों की आभा देखते ही बन रही है। इसके अलावा 2 पेड़ आरसीए और एक स्वरूपसागर में इन दिनों पुष्पित होकर अपनी मनोहारी आभा बिखेर रहा है। राणा ने गत वर्षों में अपने निवास पर स्थित पेड़ से बीजों को संकलित कर एक दर्जन से अधिक पौधे तैयार कर शहर में विभिन्न लोगों को भी वितरित किए हैं।

पर्यावरणीय विषयों के जानकारों के अनुसार यह ही असली अशोक वृक्ष है। जिले में ऐसे कुछ वृक्ष ही हैं। इसके पुष्प, पत्तियों, छाल व फलों का उपयोग कई प्रकार की औषधियों के रूप में होता है। अशोक का फूल, छाल और मूल नाना प्रकार के औषधियां बनाने में काम आते हैं। विशेषकर विभिन्न प्रकार महिलाओं से संबंधित व्याधियों में अशोक के औषधीय गुण सर्व स्वीकृत है। अशोकासव, अशोकारिष्ट औषधियां अशोक से ही बनती है

सीता अशोक शो–प्लांट के रूप में लगाए जाने वाले लंबे अशोक से भिन्न है। यह आम के पेड़ जैसा छायादार वृक्ष होता है। इसके पत्ते 8–9 इंच लम्बे और दो–ढाई इंच चौड़े होते हैं। इसके पत्ते शुरू में तांबे जैसे रंग के होते हैं, इसीलिए इसे 'ताम्रपल्लव' भी कहते हैं। इसके नारंगी रंग के फूल वसंत ऋतु में आते हैं, जो बाद में लाल रंग के हो जाते हैं। सुनहरी लाल रंग के फूलों वाला होने से इसे 'हेमपुष्पा' भी कहा जाता है।

उदयपुर में शहर में पुष्पित हुआ सीता अशोक का वृक्ष।

राशिफल शनिवार 18 मार्च, 2023

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, श्रवण नक्षत्र रात्रि 12:29 तक, शिव योग रात्रि 11:53 तक, बालव करण दिन 11:14 तक, चन्द्रमा मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मीन, चन्द्रमा–मकर, मंगल–मिथुन, बुध–मीन, गुरू–मीन, शुक्र–मेष, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 12:29 तक है। द्विपुष्कर योग रात्रि 12:29 से आरम्भ होगा। आज पापमोचनी एकादशी व्रत है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:07 से 9:36 तक, चर 12:35 से 2:04 तक, लाभ अमृत 2:04 से 5:03 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:37, सूर्यास्त 6:33

मेष
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में महत्वपूर्ण संदेश प्राप्त होंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कन्या
परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। भावनात्मक कारणों से परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

धनु
घर–परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

कुंभ
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मन में असंतोष बना रहेगा। मन:स्थिति ठीक नहीं रहेगी। पारिवारिक परेशानियों के कारण दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन
आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार होगा। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 73 संख्याः 224 प्रभात जयपुर, शनिवार 18 मार्च , 2023 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

The 100 Hundred Finale and the Broken Trust

Our eldest Bahu, Vatika started chanting Babu ji 'Kitne acche they' but quickly corrected herself into 'Kitne acche hain.'

Empowering Small Businesses in Jaipur

Insulin Doses Could Be More Accurate | Better insulin therapeutics can be developed

पश्चिमी नेपाल की पोखरा वैली में जब भी पेड़ों या चट्टानों पर ईजिप्शियन वल्चर (गिद्ध की एक प्रजाति) घोंसला बनाते दिख जाते हैं तो लोग अक्सर उन्हें कौआ समझ कर भगा देते हैं, कभी -कभी तो उनके घोंसले भी नष्ट कर देते हैं, इस विश्वास के कारण कि, ये पक्षी दुर्भाग्य लाते हैं। लेकिन, फिर भी, आई.यू.सी.एन. की रैड लिस्ट के एन्डेन्जर्ड वर्ग में अधिसूचित ये पक्षी इंसानी बस्तियों के आसपास घर बनाते हैं। जर्नल ऑफ रैप्टर रिसर्च में छपे एक नवीनतम अध्ययन के अनुसार, इसका कारण इंसानी बस्ती के पास भोजन की उपलब्धता हो सकता है। शोध के लेखक तथा नेपाली कंज़र्वेशन रिसर्च एन.जी.ओ. हिमालयन नेचर के संदेश गुरूंग कहते हैं कि, इंसानों से निकटता के फायदे भी हैं और नुकसान भी। शोध के तहत गुरूंग और उनकी टीम ने पोखरा वैली में वल्चर के पूर्व चिन्हित संभावित नैस्टिंग एरिया को देखा, जहाँ साउथ एशिया की सभी नौ वल्चर तथा पक्षियों की 470 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। सन् 2012 से 2018 की अवधि में टीम ने प्रजननकाल (1 से 15 मार्च) और घोंसला निर्माण काल (5 से 20 मई) के बीच इन क्षेत्रों की निगरानी की। टीम ने पाया कि, ये पक्षी इंसानी बस्तियों के निकट छोटे टीलों पर घर बनाना पसंद करते हैं। टीम का मानना है कि, शायद अन्य पक्षियों, जैसे रॉक ईगल- आऊल, हाउस क्रो और लार्ज बिल्ड क्रो आदि से प्रतिस्पर्धा टालने के लिए वल्चर ऐसा करते हैं, क्योंकि, उपरोक्त पक्षी भी टीलों पर प्रजनन करते हैं। शोध लेखकों का कहना है कि, कम ऊंचाई पर छोटे टीलों पर प्रजनन करके ईजिप्शियन वल्चर भोजन की तलाश और बच्चों को पीठ पर लादकर उड़ने में खर्च होने वाली ऊर्जा बचाते हैं। साथ ही ऐसी जगहों पर इंसान आसानी से नहीं पहुँच पाते। लेकिन इंसानों से निकटता के इस पक्षी को नुकसान भी हैं। असल में अवयस्क वल्चर काले रंग के होते हैं इसलिए कुछ लोग इन्हें कौआ और दुर्भाग्य सूचक समझकर भगा देते हैं। आई.यू.सी.एन. के अनुसार ईजिप्शियन वल्चर की आबादी इसकी समस्त ज्ञात रेंज, सदर्न यूरोप से उत्तरी अफ्रीका और दक्षिण एशिया तक में घट रही है। वर्ष 1999 के बाद से इनकी वैश्विक आबादी में 79 प्रतिशत कमी आ चुकी है।

गहलोत शनिवार चार बजे रहस्यमय यात्रा पर दिल्ली जायेंगे

रहस्यमय इसलिये मानी जा रही है यात्रा, क्योंकि, अभी तक कांग्रेसाध्यक्ष खड़गे के साथ कोई मुलाकात तय नहीं हुई है। वैसे भी, शनिवार की शाम को चार बजे बाद, सभी सरकारी दफ्तर बन्द होने की वजह से कोई सरकारी काम होने की संभावनाएं नहीं हैं

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 मार्च। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत कल (शुक्रवार) शाम चार बजे दिल्ली पहुंच रहे हैं। हालांकि वहां उनका कोई अधिकृत काम नहीं है पर उनकी इस दिल्ली यात्रा को गोपनीय रखा जा रहा है।

आज देर शाम तक मुख्यमंत्री की कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के साथ कोई मुलाकात तय नहीं थी पर कल मुलाकात तय हो सकती है, लेकिन अभी तक ऐसा कुछ नहीं हुआ है।

विधानसभा चुनावों से पहले राजस्थान में 19 नए जिले बनाने की घोषणा करने से गहलोत को उम्मीद है कि वे भी वोटर्स को रिझा लेंगे जैसे कि तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव ने किया था। उन्होंने वहां 16 नए जिले घोषित किये थे जिससे तेलंगाना के जिलों की संख्या 33 हो गई थी उसके बाद उन्होंने राज्य में विधानसभा चुनाव जीता था।

- यह जरूर माना जा रहा है कि, दिल्ली में गहलोत अपनी स्वयं की पीठ ठोकने और शाबाशी लेने आ रहे हैं, क्योंकि वे मान रहे हैं कि, 19 जिले बनाकर उन्होंने बहुत बड़ा तुरुप को पत्ता खेल दिया है, चुनाव से पहले।
- उन्होंने इस काम की प्रेरणा, तेलंगाना के मु.मंत्री चन्द्रशेखर राव से ली है, जिन्होंने चुनाव से पूर्व 16 नये जिले बनाये थे, तथा, जिलों की कुल संख्या 33 पहुंचा दी थी। पर यह भी सच हैं कि, चन्द्रशेखर राव विधानसभा के चुनाव जीत भी गए थे। गहलोत, मान रहे हैं, नये जिले बनाकर वे भी विधानसभा चुनावों में जीत हासिल कर लेंगे। अतः, पीठ थपथपाने की प्रक्रिया को अंजाम दिया जायेगा दिल्ली में।
- पर, ऐसा लग रहा है कि, कुछ जल्दबाजी हो रही है। क्योंकि, दूसरी ओर, सरकार के खिलाफ फोन टैपिंग काण्ड में गहलोत के ओ.एस.डी. व अन्य कई वरिष्ठ अफसरों की जाँच पूरी हो चुकी हैं तथा दोषी करार किये जा सकते है। गहलोत भी अगर स्पष्ट रूप से इस प्रकरण में लिप्त बताये गये तो, सिरदर्द बढ़ेगा, शाबाशी फीकी पड़ सकती है।

मुख्यमंत्री सरकार की उपलब्धियाँ और योजनाओं के प्रचार-प्रसार में भारी धनराशि खर्च कर रहे हैं। कई चैनलों पर विज्ञापन दिखाये जा रहे हैं। जहां तक राष्ट्रीय चैनलों का प्रश्न है वे भी योगी और केजरीवाल की तरह भारी धनराशि खर्च कर रहे हैं।

गहलोत निस्संदेह ही अपनी पीठ थपथपाना चाहते हैं और मीडिया को बताना चाहते हैं कि बजट में उन्होंने जो घोषणाएं की थी उन्हें वे पूरा करने में लगे हुए हैं।

लेकिन इसी के साथ एक बुरी खबर भी गहलोत के इंतज़ार में है। उनके ओ.एस.डी. और सरकार के कई बड़े अफसरों का फोन टैपिंग मामले में पर्दाफाश होने वाला है। मामला अपने चरम पर पहुंच गया है। इसमें कुछ गिरफ्तारियां भी हो सकती है जिससे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या आपको कम सुनाई देता है।
कान की मशीनें
स्पीच थैरेपी
फ्री सुनाई की जाँच
TRIAL OF HEARING AID
CALL FOR APPOINTMENT
+91 94602 07080
PERFECT SPEECH AND HEARING SOLUTIONS
Tonk Road, JAIPUR | Vaishali Nagar, JAIPUR
www.perfecthearingsolutions.com

'छह दिन पहले अपहृत बालिका को अभी तक बरामद क्यों नहीं किया'

चूरू, 17 मार्च (कासं)। सर्व समाज के लोगों ने 6 दिन पहले अपहृत बालिका को बरामद करने के लिए भारी विरोध प्रदर्शन किया तथा कलैक्टर सिद्धार्थ सिहाग को ज्ञापन सौंपा। सर्वसमाज के लोगों का आरोप है कि नाबालिग के अपहरण के 6 दिन बीत जाने के बाद भी पुलिस द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की गई है। लोगों ने गुस्से में इंद्रमणि पार्क के पास रास्ता जाम कर दिया। उसके बाद लोगों ने

- सर्व समाज के लोगों ने जाम लगाकर जमकर विरोध प्रदर्शन किया।

कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंचे और जमकर विरोध प्रदर्शन किया। आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग की।

इस दौरान विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों ने कलैक्टर व पुलिस अधीक्षक से वार्ता की। प्रशासन ने शीघ्र ही आरोपियों को गिरफ्तार करने का आश्वासन दिया। पूर्व जिला प्रमुख हरलाल सहारण ने कहा कि अपहरणकर्त्ता पुलिस

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अखिलेश मिले ममता बनर्जी से कोलकाता में

दो हताश नेताओं की मृगमरीचिका की तलाश?

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 मार्च। मुश्किलों में फंसी ममता बनर्जी ने समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव से आज कोलकाता में मुलाकात की। यह मुलाकात वर्ष 2024 के लोकसभा चुनावों से पूर्व भाजपा के विरूद्ध विपक्ष का एक राष्ट्रीय मोर्चा बनाने की उनकी उम्मीदों से पूर्व संकेत हो सकती है।

अखिलेश यादव की पार्टी अपनी कार्यकारी कमेटी को मीटिंग कोलकाता में आयोजित कर रही है, लेकिन अखिलेश की प्रमुख चुनावी नज़र मुस्लिम वोटों पर है, जो मुख्यत: ममता का भी लक्ष्य है। अखिलेश को उत्तर प्रदेश में जरूर भारी पराजय की उम्मीद होगी, इसीलिए वह बंगाल में अपनी पार्टी की येन केन प्रकारेण कोई उपस्थिति दर्ज कराना चाहते हैं और यह बात ममता के हितों के विरूद्ध होगी।

भाजपा के खिलाफ विपक्ष की एक राष्ट्रीय स्तर की नेता बनने के मंसूबे पाले बैठी ममता कल ओडिशा जा रही हैं, जहाँ वह मुख्यमंत्री नवीन पटनायक से मुलाकात करेंगी।

लेकिन जो काम पहले किया जाना चाहिए था, वास्तव में जगन्नाथपुरी जा रही है, जहाँ वह वर्ष 2024 की अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए पूजा व प्रार्थना करेंगी। तथापि, रही बात अब की तो अखिलेश और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- अखिलेश ने अपनी पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक आयोजित की है कोलकाता में।
- पर, दिक्कत यह है कि, जिन मुस्लिम वोटों को अखिलेश ललचायी नज़रों से देख रहे हैं, वो, ममता का मूल वोट बैंक हैं।
- राष्ट्रीय नेता बनने की अपनी महत्वाकांक्षा से प्रेरित ममता, उड़ीसा रवाना हुईं, पटनायक से मिलकर गैर कांग्रेस विपक्ष की रणनीति को आगे बढ़ाने।
- दोनों का, अखिलेश व ममता के सोच का, मुख्य आधार है कांग्रेस विरोधी होना। दोनों ने विपक्ष की एकता में कांग्रेस को शामिल न करने का मन बना रखा है। पर, क्या यह विरोध दोनों को बहुत देर तक बांधे रख सकेगा?

फिरौती मांगने आए लॉरैंस के गुर्गे और पुलिस में फायरिंग

श्रीगंगानगर, 17 मार्च (निसं)। शहर के एक व्यापारी से फिरौती मांगने आए लॉरैंस गैंग के गुर्गे ने पुलिस पर फायरिंग कर दी। पुलिस की जवाबी फायरिंग में एक आरोपी के घुटने पर गोली लगी, जिससे वह गंभीर रुप से घायल हो गया।

उसके घायल होते ही बाइक कच्चे रास्ते पर गिर गई। दो आरोपियों ने भागने की कोशिश की लेकिन पुलिस ने उन्हें पीछा कर पकड़ लिया। दो को कोतवाली थाने लाया गया जबकि

- पुलिस ने पीछाकर दो आरोपियों को पकड़ा, कोतवाली थाने लेकर आये।

घायल आरोपी को सरकारी अस्पताल में भर्ती गया है।

इस मामले में देर रात करीब नौ बजे एसपी परिस देशमुख से पत्रकारों को बताया कि फरवरी माह में शहर के एक प्रोपर्टी व्यापारी से गैंगस्टर लॉरैंस बिश्नोई के भाई अनमोल बिश्नोई के नाम से फिरौती मांगी गई थी।

पुलिस टीम कोतवाली एसएचओ देवेंद्रसिंह के नेतृत्व में पंजाब की तरफ गई थी। उसे आरोपियों के श्रीगंगानगर की तरफ आने की जानकारी मिली।

'सोमवार से राहुल को संसद से निलम्बित करने की कार्यवाही शुरु होगी'

भाजपा के सांसद निशिकान्त दुबे ने लोकसभाध्यक्ष को पत्र लिखकर कहा, वे राहुल की संसद की सदस्यता खत्म करने के लिए रूल 223 का उपयोग करें

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 मार्च। जहाँ राहुल गांधी ने लन्दन पर भारतीय लोकतंत्र पर की गई अपनी टिप्पणियों के लिये क्षमा याचना करने से इनकार कर दिया है, वहीं भारतीय जनता पार्टी ने सोमवार को संसद की बैठक में लोकसभा से उनके निलम्बन के लिये इस आधार पर दबाव बनाने की रणनैतिक योजना बना ली है कि यह मामला "विशेषाधिकार से परे" है।

इससे पूर्व, विधिमंत्री किरेन रिजिजू ने कहा था, "राष्ट्र से जुड़ी कोई भी चीज सभी के लिये सरोकार का विषय होती है। हमें इस बात से कोई लेना-देना नहीं कि कांग्रेस या उसके नेतृत्व का क्या हो रहा है। लेकिन अगर वे देश का अपमान करते हैं तो हम चुप नहीं रह सकते।"

भाजपा सांसद निशिकान्त दुबे ने एक कदम और आगे बढ़कर, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला को पत्र लिख दिया है कि किसी स्पेशल पार्लियामैंट्री कमेटी द्वारा राहुल की "अपमानजनक" टिप्पणियों की जाँच कराये जाने के बाद, "प्रॉसिजर एंड कन्डक्ट ऑफ बिजनेस" के नियम 223 के तहत, उन्हें सदन से निष्कासित कर दिया जाये।

उन्होंने कहा कि इस नियम का प्रयोग बहुत पहले, 1976 में राज्यसभा सदस्य डॉ. सुब्रमन्यम स्वामी को सदन से निष्कासित करने के लिये किया गया था क्योंकि उन्होंने इंग्लैंड, अमेरिका तथा केनाडा में भारत के विषय कुछ टिप्पणियाँ कर दी थीं। दुबे ने यह आरोप भी लगाया कि राहुल ने, पहले नोटिस

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- दुबे के अनुसार, 1976 में सुब्रमण्यम स्वामी को भी इसी रूल के तहत संसद से निस्कासित कर दिया गया था, क्योंकि स्वामी पर आरोप लगाया गया था कि, उन्होंने ब्रिटेन, अमेरिका व कनाडा में भारत के खिलाफ टिप्पणी की थी।

'पहले संसद से बाहर माफी मांगें, फिर सदन में बोलने दिया जायेगा'

भाजपा की इस मांग के जवाब में कांग्रेस ने अडानी-हिंडनबर्ग प्रकरण में जे.पी.सी. के गठन की डिमाण्ड रखी

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 मार्च। आगामी विधानसभा चुनावों तथा 2024 के लोकसभा चुनावों की चुनावी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुये, दोनों ही राष्ट्रीय दल लडाई जारी रखने के लिए कृतसंकल्प प्रतीत हो रहे हैं। भाजपा और कांग्रेस दोनों में कोई भी पहले झुकने को तैयार नहीं है।

जहाँ भाजपा कांग्रेस नेता राहुल गांधी की बढ़ती जा रही लोकप्रियता को धूमिल करने के लिए सारे उपलब्धन साधनों संसाधनों का उपयोग करते हुये, हर सम्भव तौर-तरीका काम में ले रही है तथा उन्हें लोकसभा की सदस्यता के लिये डिसक्वालिफाई करने की सीमा तक पहुंचने की कोशिश कर रही है तथा यौन-उत्पीडन के शिकार लोगों के बारे में कथित रूप से सूचना मांगने को लेकर उन्हें दिल्ली पुलिस से नोटिस भिजवाने के हथकंडे अपना रही है, वहीं कांग्रेस ने आज निर्णय ले लिया कि वह इस लड़ाई को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दरवाजे तक ले जायेगी तथा पार्टी "सोनिया और राहुल गांधी के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणियों" को लेकर विशेषाधिकार प्रस्ताव पेश करने का मानस बना रही है।

हिन्डनबर्ग रिपोर्ट द्वारा किये गये खुलासे के बाद, प्रधानमंत्री मोदी और अडानी बिजनेसग्रुप की बीच जुड़ाव को लेकर कांग्रेस द्वारा लगाये गये आरोपों से घिरी हुई भाजपा इस बिन्दु से जनता का ध्यान हटाने की युक्ति के अन्तर्गत, राहुल गांधी को एक ऐसे राष्ट्रद्रोही के रूप में प्रस्तुत करने की योजना बना ली है, जो विदेश की धरती पर राष्ट्र की छवि खराब कर रहा है। सारे संकेतों से ऐसा प्रतीत होता है कि भाजपा पूरी तरह आश्वस्त है कि उसके पास जनता की नजरों में कांग्रेस नेता की छवि को पूरी तरह खराब करने हर साधन मौजूद है।

संसद में चली अव्यवस्था के बीच, जिसके चलते दोनों सदन लगातार दूसरे दिन स्थगित रहे, भाजपा सूत्रों ने आज कहा कि जब तक राहुल गांधी लन्दन में भारतीय लोकतंत्र के विषय में की गई अपनी टिप्पणियों के लिये माफी नहीं माँगेंगे, भाजपा उन्हें लोकसभा में नहीं बोलने देगी।

संससद के दोनों सदन भाजपा की ओर से ओर से जोर-जोर से की जा रही नारेबाजी के बीच आज फिर से स्थगित कर दिये गये। भाजपा माँग कर रही थी कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में उनके द्वारा की गई टिप्पणियों के लिये कांग्रेस सांसद राहुल गांधी माफी माँगे। उधर विपक्षी दल माँग कर रहे हैं कि अडानी-हिन्डनबर्ग विवाद की संयुक्त संसदीय समिति द्वारा जाँच कराई जावें।

जैसे ही संसद में अव्यवस्था शुरू हुई, संसद की कार्यवाही की ऑडियो व्यवस्था बद कर दी ई। कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर कटाक्ष करते हुये राहुल गांधी के इस आरोप को दोहराया कि संसद में विपक्षी नेताओं के माइक्रोफोन बंद कर दिये जाते हैं।

कांग्रेस ने हिन्दी में ट्वीट किया, "पहले तो माइक ही बन्द किये जाते थे, आज तो सदन की कार्यवाही ही सुनाई देना बन्द हो गई। सदन को प्रधानमंत्री मोदी के मित्र की खातिर मूक कर दिया गया है।"

राहुल गांधी की टिप्पणियों को लेकर जब से उपद्रव शुरू हुआ है, वे आज दूसरी बार लोकसभा में नजर आये लेकिन इससे पहले कि सदन की कोई कार्यवाही हो, सदन अगले सप्ताह तक के लिये स्थगित कर दिया गया। राहुल गांधी ने कहा है कि वे, उन पर लगाये गये आरोपों का जवाब सदन के अन्दर देना चाहते हैं लेकिन भाजपा इस बात पर अड़ी हुई है कि वे पहले माफी माँगें।

गांधी की टिप्पणी को "घोर आपत्ति एवं अपमानजनक" बताते हुये, भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा कि राहुल गांधी को संसद में अपनी बात कहने की अनुमति

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ए.बी.वी.पी. के छह छात्रनेता जमानत पर रिहा

जयपुर, 17 मार्च । राजस्थान विश्वविद्यालय में लॉ कॉलेज छात्रसंघ कार्यालय के उद्घाटन के बाद

- राजस्थान विश्वविद्यालय के गेट पर मु.मंत्री के काफिले को काले झंडे दिखाने के मामले में गिरफ्तार ए.बी.वी.पी. के छह छात्र नेताओं को शुक्रवार को अपर सैशन न्यायालय ने जमानत पर रिहा कर दिया।

विश्वविद्यालय के गेट पर मुख्यमंत्री के काफिले के आगे आकर काले झंडे दिखाने के मामले में गिरफ्तार अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के छह छात्र नेताओं को शुक्रवार को अपर सैशन न्यायालय ने जमानत पर रिहा कर दिया।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

गहलोत ने 40 लाख महिलाओं को रक्षाबंधन से मुफ्त स्मार्टफोन देने की घोषणा की

प्रदेश में 2600 करोड़ रुपए की लागत से सड़क, पुल व आरओबी निर्माण की घोषणा

-विधानसभा संवाददाता-

- जयपुर के गोविंददेवजी मंदिर और डूंगरपुर के बेणेश्वर धाम में 100-100 करोड़ रु. से विकास कार्यों की घोषणा
- तीर्थराज पुष्कर के विकास के लिए पुष्कर विकास प्राधिकरण का गठन करने की भी घोषणा
- जबकि पिछली बजट की घोषणा के 1.35 करोड़ स्मार्टफोन आज तक नहीं बांटे गए

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने एक बार फिर राजस्थान की 40 लाख महिलाओं को मुफ्त स्मार्टफोन देने की घोषणा विधानसभा में की है। मजेदार बात यह है कि गहलोत ने गत वर्ष भी चिरंजीवी परिवारों की महिला मुखिया को 1 करोड़ 35 लाख निःशुल्क स्मार्टफोन इंटरनेट कनेक्शन के साथ बांटने की घोषणा की थी, लेकिन वे मोबाइल आज तक नहीं बांटे गए हैं। ऐसे में अब सवाल उठता है कि क्या चुनावी वर्ष में गहलोत ने महिला वोटबैंक को लुभाने के लिए यह फैसला किया है।

शुक्रवार को विधानसभा में वित्त एवं विनियोग विधेयक पर चर्चा का जवाब देते हुए गहलोत ने दावा किया कि मुख्यमंत्री डिजिटल सेवा योजना के तहत प्रथम चरण में रक्षाबन्धन पर्व से 40 लाख महिलाओं को निःशुल्क स्मार्टफोन बांटे जाएंगे। उन्होंने कहा कि महिलाओं के लिए बाजारों में 500 सुलभ शौचालय बनेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के 2600 करोड़ रुपए की लागत से सड़क, पुल व आरओबी निर्माण व उन्नयन कार्य करवाए जाएंगे। महाकाल उज्जैन की तर्ज पर 100 करोड़ रुपए की लागत से जयपुर के गोविन्ददेवजी मंन्दिर का विकास किया जाएगा। साथ ही, तीर्थराज पुष्कर के समग्र विकास के लिए पुष्कर विकास प्राधिकरण का गठन किया जाएगा। बेणेश्वर धाम, डूंगरपुर के आगामी वर्ष में 100 करोड़ रुपए के विकास कार्य करवाए जाएंगे।

गहलोत ने कहा कि प्रदेश के प्रमुख मंदिरों में पैनोरमा निर्माण होगा, 10 करोड़ रुपए खर्च होंगे। देवस्थान के मंदिरों में पुजारियों का वेतन अब पांच हजार रूपए मिलेंगे। करीब 75 करोड़ की लागत से एसएमएस मेडिकल कॉलेज में पार्किंग निर्माण होगा। ऐसे गांव जहां 250 की आबादी हैं, वहां पर डामर सड़क बनेंगी। स्टेट टोल पर फास्ट ट्रेक कार्ड लगेगा। प्रत्येक विधानसभा में 40 हैंडपंप और 10 टयूबवैल लगाए जाएंगे। जयपुर में हैरिटेज इलाके में 200 करोड़ की लागत से नई सीवरेज लाइन डाली जांएगी।

उन्होंने कहा कि केन्द्र की सौभाग्य योजना समाप्त होने पर घरेलू विद्युत कनेक्शन से वंचित रहने वाले 2 लाख परिवारों को 1000 करोड़ रुपए की लागत से घरेलू कनेक्शन उपलब्ध करवाए जाएंगे। जल जीवन मिशन के तहत उदयपुर, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ एवं राजसमन्द जिलों के 8 कस्बों तथा 1473 गांवों के 3 लाख परिवारों को 4674 करोड़ रुपए की लागत से हर घर जल कनेक्शन उपलब्ध करवाए जाएंगे। प्रदेश के आदिवासी एवं मरुस्थलीय क्षेत्रों में 250 से अधिक आबादी वाले राजस्व गांवों को डामर सड़कों से चरणबद्ध रूप से जोड़ा जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा आगामी वर्ष में 75 करोड़ रुपए की लागत से कक्षा 8वीं तक के विद्यार्थियों के लिए ब्रिज कोर्स संचालित किए जाएंगे, ताकि कोरोनाकाल के दौरान हुए शैक्षणिक नुकसान की भरपाई की जा सके। इससे 70 लाख बच्चे लाभान्वित होंगे। साथ ही स्कूली शिक्षा की सुविधा सुलभ कराने की दृष्टि से 500 प्राथमिक विद्यालयों का उच्च प्राथमिक विद्यालयों में तथा 500 उच्च प्राथमिक विद्यालयों का उच्च माध्यमिक विद्यालयों का क्रमोन्नयन करने की घोषणा की। 400 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान, वाणिज्य एवं कृषि संकाय व विषय प्रारंभ किए जाएंगे। शिक्षा विभाग की तर्ज पर मदरसों में अध्ययनरत बच्चों को 2 सेट निःशुल्क यूनीफॉर्म उपलब्ध करवाए जाएंगे तथा साथ ही, 6843 शिक्षा अनुदेशक (मदरसा पैराटीचर्स) भर्ती किए जाएंगे। कार्मिकों को मई 2023 से सेवानिवृत्ति के दिन ही समस्त पेंशन परिलाभों की स्वीकृति जारी की जाएगी। 75 वर्ष से अधिक आयु के पेंशनर्स को पेंशन राशि में मूल वेतन पर 10 प्रतिशत अतिरिक्त अलाउंस दिया जाएगा।

वकीलों ने जलाई एडवोकेट प्रोटेक्शन बिल की कॉपी

एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट के विरोध में वकीलों में शुक्रवार को हाईकोर्ट के बाहर बिल की होली जलाई।

- 'तय कार्यक्रम के अलावा कुछ किया तो संघर्ष समिति करेगी कार्रवाई'

जयपुर, (का.सं.)। एडवोकेट प्रोटेक्शन बिल में वकीलों के खिलाफ कोर्ट परिसर में ही अपराध होने पर ही उन्हें इस कानून का संरक्षण देने और उनके खिलाफ क्लाइंट की ओर से मुकदमा दायर करने की छूट देने के प्रावधान के विरोध में वकीलों ने बिल में संशोधन की मांग की है। इसे लेकर भाजपा से जुडे कुछ वकीलों ने हाईकोर्ट के बाहर प्रोटेक्शन बिल की कॉपी जलाई। वहीं संघर्ष समिति ने चेतावनी देते हुए सूचना जारी की है कि यदि संघर्ष समिति की ओर से निर्धारित कार्यक्रम के अतिरिक्त यदि किसी अधिवक्ता की ओर से कोई अन्य कार्यक्रम या गतिविधि की गई तो उसके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

संघर्ष समिति के मुख्य संयोजक व दी बार एसोसिएशन जयपुर के अध्यक्ष कमल किशोर शर्मा ने बताया कि बिल में संशोधन के लिए संघर्ष समिति की शुक्रवार को बैठक हुई। बैठक में राज्य सरकार से बिल में संशोधन वाले बिन्दुओं पर वार्ता करने का निर्णय लिया गया। इस दौरान कई वकील हाईकोर्ट के गेट नंबर दो से लेकर चार नंबर गेट तक इकट्ठा हो गए। इसके बाद वकील अंबेडकर सर्किल की ओर बढने लगे तो पुलिस ने उनकी समझाइश कर वापस भेजा। विधि मंत्री से बीसीआर चेयरमैन ने की वार्ता- बिल में जरुरी संशोधनों के लिए बीसीआर चेयरमैन घनश्याम सिंह राठौड और एएजी डॉ. विभूति भूषण शर्मा ने विधि मंत्री शांति धारीवाल से वार्ता की। मंत्री धारीवाल ने उन्हें और संघर्ष समिति के प्रतिनिधियों को शनिवार को प्रमुख विधि सचिव के साथ वार्ता करने के लिए कहा है। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के पूर्व महासचिव प्रहलाद शर्मा ने बताया कि गत 15 मार्च को विधि मंत्री की ओर से विधानसभा में एडवोकेट प्रोटेक्शन बिल रखा गया। इसमें प्रावधान किया गया है कि वकील के खिलाफ अदालत परिसर में अपराध होने पर ही प्रोटेक्शन एक्ट का लाभ मिलेगा। इसके अलावा बिल में क्लाइंट को भी वकील के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराने का अधिकार दिया गया है।

जयपुर के सीकर रोड पर शुक्रवार को हुई तेज बारिश के बीच गुजरते वाहन। आसमान में छाए काले बादलों व आंधी-बारिश के कारण शाम को साढ़े 5 बजे ही अंधेरा छाया।

गायत्री देवी आदर्श थीं : दीया कुमारी

जयपुर। राजमाता गायत्री देवी न केवल मेरे लिए बल्कि इस देश और विश्व भर में कई लोगों के लिए एक आदर्श थीं। व्यापक रूप से अपने आकर्षण और सुंदरता के लिए जानी जाने वाली, वह एक खूबसूरत इंसान भी थीं। सांसद दीया कुमारी ने डीयू लिट फेस्ट में कहा कि वे लड़कियों की शिक्षा के प्रति जुनूनी थीं और उन्होंने 1940 के दशक में स्कूलों और खेल संस्थानों की शुरुआत की थी। उन्होंने कहा कि "वह अपने समय से बहुत आगे थीं, एक महिला जिसने घोड़ों की सवारी की, बैडमिंटन और टेनिस खेलीं, गोल्फ क्लब और टेनिस क्लब शुरू किया।

आम सूचना मैं सीताराम शर्मा s/o श्री मंगलराम शर्मा निवासी- 137, हथरोई बावड़ी, अजमेर रोड, जयपुर का हूं तथा दिनांक 10.03.2023 को मैं अपने घर से रामनगर सोडाला में अपनी गाड़ी से जा रहा था तो रास्ते में मेरा थैला जिसमें दिनांक 11.03.2019 का एक हजार रुपये का खाली इकरारनामा किया हुआ स्टाम्प पेपर जिस पर मेरा व मेरे बच्चे राजेन्द्र, विनोद, रामकुमार के साइन किए हुए थे जो रास्ते में कहीं गिर गये। यह आज दिनांक 17/3/2023 के बाद मान्य नहीं होगा। प्रार्थी- सीताराम शर्मा मो.- 9214493136

राइट टू हैल्थ बिल को लेकर फिर विवाद गहराया

- निजी अस्पतालों ने शनिवार सुबह से सरकार योजनाओं का बहिष्कार व शाम आठ बजे से 21 मार्च तक सम्पूर्ण मेडिकल बंद का ऐलान किया

जयपुर। राइट टू हैल्थ बिल को लेकर निजी अस्पतालों के डॉक्टर और सरकार के बीच विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। इस बिल के विरोध में डॉक्टरों का एक दड़ा पहले ही सरकारी योजनाओं का बहिष्कार कर रहा है, वहीं अब दूसरा दड़ा भी शुक्रवार देर रात को सरकार पर वादाखिलाफी का आरोप लगाकर हड़ताल में उतर आया।

डॉक्टरों की जॉइट एक्शन कमेटी के मीडिया चेयरमैन डॉ. संजीव गुप्ता ने बताया कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के साथ वार्ता में जो समझौता हुआ था उसकी सरकार के आला अधिकारी पालना नहीं कर रहे हैं। इस वादाखिलाफी के आक्रोशित होकर जॉइट एक्शन कमेटी ने शनिवार सुबह आठ बजे से चिरंजीवी और आरजीएचएस योजना के बहिष्कार करने का निर्णय लिया है।

आम सूचना दिनांक :17.03.2023
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि दशरथ सिंह पुत्र श्री शम्भू सिंह तंवर पता-ग्राम- चूडला, पोस्ट- सांवलपुरा तंवरान, तहसील- श्री माधोपुर, जिला- सीकर (राज.) हाल निवासी 28, डी, गंगा विहार कॉलोनी, वी.के.आई.ए. रोड नम्बर 17, जयपुर ने अपने पुत्र करण सिंह एवं पुत्र वधू पूजा कंवर को अपनी चल एवं अचल सम्पत्ति से आज दिनांक से बेदखल कर दिया है। क्योंकि मेरे अभिभाष्य का पुत्र एवं पुत्रवधू कहने में नहीं है तथा उक्त दोनों मेरे अभिभाष्य एवं उसकी पत्नी के साथ आये दिन लडाई झगडा करके हैरान व परेशान करते हैं। यदि आज के बाद उक्त व्यक्तियों को भी व्यक्ति एवं संस्था लेन देन संव्यहार करते हैं तो व स्वयं जिम्मेदार होगें, इसमें मेरे अभिभाष्य एवं उसकी पत्नी की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।
(रमेश कुमार विमल) एडवोकेट
ए-1, नियर गांधी सर्कल, हीदा की मोरी, रामगंज, जयपुर

आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्य सुरेश कुमार छीपा पुत्र स्व. श्री जगदीश नारायण छीपा, निवासी-प्लॉट न. 10, दिनेश कॉलोनी, कंवर का बाग, सांगानेर, जयपुर राजस्थान का पुत्र पवन सोहणियॉं मेरे अभिभाष्य के साथ लड़ाई झगड़ा व गाली गलोच करता है तथा मेरे अभिभाष्य के कहने में नहीं है जिस कारण मेरे अभिभाष्य ने अपनी समस्त चल व अचल सम्पत्ति से अपने पुत्र पवन सोहणियॉं को बेदखल करता है। अब पवन सोहणियॉं का मेरे अभिभाष्य की समस्त प्रकार की चल व अचल सम्पत्ति से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध व सरोकार नहीं रहा है यदि कोई व्यक्ति इसे किसी प्रकार का कोई लेन देन या संव्यवहार करता है तो उसके लिये वह वय जिम्मेदार होगा। सूचित रहे।
दिनांक- (बलवीर सिंह), एडवोकेट, मो. 9351303390

कार्यालय उप आवासन आयुक्त, वृत्त द्वितीय
राजस्थान आवासन मण्डल, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर
Email Id: dhcjpr2.rhb@rajasthan.gov.in. Phone No. 0141-2782772
क्रमांक- DHC-II/3246 दिनांक-17.03.2023
जाहिर आम सूचना
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा आवास संख्या 5/60 मानसरोवर जयपुर क्षेत्रफल 112.50 वर्गमीटर/वर्गगज का आवंटन श्री रवि भूषण भल्ला पुत्र श्री चिमन लाल भल्ला को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 898 दिनांक 07.06.1989 को जारी किया गया। इनके द्वारा उक्त आवास का भौतिक कब्जा दिनांक 05.07.1989 को प्राप्त कर लिया गया था। इसके पश्चात राजस्थान आवासन मण्डल के पत्र क्रमांक 499 दिनांक 18.04.1992 के द्वारा श्री रवि भूषण भल्ला पुत्र श्री चिमन लाल भल्ला के नाम अदेय प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया। इनके द्वारा अपने स्वयं के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्रों का निष्पादन कार्यालय उप पंजीयक, जयपुर में दिनांक 28.07.1992 को करवाया गया। इसके पश्चात श्री रवि भूषण भल्ला की मृत्यु दिनांक 29.12.2022 को हो जाने के कारण इनके पुत्र श्री आशीष भल्ला पुत्र स्व. श्री रवि भूषण भल्ला ने मृत्यु पश्चात नाम हस्तान्तरण सम्बन्धी प्रपत्र एवं वसीयतनामा प्रपत्र प्रस्तुत कर उक्त आवास को अपने नाम हस्तान्तरण हेतु निवेदन किया है।
अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण के संबंध में किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 7 दिवस में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर देवें, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर उक्त वर्णित व्यक्ति/आवेदक श्री आशीष भल्ला पुत्र स्व. श्री रवि भूषण भल्ला के पक्ष में उक्त आवास के हस्तान्तरण की कार्यवाही कर दी जावेगी। उक्त जाहिर आम सूचनाउप आवासन आयुक्त महोदय से अनुमोदित है। सम्पदा प्रबन्धक, वृत्त द्वितीय, जयपुर

कैदियों की शैक्षणिक व्यवस्था में सुधार के लिए कमेटी गठन का आदेश

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने कैदियों की शैक्षिणक व्यवस्था में सुधार और जेल में नए वोकेशनल कोर्स शुरू करने के संबंध में सुझाव देने के लिए कमेटी गठित करने के आदेश दिए हैं। अदालत ने कहा कि कमेटी तीन माह में अपनी सिफारिश राज्य सरकार के समक्ष पेश करे। एक्टिंग सीजे एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस अनिल उपमन की खंडपीठ ने यह आदेश परमेश्वरी देवी की याचिका पर दिए। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि आधुनिक समय में रोजगार के अवसरों में कंप्यूटर शिक्षा सहित अन्य विशेष शैक्षणिक पाठ्यक्रम शामिल हैं। इन्हें लागू करना जेल सुधार की दिशा में बड़ा कदम साबित होगा।

याचिका में कहा गया कि कैदियों को दी जाने वाली शिक्षा में समयानुसार बदलाव किया जाना चाहिए। वर्तमान में कैदियों को पुराने आईटीआई डिप्लोमा और कुर्सी बनना सहित अन्य वोकेशनल कोर्स कराए जा रहे हैं, लेकिन अब इनका कोई उपयोग नहीं है। इन कोर्स की जगह पर नर्सिंग और एलएलबी सहित अन्य व्यावसायिक कोर्स कराए जाने चाहिए। याचिका में कहा गया कि बढ़ते कंप्यूटराइजेशन और डिजिटलीकरण के चलते इन कोर्स को ऑनलाइन कराया जा सकता है। इसका विरोध करते हुए राज्य सरकार की ओर से कहा गया कि कंप्यूटर उपकरणों की कमी के कारण डिजिटल माध्यम से कैदियों को शिक्षा देना संभव नहीं है। इसके अलावा नर्सिंग व एलएलबी नियमित कोर्स होने के कारण जेल में कैदियों के लिए नहीं कराए जा सकते। हालांकि विधिक सेवा प्राधिकरण व कई एनजीओ की ओर से इस तरह के प्रोग्राम चलाए जा रहे हैं।

लोकेंद्र सिंह कालवी को श्रद्धांजलि

जयपुर। जी एस फाउंडेशन द्वारा श्री राजपूत करणी सेना के शीर्ष संस्थापक स्वर्गीय लोकेंद्र सिंह कालवी की स्मृति में झोटवाड़ा स्थित गणेश मंदिर में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई जिसमें बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि और श्री राजपूत करणी सेना, शौर्य फाउंडेशन, गजेंद्र सेवा संस्थान सहित कई सामाजिक संगठन पदाधिकारी और अनेक लोग उपस्थित हुए और स्वर्गीय कालवी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की।

कार्यालय उप आवासन आयुक्त, वृत्त द्वितीय
राजस्थान आवासन मण्डल, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर
Email Id: dhcjpr2.rhb@rajasthan.gov.in. Phone No. 0141-2782772
क्रमांक- DHC-II/3260 दिनांक-17.03.2023
जाहिर आम सूचना
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा आवास संख्या 82/32, मानसरोवर जयपुर क्षेत्रफल 120.00 वर्गमीटर/वर्गगज का आवंटन श्री राजीव धीर पुत्र स्व. श्री एन.के. धीर को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 3712 दिनांक 21.07.1994 को जारी किया गया। इनके द्वारा उक्त आवास का भौतिक कब्जा दिनांक 20.02.1995 को प्राप्त कर लिया गया था। इसके पश्चात राजस्थान आवासन मण्डल के पत्र क्रमांक 1878 दिनांक 30.03.1998 के द्वारा श्री राजीव धीर पुत्र व. श्री एन.के. धीर के नाम अदेय प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया। इनके द्वारा अपने स्वय के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्रों का निष्पादन कार्यालय उप पंजीयक, जयपुर में दिनांक 28.11.1995 को करवाया गया। श्री राजीव धीर पुत्र स्व. श्री एन.के. धीर के द्वारा उक्त आवास का बेचान जरिये विक्रय पत्र के श्री राधेश्याम सोनी पुत्र श्री मुरलीधर सोनी को कर दिया गया। इनके द्वारा उक्त आवास के विक्रय प्रपत्रों का निष्पादन कार्यालय उप पंजीयक, जयपुर में दिनांक 26.09.1996 को करवाया गया। इसके पश्चात श्री राधेश्याम सोनी की मृत्यु दिनांक 14.09.1998 को हो जाने के कारण इनकी पुत्री/दोहिता श्रीमती हेमा शर्मा पत्नी श्री दीपक शर्मा एवं श्री विश्रुत शर्मा पुत्र स्व. श्री के.के. शर्मा ने मृत्यु पश्चात नाम एवं लीजडीड हस्तान्तरण सम्बन्धी प्रपत्र एवं पंजीकृत हकत्याग प्रपत्र प्रस्तुत कर उक्त आवास को अपने नाम हस्तान्तरण हेतु निवेदन किया है। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण के संबंध में किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 7 दिवस में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर देवें, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर उक्त वर्णित व्यक्ति/आवेदक श्रीमती हेमा शर्मा पत्नी श्री दीपक शर्मा एवं श्री विश्रुत शर्मा पुत्र स्व. श्री के.के. शर्मा के पक्ष में उक्त आवास के हस्तान्तरण की कार्यवाही कर दी जावेगी। उक्त जाहिर आम सूचनाउप आवासन आयुक्त महोदय से अनुमोदित है। सम्पदा प्रबन्धक, वृत्त द्वितीय, जयपुर

कार्यालय उप आवासन आयुक्त, वृत्त द्वितीय
राजस्थान आवासन मण्डल, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर
Email Id: dhcjpr2.rhb@rajasthan.gov.in. Phone No. 0141-2782772
क्रमांक- DHC-II/3205 दिनांक-16.03.2023
जाहिर आम सूचना
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा आवास संख्या 76/53 मानसरोवर जयपुर क्षेत्रफल 114.267 वर्गमीटर/वर्गगज का आवंटन श्री दिनेश कुमार उपाध्याय पुत्र श्री विष्णु प्रसाद उपाध्याय को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 120 दिनांक 07.04.2000 को जारी किया गया। इनके द्वारा उक्त आवास का भौतिक कब्जा दिनांक 07.04.2000 को प्राप्त कर लिया गया था। इसके पश्चात राजस्थान आवासन मण्डल के पत्र क्रमांक 467 दिनांक 27.04.000 के द्वारा श्री दिनेश कुमार उपाध्याय पुत्र श्री विष्णु प्रसाद उपाध्याय के नाम अदेय प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया। इनके द्वारा अपने स्वयं के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्रों का निष्पादन कार्यालय उप पंजीयक, जयपुर में दिनांक 01.05.2000 को करवाया गया। इसके पश्चात श्री दिनेश कुमार उपाध्याय की मृत्यु दिनांक 10.08.2022 को हो जाने के कारण इनकी पत्नी श्रीमती राधा रानी उपाध्याय पत्नी स्व. श्री दिनेश कुमार उपाध्याय ने मृत्यु पश्चात नाम हस्तान्तरण सम्बन्धी प्रपत्र एवं हकत्याग प्रपत्र प्रस्तुत कर उक्त आवास को अपने नाम हस्तान्तरण हेतु निवेदन किया है।
अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण के संबंध में किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 7 दिवस में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर देवें, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर उक्त वर्णित व्यक्ति/आवेदक श्रीमती राधा रानी उपाध्याय पत्नी स्व. श्री दिनेश कुमार उपाध्याय के पक्ष में उक्त आवास के हस्तान्तरण की कार्यवाही कर दी जावेगी। उक्त जाहिर आम सूचना उपआवासन आयुक्त महोदय से अनुमोदित है। सम्पदा प्रबन्धक, वृत्त द्वितीय, जयपुर

NAME CHANGE

I have change my name from Manoj Kumar Bhawka to Manoj Bhawka. In furure known me Manoj Bhawaka S/o Gouri Shankar Bhawka R/o 03, Prem Nagar, Jhotwara, Jaipur-302012

I army no 2996274H Ex Hav veer singh shekhawat S/o Shaitan singh shekhawat R/o village bahadurpura post jaisinghpura teh viratnagar dist jaipur that I have changed my daughter name from Punam Kanwar is wrong entered in service record To Poonam Kanwar vide affidavit dated 13.03.2023 before district notary jaipur.

मैंने मेरा नाम मोहम्मद आबिद खान (Mohammed Abid Khan) से बदलकर मोहम्मद आबिद (Mohammed AAbid) पुत्र अब्दुल हमीद खान रख लिया, भविष्य में मुझे मोहम्मद आबिद (Mohammad AAbid) नाम से जाना जावें, 16, सीताराम कॉलोनी बांस बदनपुरा, जयपुर

मैंने मेरा नाम भानू प्रिया लखानी पुत्री खुशाल लखानी से विवाहोपरान्त बदलकर वानी नारवानी पत्नी दीपक नारवानी रख लिया है, भविष्य में मुझे वानी नारवानी के नाम से जाना जावें पता-224, गोविन्द नगर पूर्व, आमेर रोड, जयपुर

मेरे पासपोर्ट में मेरा नाम देवेन्द्र कुमार खण्डेलवाल पुत्र हरि कृष्ण खण्डेलवाल है वास्तविक नाम देवेन्द्र खण्डेलवाल पुत्र हरि कृष्ण खण्डेलवाल है भविष्य में इसी नाम से जाना जाये। 29, सुदामा नगर, तरू छाया रोड, टोंक रोड, जयपुर।

'स्वच्छ भारत मिशन की पूरी दुनिया में प्रशंसा हो रही'

अंतरराष्ट्रीय सॉलिड वेस्ट एसोसिएशन प्रतिनिधिमंडल ने भाजपा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां से भेंट की।

जयपुर। अंतरराष्ट्रीय सॉलिड वेस्ट एसोसिएशन (आईएसडब्ल्यू) कार्यकारिणी सदस्यों ने सीडीसी ट्रस्ट प्रबंधन की अगुवाई में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां से उनके जयपुर स्थित निवास पर शिष्टाचार भेंट की।

सीडीसी ट्रस्ट प्रबंधन की ओर से ट्रस्ट के सचिव डॉ. विवेक अग्रवाल, सीईओ सिद्धांत अग्रवाल, मुख्य वित्त अधिकारी शिवांगी सुल्तानिया, इस्वा उपाध्यक्ष अरने रेगोशनिग, प्रबंध निदेशक मार्क, तेल अवीव (इजरायल) डिप्टी मेयर डोरेन सपिर, निदेशक अदिति रमोला, बोर्ड सदस्य ऐना लोरिया, हो डी लियोंग, जेम्स ला, वित्त अधिकारी नैंसी स्ट्रेंड उपस्थित रहीं,इस दौरान जयपुर ग्रेटर नगर निगम डिप्टी मेयर पुनीत कर्णावट भी उपस्थित रहे। कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा विभिन्न देशों में ठोस कचरा प्रबंधन में किए जा रहे विभिन्न कार्यों के बारे में अवगत कराया जयपुर जिले के आमेर में सेवापुरा लैंडफिल साइट की स्वच्छता के बारे में और इसके रिक्लेमेशन को जल्दी करने के लिए संभव उपायों के बारे में चर्चा की गई। इस दौरान तेल अवीव के डिप्टी मेयर डोरेन सपिर ने पूनियां से एक प्रतिनिधिमंडल अपने यहां भेजने का अनुरोध किया, जिससे वहां किए जा रहे लैंडफिल मैनेजमेंट कार्यों को राजस्थान में भी किया जा सके और भविष्य में यहां के अधिकारियों और कर्मचारियों की क्षमता विकसित की जा सके। अंतरराष्ट्रीय सॉलिड वेस्ट एसोसिएशन प्रतिनिधिमंडल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार के स्वच्छ भारत मिशन की प्रशंसा करते हुए कहा कि भारत के लिए एक बड़ा परिवर्तनकारी कदम है, जिसकी पूरी दुनिया में प्रशंसा हो रही है।

सतीश पूनियां ने प्रतिनिधिमंडल से चर्चा के दौरान कहा कि सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट पॉलिसी को भाजपा की सरकार बनने पर 2023 में एक व्यवस्थित ब्लूप्रिंट के साथ कार्ययोजना बनाकर राजस्थान में प्राथमिकता से लागू करेंगे और वेस्ट को वेल्थ में कन्वर्ट करने पर हमारा विशेष ध्यान होगा।उन्होंने कहा कि, भाजपा की सरकार बनने पर प्रदेशभर के निकायों की आमदनी बढ़ाने के लिए सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट को मजबूत किया जाएगा और पर्यावरण संरक्षण के लिए भी काम किया जाएगा। इस दौरान संवाद के दौरान सतीश पूनियां ने डिप्टी मेयर पुनीत कर्णावट से सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट को लेकर कार्ययोजना बनाने और सेवापुरा कचरा प्रबंधन के निस्तारण को लेकर चर्चा की। सतीश पूनियां ने प्रतिनिधिमंडल के साथ चर्चा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा 2014 से चलाए जा रहे स्वच्छ भारत मिशन को लेकर संवाद किया और इसी के साथ राज्य में सुचारू कचरा प्रबंधन की नीति एवं आवश्यकता पर जोर दिया और उन्होंने आमेर के सेवापुरा कचरागाह की भयावहता एवं उससे हो रहे स्वास्थ्य पर दुष्परिणामों पर चिंता जाहिर की। आईएसडब्ल्यू कार्यकारिणी ने सेवापुरा को पायलट प्रोजेक्ट बनाने पर सहमति जाहिर की, साथ ही आईएसडब्ल्यू उपाध्यक्ष ने राजस्थान में ठोस कचरा प्रबंधन कार्ययोजना निर्माण एवं निर्वाचित प्रतिनिधि के प्रशिक्षण हेतु आईएसडब्ल्यू के समर्थन का आश्वासन दिया। तेल अवीव के डिप्टी मेयर डोरेन सपीर ने सतीश पूनियां से आग्रह किया कि सीडीसी द्वारा अपने एक प्रतिनिधिमंडल को तेल अवीव भेजें, ताकि वहां किए जा रहे लैंडफिल मैनेजमेंट कार्यों को राजस्थान में भी किया जा सके।

सतीश पूनियां का आज दुबई प्रवास

जयपुर। विभिन्न प्रवासी भारतीय एवं राजस्थानी संगठनों के आमंत्रण पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां शनिवार को दुबई प्रवास पर रहेंगे, इस दौरान वह विभिन्न कार्यक्रमों में हिस्सा लेंगे। यह जानकारी भाजपा प्रवासी प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक राजू मंगोड़ीवाला ने दी।

नम्बर मिलाइए 9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

खोया-पाया

मेरे आवास संख्या 30/23/7, वरुण पथ मानरोवर का अलोटमेंट लेटर, पजेशन लेटर खो गये है मिलने पर सूचित करें। मो.-9509676354

मेरे आवास संख्या 30/23/6, वरुण पथ मानसरोवर का पजेशन लेटर कहीं खो गया है मिलने पर सूचित करें। मो.9461106354

जेडीए की योजना मालवीय नगर के भूखण्ड संख्या बी-525, के जेडीए से जारी अलोटमेंट लेटर खो गया है सूचित करें। हिमांशु राय मो. 9414551075

प्लॉट नं. 11-ए, शक्ति विहार कॉलोनी, कल्याणपुरा सांगानेर जयपुर-302029 (राजस्थान) के कागज, रसीद, अलोटमेंट पत्र, नक्शा कहीं खो गया है। मिलने पर संपर्क- कृष्णा लड़ीवाल पत्नि विजय लाड़ीवाल मो.-9782500789

राजस्थान आवासन मण्डल, खण्ड-भिवाडी
क्रमांक-2695 दिनांक-15.02.2023
आवश्यक सूचना
मूलतः आवास संख्या 3/99 पुरानी कॉलोनी, राजस्थान हाउसिंग बोर्ड, भिवाडी श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा को आवंटन पत्रांक 3468 दिनांक 17.09.1988 के द्वारा आवंटित किया गया था। इनके द्वारा उक्त आवास को बेचान उपरान्त मण्डल द्वारा पश्चातवर्ती अन्तिम क्रेता श्रीमती नीलम गुप्ता के पक्ष में पंजीयन हेतु अदेय प्रमाण पत्र संख्या 3872 दिनांक 22.03.2010 को जारी किया जा चुका है। इनके द्वारा उक्त आवास की रजिस्ट्री स्वयं के पक्ष में दिनांक 21.04.2010 को उप पंजीयक कार्यालय भिवाडी में पंजीकृत करवाई जा चुकी है। श्रीमती नीलम गुप्ता की मृत्यु दिनांक 08.06.2022 को हो चुकी है।
श्री अनिल कुमार गुप्ता ने प्रार्थना पत्र, आवश्यक प्रपत्र एवं श्रीमती नीलम गुप्ता की मृत्यु का प्रमाण पत्र एवं पंजीकृत हकत्याग प्रस्तुत कर निवेदन किया है उनकी पत्नी का स्वर्गवास दिनांक 08.06.2022 को हो जाने के कारण उपरोक्त आवास संख्या 3/99 पुरानी कॉलोनी, भिवाडी जिला अलवर का पंजीकृत हकत्याग के आधार पर मृत्यु उपरान्त प्रतिस्थापन हस्तान्तरण उनके नाम किया जाये।
अतः जरिये इस विज्ञप्ति यह आगाह किया जाता है कि उक्त मकान संख्या 3/99 पुरानी कॉलोनी, भिवाडी के सम्बन्ध में पिता, पुत्र, पुत्रियों, भाई व अन्य किसी रिश्तेदार को किसी प्रकार का किसी भी व्यक्ति विशेष या हितकारी को एवं आम व्यक्ति को उजर एतराज हो तो वह इस विज्ञप्ति के प्रकाशित होने के 10 दिवस में आवासीय अभियन्ता, राजस्थान आवासन मण्डल खण्ड भिवाडी में अपना एतराज लिखित में प्रस्तुत करें अन्यथा श्री अनिल कुमार गुप्ता पुत्र श्री रमेश चन्द गुप्ता के पक्ष में उपरोक्त आवास संख्या 3/99 पुरानी कॉलोनी, भिवाडी जिला अलवर का पंजीकृत हकत्याग के आधार पर मृत्यु उपरान्त प्रतिस्थापन हस्तान्तरण किये जाने की कार्यवाही की जावेगी।
(पी.एल.मीणा)
आवासीय अभियन्ता, राजस्थान आवासन मण्डल, खण्ड-भिवाडी

कार्यालय सहायक निदेशक जिला बाल संरक्षण ईकाई एवं बाल अधिकारिता भरतपुर
(261 राजेन्द्र नगर, भरतपुर)
e-mail:- adicps.btp@rajasthan.gov.in Phone No. 05644-220331
क्रमांक:-icps/2022-23/2217 दिनांक: 17.03.2023
खुली निविदा सूचना संख्या
जिला कार्यालय में कम्प्यूटर, प्रिन्टर एवं इलैक्ट्रॉनिक सामान (ए.सी. वाटर डिस्पेंशर, स्मार्ट एलईडी टी.वी.) एवं इन्वर्टर क्रय हेतु जीएसटी अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकृत/बोनाफाइड विर्निमाता/पंजीकृत डीलर एवं प्राधिकृत राजस्थान लघु उद्योग लिमिटेड से पंजीकृत फर्मों से मौहरबन्द निविदायें आमंत्रित की जाती है।

क्र. सं.	अनुमानित लागत (लाखों में)	निविदा शुल्क	अमानत राशि (अमानत लागत का 2 प्रतिशत)	निविदा प्रपत्र विक्रय की प्रारम्भ तिथि व समय	निविदा प्रपत्र विक्रय की अंतिम तिथि व समय	निविदा प्रपत्र कार्यालय में जमा कराने की अंतिम तिथि व समय	निविदा प्रपत्र खोलने की दिनांक व समय
1	3.70	500/- रूपये	7400/- रूपये	17.03.2023 को प्रातः 9.30 से	22.03.2023 को शाम 5 बजे तक	24.03.2023 को दोपहर 12.00 बजे तक	24.03.2023 को दोपहर 2.00 बजे तक

निविदा की विस्तृत सूचना एवं शर्तें कार्यालय के नोटिस बोर्ड एवं SPPP Portal पर उपलब्ध हैं।

सहायक निदेशक
जिला बाल संरक्षण ईकाई
एवं बाल अधिकारिता विभाग

'मुख्यमंत्री के गुणगान के बजाय सत्ता पक्ष यह बताता कि बजट के कितने वादों पर खरे उतरे'

उपनेता प्रतिपक्ष राठौड़ ने पूछा कि, वित्त विनियोग विधेयक के माध्यम से सरकार बजट को पास कराएगी, मगर जितनी राशि की सरकार अनुमति ले रही है, वह पैसा आखिर आएगा कहां से?

-विधानसभा संवाददाता-

जयपुर । उपनेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ ने सदन में वित्त-विनियोग विधेयक पर चर्चा के दौरान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और उनकी बजट घोषणाओं पर सवाल उठाए। राठौड़ ने कहा कि यह बजट सिर्फ आभासी, कपोल-कल्पित और जनता को भ्रमित करने वाला है। सत्तापक्ष ने केवल मुख्यमंत्री का गुणगान किया, अच्छा होता कि सत्तापक्ष यह बात रखता कि हम अब तक के बजट के कितने वादों पर खरे उतरे। मुझे पता है कि सीएम दो-चार बातें हमें कहेंगे, लेकिन हमारी बातों का उत्तर नहीं देंगे। राठौड़ ने यह तक दावा किया कि रिफाइनरी का उद्घाटन भाजपा की सरकार करेगी।

राठौड़ ने कहा कि वित्त विनियोग विधेयक के माध्यम से सरकार इस बजट को पास कराएगी, मगर जितनी राशि की सरकार अनुमति ले रही है, वह पैसा आखिर आएगा कहां से ? सरकार के लोग केन्द्र सरकार पर पानी पी-पीकर आरोप लगाते हैं, लेकिन उन्हें सोचना चाहिए कि खर्चे का ज्यादातर पैसा केन्द्र से ही मिल रहा है। राठौड़ ने कहा कि मैंने पहली बार वसूली की नई एंट्री देखी है। यह एंट्री 12 हजार 900 करोड़ रुपए की है, मगर वसूली होती नहीं है। सिर्फ बजट साइज को बढ़ाना है इसलिए यह नई एंट्री की गई।

- **उन्होंने कहा कि, सरकार के लोग पानी पी-पीकर केन्द्र सरकार पर आरोप लगाते हैं, लेकिन उन्हें सोचना चाहिए कि खर्चे का ज्यादातर पैसा केन्द्र से ही मिल रहा है।**
- **राठौड़ ने विधानसभा में मुख्यमंत्री की कम उपस्थिति पर चुटकी लेते हुए कहा, राज्यपाल के अभिभाषण पर रिप्लाई, बजट पढ़ने और आज बजट पर रिप्लाई की आपकी मजबूरी रह गई। वरना बजट के प्रति कितना कमिटमेंट हैं, यह आपकी सदन में उपस्थिति से पता चलता है।**

राठौड़ ने कहा कि मैं ओल्ड पेंशन स्कीम यानि ओपीएस का विरोध नहीं हूं। मगर सरकार पेंशन देने के लिए पैसा कहां से लाएगी। आपने ओपीएस को लागू किया, मगर पैसे को प्रबंध तो करो। इस ओपीएस के लिए 2024-25 में 30 हजार करोड़ रुपए का सरकार पर भार आएगा। आप आने वाली सरकारों के लिए कंटीला मार्ग छोड़कर जा रहे हो।

राठौड़ ने कहा कि संविदाकर्मियों को नियमित करने के जो रूल्स बनाए गए हैं, उनसे 1.10 लाख में 10-12 हजार का भी नियमितिकरण नहीं हो पाएगा। प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बने साढ़े चार 4 साल बीते चुके, अंतिम बजट आ गया, मगर सरकार जवाबदेही कानून नहीं लाई। तीन वर्षों में पर्यटन का पूरा पैसा खर्च नहीं किया गया। स्कूल बहुत खोल दिए, मगर इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए तो पैसा ही नहीं दिया। जलवायु नीति की घोषणा हुई थी, मगर यह नीति नहीं आई। नतीजा यह है कि विश्व के सबसे प्रदूषित शहरों में राजस्थान के चार शहर शामिल हैं। स्कूली छात्राओं को ड्रेस आज तक नहीं मिल पाई है। समर्थन मूल्य पर फसलों की खरीद शुरू नहीं हो पाई है।

इसके बाद राठौड़ ने ईआरसीपी के मुद्दे पर भी सरकार को घेरा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री इस पर पूरा भाषण देंगे। इन्होंने योजना पर 13 हजार करोड़ के व्यय की घोषणा की थी, मगर पिछले वर्ष जितना पैसा इस योजना के मद में रखा गया, उसके मुकाबले केवल 1284 करोड़ रुपए खर्च किया गया। मैं सीएम से पूछता चाहता हूं कि केवल इस मुद्दे को जिंदा रखना है या फिर काम करना है।

उपनेता प्रतिपक्ष ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को घेरते हुए कहा कि, 15वीं विधानसभा का यह सत्र राजस्थान के इतिहास में याद किया जाएगा। इस विधानसभा में सीएम ने भी रिकॉर्ड बनाया है। मैं कई बार का सदस्य हूं, लेकिन सबसे कम विधानसभा में उपस्थिति मुख्यमंत्री की रही। राज्यपाल के अभिभाषण पर रिप्लाई, बजट पढ़ने और आज बजट पर रिप्लाई की आपकी मजबूरी रह गई। आपका बजट के प्रति कितना कमिटमेंट हैं, यह आपकी सदन में उपस्थिति से पता चलता है।

राठौड़ ने कहा कि सत्तापक्ष ने स्तुति गान किए। मगर आपने पिछले बजट के कुछ पन्ने पढ़ दिए। मैं आपको गांधीवादी मानता हूं, मगर सावचेत कर रहा हूं कि ढाई दर्जन विधायक आपके खिलाफ बोले हैं। उन्होंने कहा कि आदर्श आचार संहिता कुछ महीने बाद लग जाएगी। आप राजस्थान में जाएंगे, मगर आपको तख्ती लिए लोग मिलेंगे कि बजट की घोषणाएं पूरी नहीं हुई है। आपको काले झंडे भी दिखाए जा सकते हैं। राठौड़ ने सीएम सलाहकार संयम लोढ़ा पर भी कटाक्ष किया और कहा कि मुख्यमंत्री ने बजट बनाते समय आपको याद नहीं किया। मैं अपका शुभचिंतक हूं।

एस.के.आई.टी. में पूर्व छात्रों ने साझा किए अपने अनुभव

स्वामी केशवानंद इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी की ओर से वर्ष 2004 से 2021 बैच के स्नातक छात्रों के लिए एलुमनी मीट रखी गई।

जयपुर, (का.सं.)। स्वामी केशवानंद इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी (एस.के.आई.टी.), मैनेजमेंट एंड ग्रामोथन ने 2004-2021 बैच के स्नातक छात्रों के लिए अंदाज बाग, जगतपुरा में एलुमनी मीट का आयोजन किया। कार्यक्रम का संचालन संस्थान के पूर्व छात्र संघ ने किया। यह लगभग 515 पूर्व छात्रों की उपस्थिति के साथ एक भव्य शाम साबित हुई, जिन्होंने अपने शिक्षकों और दोस्तों के साथ अपनी सुखद यादों और अनुभवों को संजोया।

संस्थान के चेयरमन सुरजाराम मील ने आये हुए सभी एलुमनी छात्रों का स्वागत किया, तथा उन्हें अपने जीवन में एक छाप छोड़ने के लिए बधाई दी। उन्होंने संस्थान के लिए इस तरह के गौरवपूर्ण क्षण लाने के लिए सभी छात्रों की प्रशंसा की। निदेशक अकादमिक, प्रोफेसर एसएल सुराना ने भी पूर्व छात्रों का स्वागत किया और उन्हें संस्थान के विकास में भूमिका निभाने के लिए आमंत्रित किया। एसकेआईटी के निदेशक जयपाल मील ने कार्यक्रम के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और बड़ी संख्या में निमंत्रण स्वीकार करने वाले पूर्व छात्रों के प्रति अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। पहले बैच के कई छात्रों ने संस्थान के प्रति आभार व्यक्त किया और कुछ अनकही कहानियाँ अपने जूनियर्स से साझा कीं।

इस कार्यक्रम में रजिस्ट्रार रचना मील, प्राचार्य प्रो. रमेश कुमार पचार और इंजीनियरिंग और एमबीए विभागों के प्रमुख और संकाय सदस्य भी उपस्थित थे। आयोजन के समन्वयक महेंद्र बेनीवाल और डॉ. नेहा पुरोहित ने एसकेआईटी एलुमनी एसोसिएशन की विभिन्न पहलों के बारे में पूर्व छात्रों को अवगत कराया। शाम को ऊर्जा द बैंड की शानदार परफॉर्मेंस भी देखी गई और मेहमानों ने रॉकिंग डीजे म्यूजिक की धुनों पर डांस किया।

संक्षिप्त

70 तरह के फूलों से खिला सचिवालय

जयपुर, (कासं) । राजस्थान की प्रशासनिक शक्ति का केंद्र शासन सचिवालय इन दिनों 70 से भी अधिक प्रजातियों के फूलों से गुलजार है। विविध किस्मों के फूलों का सतरंगी संसार आगंतुकों के स्वागत में खिला नजर आता है। आंखों को सुकून देते बोगनविलिया के 40 रंगों के फूलों की कतारें जहां बरबस मन को बांध लेती हैं, वहीं फूलों के राजा गुलाब की भी 10 से अधिक किस्में अपनी महक से समूचे परिसर को सुरभित किए हुए है। शासन सचिवालय उद्यान में खिले विविध रंगी पुष्पों में पिटुनिया, साल्विया पैन्जी, आस्टर फलोक्स, पनसेटिया, बरबीना, केलेन्डुला, नस्ट्रेशियम, लार्कस्पर गेंदा, लीजम, बिगोनिया, गजेनिया, सिनरेरिया, स्वीटपी डहेलिया, डिमारपोथी, एन्ट्राइनम, क्राइसेन्थीमम के साथ गुलाब की 10 प्रजाति व बोगनविलिया के 40 रंगों के फूल शामिल हैं। सार्वजनिक निर्माण विभाग के वरिष्ठ अधीक्षक (उद्यान) सुरेश नारायण शर्मा की देखरेख में इस फुलवारी को कार्मिक विभाग की ओर से तैयार किया गया है। शर्मा का कहना है कि गर्मी की फुलवारी लगने की अभी से तैयारी हो रही है। उद्यान का लॉन भी हरा-भरा मनमोहक लग रहा है, जिससे यहां आने वाले आगन्तुकों को आनंद की अनुभूति हो रही है।

युवक से बाइक और नकदी लूटी

जयपुर । करधनी थाना इलाके में एक युवक के साथ लूटपाट करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है। पुलिस के अनुसार नांगल पुरोहितान निवासी नरेंद्र कुमार योगी ने मामला दर्ज करवाया है कि उसका बेटा प्रशांत 7 मार्च की रात को जयपुर अपनी नानी के घर जा रहा था। वह निवारू पुलिया के पास अचेत मिला तो उसे एसएमएस अस्पताल में भर्ती करवाया गया। दोनों जबड़े, नाक की हड्डी और ललाट पर फ्रैक्चर के कारण वह बोलने की हालत में नहीं था। अब उसने बताया कि उसके साथ मारपीट कर बाइक, बीस हजार रुपए और सोने के आभूषण लूट लिए गए।

हथियार लेकर घूम रहा बदमाश पकड़ा

जयपुर । जयपुर कमिश्नरेट की स्पेशल टीम ने विधायकपुरी इलाके में एक बदमाश को देशी पिस्टल लेकर घूमते हुए गिरफ्तार किया है। पुलिस उपायुक्त (अपराध) ज्येष्ठा मैत्रयी ने बताया कि सीएसटी ने आरोपित मोहम्मद सद्दाम (32) निवासी गांव पोस्ट बोराज मौजमाबाद (जयपुर ग्रामीण) का रहने वाला है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से अवैध देसी पिस्टल बरामद की है। गिरफ्तार आरोपित मोहम्मद फिलहाल वैशाली नगर में कैफे में पार्टनरशिप में काम करता है।

दुष्कर्म केस में फरार आरोपित पकड़ा

जयपुर । ब्रह्मपुरी थाना पुलिस ने एक साल से फरार नाबालिग पीडिता को बहला-फुसलाकर घर से ले जाकर दुष्कर्म करने वाले एक आरोपित रोहिताश मीणा निवासी माउंट रोड ब्रह्मपुरी को को गिरफ्तार किया है।

500 किलो अवैध गांजे के साथ जयपुर पुलिस ने 5 तस्कर दबोचे

उडीसा से गांजा लाकर दिल्ली और राजस्थान में सप्लाई करते थे बदमाश

जयपुर (कासं)। जयपुर कमिश्नरेट की स्पेशल टीम (सीएसटी) ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप अभियान के तहत बाड़ी सदर (धौलपुर) में कार्रवाई करते हुए 5 तस्करों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 5 क्विंटल अवैध गांजा बरामद किया है। पुलिस ने तस्करों के पास से गांजा सप्लाई करने के लिए लाए गए दो वाहनों को भी जब्त किया है। पुलिस पूछताछ में सामने आया है कि आरोपित उडीसा से गांजा लाकर दिल्ली और सपोटरा करौली में सप्लाई करते थे। पुलिस ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत अब तक 1 हजार 430 प्रकरण दर्ज कर 1 हजार 819 लोगों को गिरफ्तार कर चुकी हैं।

अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर (प्रथम) कैलाश चन्द विश्नोई ने बताया कि सीएसटी टीम ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप अभियान के तहत बाड़ी सदर जिला धौलपुर में कार्रवाई करते हुए आरोपी तस्कर लेखराज उर्फ मोनू मीना (28) निवासी सपोटरा जिला करौली, देशराज मीना (35) निवासी सपोटरा जिला करौली,वाकिब (30) निवासी गंगापुर सिटी जिला सवाई माधोपुर, साबिर खां (32) निवासी गंगापुर सिटी जिला सवाईमाधोपुर और अमजद (35) निवासी गंगापुर सिटी जिला सवाईमाधोपुर को गिरफ्तार किया गया हैं। पुलिस ने आरोपितों के पास से 5 क्विंटल अवैध मादक पदार्थ गांजा सहित गांजा सप्लाई करने के लिए लाए गए दो वाहनों को भी जब्त किया गया है।

- **पुलिस टीम ने बदमाशों की पिकअप और एस्कॉर्ट कर रही गाड़ी जब्त की**

पुलिस उपायुक्त (अपराध) ज्येष्ठा मैत्रयी ने बताया कि लेखराज उर्फ मोनू मीना मास्टर माइंड है। गांजा तस्करी के लिए राजस्थान से रवाना होते हुए नए मोबाइल सिम प्राप्त कर उडीसा जाते है और वहां से गांजा खरीदने के बाद उडीसा से नई मोबाइल सिम प्राप्त करते है। नेटवर्क डोंगल से वाई-फाई कनेक्ट करके एक दूसरे के सम्पर्क में रहते है। पुलिस जानकारी में सामने आया कि आरोपी लेखराज उर्फ मोनू कार होण्डासिटी से 15-20 किलोमीटर आगे चलकर पिकअप में सवार बदमाशों को लाइव लोकेशन देकर एवं पुलिस से बचाव करते हुए एस्कॉर्ट कर उडीसा से छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और राजस्थान होते हुए दिल्ली लेकर जा रहा था।

आरोपित उडीसा से 8 हजार रुपए प्रति किलो के हिसाब से गांजा खरीदते है और उसे 13 से 14 हजार रुपए प्रति किलो के हिसाब से बड़ी मात्रा में सप्लाई करते है। वहीं जानकारी में सामने आया कि गांजा सपोटरा एवं दिल्ली में रवि मीना को सप्लाई करते है। जिसकी एवज में रवि मीना प्रति चक्कर के हिसाब से खर्चा पानी के अलावा डेढ़ लाख रुपए नकद देता है। फिलहाल आरोपियों से अवैध मादक पदार्थ की खरीद-फरोख्त समेत गिरोह के बारे में पूछताछ की जा रही है।

जयपुर पुलिस ने बाड़ी (धौलपुर) में कार्रवाई करते हुए 5 गांजा तस्करों को गिरफ्तार किया।

पिस्तौल की नोंक पर दो दोस्तों का अपहरण कर लूट

जयपुर (कासं)। करधनी थाना इलाके में अपहरण कर दो दोस्तों से लूट का मामला सामने आया है। बताया जा रहा है कि पिस्तौल के दम पर बदमाशों ने दोनों को जमकर पीटा। वहीं आरोपितों ने पुलिस शिकायत करने पर मारकर नदी में फेंकने की धमकी दी। इस संबंध में पीडित के पिता की ओर से थाने में मामला दर्ज करवाया गया है। पुलिस वारदात स्थल के आस-पास लगे सीसीटीवी फुटेजों को खंगाल रही है।

पुलिस ने बताया कि गणेश नगर विस्तार निवारू रोड निवासी जितेन्द्र सिंह (42) ने मामला दर्ज करवाया है कि उसका बेटे वैभव और उसके दोस्त देवांश का अपहरण कर लूट की वारदात हुई है। 15 मार्च को बड़े भाई अभिजित योगी ने शादी की सालगिरह की पार्टी चौधरी ढाबे पर रखी थी। वैभव अपने दोस्तों के साथ पार्टी में खाना खाकर घर लौट रहा था। कालवाड़ चौकी से निवारू पुलिया की तरफ आते समय सफेद रंग की स्कॉर्पियो ने उनकी वर्ना कार को सामने से टक्कर मार दी। स्कॉर्पियो से 7-8 लडके उतरे और पिस्तौल के दम पर जबरदस्ती गाड़ी में बैठाने लगे। बदमाशों ने वैभव और देवांश को पकड़ लिया। दोस्त आशीष और मानवेन्द्र वहां से भाग गए। बदमाशों ने वैभव और उसके दोस्त देवांश का मुंह शर्ट से ढक दिया। स्कॉर्पियो गाड़ी से उतारकर दोनों को स्विफ्ट कार में बैठा दिया। बेल्ट से मारते हुए दोनों को ले गए और उनसे चांदी की चेन और 5 हजार रुपए लूट लिए। वहीं पिस्तौल लगाकर बदमाशों ने किसी को नहीं बताने पर मार के नदी में फेंकने की धमकी दी। इसके बाद उनको छोड़कर बदमाश फरार हो गए।

प्रदेश में एक ही दिन में 23 नए करोना संक्रमित

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । प्रदेश में एक बार फिर करोना संक्रमण जोर पकड़ने लगा है। इसके चलते शुक्रवार को एक ही दिन में 23 नए संक्रमित मिले हैं। वहीं इस बीच केवल एक ही मरीज के रिकवर होने से एक्टिव केस बढ़कर 100 के करीब पहुंच गए हैं।

- **राज्य में एक्टिव केस बढ़कर 100 के करीब पहुंचे**

प्रदेश में शुक्रवार को सात जिलों में 23 नए संक्रमित मिले हैं। इससे पहले गुरूवार को इनकी संख्या 14 रही थी। आज राज्य में सबसे ज्यादा जयपुर और भीलवाड़ा में 6-6 नए संक्रमित मिले हैं। इसके अलावा जालोर में 5, उदयपुर में 3, अजमेर, बीकानेर और गंगानगर में 1-1 नया मरीज पाया गया है। इस बीच प्रदेश में पिछले चौबीस घंटों में एक मरीज रिकवर हुआ है। राज्य में नए संक्रमितों की संख्या में बढ़ोत्तरी होने से व रिकवरी घटने से एक्टिव केस बढ़कर 92 हो गए हैं। इनमें उदयपुर में 28, जयपुर में 24, भीलवाड़ा में 11, राजसमंद में 10, बीकानेर में 6 जालोर में 5, अजमेर व जोधपुर में 3-3, चूरू और गंगानगर में 1-1 मामला है। प्रदेश में शुक्रवार को करोना से किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई है। हालांकि अब तक इस बीमारी से 9556 लोगों की मौत हो चुकी है।

सार-समाचार

विप्र फाउंडेशन के प्रतिनिधि मिश्र से मिले

जयपुर । विप्र फाउंडेशन ने शुक्रवार को राज्यपाल कलराज मिश्र से मुलाकात कर ईडब्ल्यूएस की विसंगतियों एवं मेहंदीपुर बालाजी के विप्र महाकुंभ में पारित प्रस्ताव को सरकार को भेज इन बिंदुओं को लागू कर आर्थिक पिछड़ा वर्ग को लाभान्वित करने के निर्देश देने का आग्रह किया हैं। मिश्र से राजभवन में मुलाकात करने वालों में विप्र फाउंडेशन के राष्ट्रीय संरक्षक एवं मावली विधायक धर्म नारायण जोशी, अलवर विधायक संजय शर्मा, विप्र फाउंडेशन जॉन-1 डी के अध्यक्ष वेद प्रकाश शर्मा, विप्र फाउंडेशन राजस्थान जोन 1 के अध्यक्ष राजेश कर्नल एडवोकेट, महामंत्री सतीश शर्मा शामिल थे। ईडब्ल्यूएस को राजनीतिक आरक्षण तथा अन्य विसंगतियों को दूर करने की मांग विप्र फाउंडेशन के मेहंदीपुर बालाजी में संपन्न विप्र महाकुंभ में उठी थी। महाकुंभ में सरकार से जुड़ी इन मांगों को लेकर प्रस्ताव भी पारित किया गया था। मांगों के साथ प्रत्येक तहसील में ब्राह्मण छात्रावास निर्माण के लिए इच्छुक संस्थाओं को टोकन मनी पर भूमि आवंटित करने, हिन्दू मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करने, हिन्दू धर्म व देवी देवताओं के सम्मान की सुरक्षा के लिए इसके लिए अलग से हिन्दू रिलीजियस एक्ट बनाने की मांग की गई है। राजकीय भर्तियों में हुई धांधली के कारण योग्य युवाओं को नौकरियों से वंचित रखने वाले दोषियों की उच्च स्तरीय जांच करवाकर कड़ी से कड़ी सजा सुनिश्चित करने को भी कहा गया है।

कुत्तों ने नोंच खाया मानव भ्रूण

जयपुर (कासं)। वैशाली नगर इलाके की कॉलोनी रोड पर मानव भ्रूण मिलने से सनसनी फैल गई। भ्रूण को आवारा कुत्ता मुंह में लेकर घूम रहा था। भ्रूण के दोनों हाथ और एक पैर कुत्तों के नोंच खाने के गायब मिले। लोगों की सूचना पर वैशाली नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और भ्रूण को कब्जे में लेकर कांवटिया अस्पताल की मॉर्च्यूरी में रखा गया। जहां पोस्टमार्टम कर दफना दिया गया। पुलिस ने बताया कि खातीपुरा रोड महाराणा प्रताप नगर निवासी विवेक गोयल ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है कि 13 मार्च की रात करीब 8:30 बजे उनको घर के बाहर मेन गेट के सामने मानव भ्रूण पड़ा मिला। बच्चों ने कॉलोनी की रोड पर मानव भ्रूण पड़े देखकर उन्हें बताया था। भ्रूण मिलने का पता चलने पर कॉलोनी के लोगों में सनसनी फैल गई। सूचना मिलने पर वैशाली नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने मौका-मुआवना कर भ्रूण को कब्जे में लिया। इसके बाद पोस्टमार्टम के लिए कावंटिया हॉस्पिटल की मॉच्यूरी भिजवाया। प्रथमदृष्टया जांच में सामने आया कि भ्रूण करीब 8-9 महीने के नवजात शिशु का था। कचरे में फैंके भ्रूण को कुत्तों ने नोंच खाया। इसके बाद कुत्ते मुंह से उठाकर भ्रूण को कॉलोनी की रोड पर फेंक गए। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद भ्रूण को दफना दिया। पुलिस ने अज्ञात परिजनों के खिलाफ मामला दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है।

केन्द्र पर बेवजह आरोप गलत : राजवी

जयपुर (विसं)। बीजेपी विधायक नरपत सिंह राजवी ने कहा कि राज्य सरकार का वित्तीय मैनेजमेंट ठीक नहीं है। आंकड़े बढ़ा-चढ़ाकर पेश किए गए। बार-बार केंद्र सरकार पर आरोप लगाने से काम नहीं चलेगा। केंद्र सरकार ने पूरी मदद की है। कोविड के समय पूरी वैक्सीनेशन का पैसा दिया। आप वैक्सीन के लिए ग्लोबल टेंडर करने चले थे, लेकिन क्या हुआ? केंद्र सरकार पर दोषारौपण से पहले खुद की हालत देखनी चाहिए। सांगानेर (जयपुर) से विधायक लाहोटी ने कहा कि सरकार ने ओरेकेल पर ऑनलाइन फाइलिंग और पूरे सॉफ्टवेयर को शिफ्ट करने पर 500 करोड़ में निजी कंपनी को काम दिया जबकि यही काम सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम एनआईसी केवल 65 करोड़ में करने को तैयार थी। मिड डे मील और पोषाहार का काम बिना टेंडर दिया गया। जानवरों वाला खाना बच्चों को दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री सलाहकार विधायक संयम लोढा ने केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह पर निशाना साधते हुए कहा कि केंद्रीय मंत्री वॉयस सैंपल दीजिए। राजस्थान सरकार को गिराने की कोशिश की या नहीं, यह सब जानते हैं। बीजेपी के मित्रों को मालूम है कि आवाज किसकी थी।

दो थानाधिकारी लाइन हाजिर

जयपुर । राजस्थान विश्वविद्यालय के बाहर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को काले झंडे दिखाने के मामले में जयपुर पुलिस कमिश्नर की ओर से दो थाना अधिकारियों को रिजर्व पुलिस लाइन हाजिर करने का आदेश दिया गया है। जारी आदेश के अनुसार जयपुर पुलिस कमिश्नर आनंद श्रीवास्तव ने ट्रांसपोर्ट नगर थानाधिकारी अब्दुल वहीद और महिला थाना जयपुर पूर्व एकता राज को राजस्थान विश्वविद्यालय के बाहर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को काले झंडे दिखाने में लापरवाही बरतने को लेकर रिजर्व पुलिस लाइन हाजिर कर दिया गया है। गौरतलब है कि गुरुवार को लापरवाही को लेकर प्रारंभिक अनुसंधान में सब इंस्पेक्टर राकेश मीणा, एएसआई धर्मेंद्र कुमार, कांस्टेबल राजेश कुमार, गजेंद्र, सुरेंद्र कुमार, राधेश्याम की लापरवाही सामने आई है। इस पर इन्हें तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया था। ज्ञात रहे कि मंगलवार को सीएम अशोक गहलोत राजस्थान विश्वविद्यालय में लॉ कॉलेज के कार्यक्रम में शिरकत करने आए थे। यहां से वापस लौटते समय यूनिवर्सिटी के गेट के बाहर मुख्यमंत्री के काफिले को रोककर एबीवीपी कार्यकर्ताओं ने काले झंडे दिखाए थे।

मंत्रालयिक कर्मचारियों का अनशन शहीद स्मारक पर दूसरे दिन भी जारी

जयपुर,(कासं)। सरकार द्वारा मंत्रालयिक कर्मचारियों की उपेक्षा किए जाने से आक्रोशित मंत्रालयिक कर्मियों का 5 सूत्री मांग पत्र के समर्थन में अनिश्चितकालीन क्रमिक अनशन आज शहीद स्मारक पर दूसरे दिन भी जारी रहा। विभिन्न मंत्रालयिक संगठनों ने मिलकर मंत्रालयिक एकता मंच के तत्वावधान में कल सैकड़ों कर्मचारियों की उपस्थिति में कोर कमेटी सदस्य राजेश पारीक के नेतृत्व में क्रमिक अनशन प्रारंभ किया था। आज वरिष्ठ कर्मचारी नेता महेंद्र सिंह धायल के नेतृत्व में सतीश चंद शर्मा, सुभाष चंद्र लुगरिया, ओम प्रकाश सेन और संदीप माथुर क्रमिक अनशन पर बैठे।

मंत्रालयिक एकता मंच के प्रदेश प्रवक्ता देवेंद्र सिंह नरूका ने बताया कि मंत्रालयिक कर्मचारियों द्वारा द्वितीय पदोन्नित के पद सहायक प्रशासनिक अधिकारी की ठोड पे 4200 करने, एक नया पदोन्नित का पद उप निदेशक प्रशासन ठोड पे 8700 में सृजित करने, कनिष्ठ एवं वरिष्ठ सहायकों के काटे गए पदों को बहाल करने, कनिष्ठ सहायक का आरंभिक वेतन 25500 करने, पंचायती राज संस्थाओं के कार्मिकों को भी राज्य कर्मचारी मारते हुए अन्य विभागों के समान पदोन्नित के पद सृजित करने तथा गृह जिला समायोजन, कनिष्ठ सहायक की शैक्षिक योग्यता स्नातक करने, पदोन्नित हेतु अनुभव में पूर्ण शिथिलता देने, चिकित्सालय एवं विद्यालयों में मंत्रालय कर्मचारियों को 5 दिन का सप्ताह करने की मांग प्रमुख है।

चुनाव से पहले प्रधानमंत्री मोदी को ओल्ड पेंशन स्कीम लागू करनी पड़ेगी : मुख्यमंत्री

जयपुर (विसं)। विधानसभा में बजट बहस पर जवाब देते हुए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि ओल्ड पेंशन स्कीम (ओ.पी.एस.) पर चुनाव से पहले प्रधानमंत्री मोदी को भी फैसला करना होगा। आप संभल जाइए, हरियाणा, कर्नाटक, महाराष्ट्र में कई राज्यों में मांग उठ रही हैं। जब 65 साल में कांग्रेस ने ओपीएस लागू करके आगे बढ़ाया। पंडित नेहरू के पास दूरदृष्टि थी, उन्होंने आधुनिक भारत की नींव रखी। आज प्रधानमंत्री मोदी जिस आधुनिक भारत पर गर्व करते हैं, उसके निर्माता कांग्रेस और कांग्रेस के नेता है। राजस्थान में 30 मार्च से 25 लाख रुपए वाली नई चिरंजीवी योजना लागू होगी। गहलोत ने कहा कि हम कर्मचारियों को शेयर बाजार के भरोसे कैसे छोड़ सकते हैं। कैग और ज्यूडिशियरी ने एनपीएस लागू करने से मना कर दिया। ओपीएस को लेकर हमारे खिलाफ आर्टिकल आ रहे हैं, अब तक ओपीएस से ही देश चला है, अब क्या दिक्कत है।

- **राजस्थान में हम 35 वर्ष सेवाएं देने वाले कर्मचारियों को शेयर बाजार के भरोसे नहीं छोड़ सकते : गहलोत**

कर्ज को लेकर गहलोत ने कहा कि केंद्र सरकार ने राज्यों को कोविड में स्पेशल छूट दी थी, उसके आधार पर अतिरिक्त कर्ज लिया। विपक्ष कर्ज को लेकर गुमराह कर रहा है। हमारा वित्तीय प्रबंधन शानदार रहा है। राज्य सरकारें निवेश करती है, वह 95 फीसदी पैसा आरबीआई से वापस ले सकती है। हमने इसीलिए आरबीआई से कर्ज लिया। बाजार से लेते तो ज्यादा ब्याज देना पड़ता। आरबीआई ने इसे बुद्धिमत्ता वाला कदम माना है। गहलोत ने कहा कि जब बुद्धिमत्ता से काम लेंगे तभी बढ़िया बजट पेश कर सकेंगे। गहलोत ने कहा कि बीजेपी सरकारों ने जीएसडीपी का 36 फीसदी तक कर्ज लिया था। हमने कर्ज कम किया था। हमने हमारे कार्यकाल में जो कर्ज लिया था, वह बीजेपी से कम था। हमारा कर्ज बीजेपी राज की तुलना में 10 फीसदी है। बीजेपी के वक्त 50 फीसदी कर्ज बढ़ा था।

उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान ने जिस तरह ग्रो किया है, उसका हमें गर्व होना चाहिए। सबसे ज्यादा यूनिवर्सिटी राजस्थान में हैं। बीजेपी राज में अंबेडकर लॉ यूनिवर्सिटी और हरिदेव जोशी पत्रकारिता यूनिवर्सिटी को बंद कर दिया। देश के इतिहास में पहली बार हुआ जब किसी यूनिवर्सिटी को खोलकर बंद किया। राजस्थान में आज आईआईटी, आईआईएम जैसी प्रीमियम संस्था आ गईं। लोग कहते हैं कि इनसे वोट नहीं मिलते हैं, हम केवल वोट ही नहीं देखते हम युवाओं का भविष्य भी देखते हैं। गहलोत ने कहा कि हम बजट पर बहुत फास्ट चल रहे हैं। ज्यादातर स्वीकृतियां जारी कर दी। मैंने विभाग के सचिवों को बुलाकर एबीसी तीन कैटेगरी बना दी। हमने हमारे घोषणा पत्र के 80 फीसदी वादे पूरे कर दिए।

चूड़ी कारखाने से 7 बालश्रमिक छुड़ाए

जयपुर (कासं)। भट्टा बस्ती थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए पढ़ाई के नाम पर छोटे बच्चों को बिहार से जयपुर लाकर उनको बालश्रम में धकेलने वालों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए चूड़ी कारखाने से सात बाल श्रमिकों को मुक्त कराया और साथ ही एक आरोपित कारखाना संचालक को गिरफ्तार किया है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर उत्तर राशि डोगरा डूडी ने बताया कि भट्टा बस्ती थाना पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर थाना इलाके के संजय नगर स्थित एक मकान में चल रहे चूडी बनाने कारखानों पर दबिश दी गई । जहां पर कारखाने में चूडी बनाते मिले सात बाल श्रमिकों को मुक्त कराया गया। बाल श्रम कराने के आरोप में कारखाना संचालक इनामुल्लाह उर्फ सोनू निवासी आसपुर देवसरा जिला प्रतापगढ उत्तरप्रदेश हाल संजय नगर भट्टा बस्ती को गिरफ्तार किया गया है।

ARBiT
it happens here...

Global Recycling Day

As planet Earth gives up billions of tons of natural resources each year, the health of the planet continues to decline. This makes it more and more important for humans to do what they can and focus on ways to reduce waste, reuse items and restore the health of the planet. One vital way of doing this is through the practice of recycling. Global Recycling Day is here to remind individuals, organizations, corporations and governments that recycling is a key part of the circular economy of humans on the planet.

राष्ट्रदूत
SATURDAY
18 March 2023
A-B

#ENTERPRISING

Empowering Small Businesses in Jaipur

The Market Place is the brainchild of Upasana Kumar, who from the very beginning aimed to provide a platform for Jaipur's people to showcase their products that are handmade, homemade, organic and artisanal.

Tusharika Singh
Freelancer writer and city blogger

For the past four years now, Hotel Clarks Amer in Jaipur has been hosting a unique marketplace to showcase small businesses and entrepreneurs. With the exception of the Covid-19 pandemic induced lockdown, this market is being held every Sunday. This marketplace began as "The Farmer's Market," offering fresh organic produce, organic pulses, spices and grains, chemical-free beauty products, vegan and gluten-free snacks, preservative-free sauces and dips, and other environment conscious products. It was later rebranded as "The Market Place" to expand its product range. The concept was the brainchild of Upasana Kumar,

who from the very beginning aimed to provide a platform for Jaipur's people to showcase their products that are handmade, homemade, organic and artisanal.

According to Upasana, The Market Place has given many local brands the confidence to display their work and skills, providing a space for them to connect with each other, mingle with like-minded business owners, and an opportunity to scale up their businesses. The impact on the local community has been substantial.

When selecting vendors for The Market Place, Upasana endeavours to accommodate as many people as possible, with a focus on locals who have attempted to create different types of products or have created routine products in a unique way. The quality of the products cannot be compromised, and they should be reasonably priced.

The concept of a weekly market was a new concept for Jaipur when Upasana began in 2019, and she encountered challenges in getting people on board and marketing the idea across genres. However, by spreading the word through social media and regularly organizing markets, she was able to overcome these obstacles. Since then, the market has gained popularity, and it has been a great success.

To mark the International Women's Day and The Market Place's fourth anniversary, a special edition featuring around 30 women entrepreneurs and business owners was organized. After collaborating with large-scale events such as the Jaipur Literature Festival and We The Women, Upasana aims to expand the concept to a pan-India level. She hopes to take Jaipur's home-grown brands to other cities, allowing them to network with like-minded communities to carve out better opportunities together.

The 100 Hundred Finale and the Broken Trust

Subhash Mathur
Retd. IRS officer and a free lance writer

#THE LAST MATCH

25 June was always a special day in my life.

It was my birthday.

It was made even more exciting because the Final of the newly minted 100- Hundred was also scheduled for 25th June.

100 H had swept away T10 - T20-ODI off the table and into the dustbin.

100 H was played in two halves in alternating segments in Mixed doubles format.

It was gender neutral with 12 players in each team. Grounds had been made larger to accommodate the extra fielder.

And the Finale was slotted for 25th June.

Additionally I was going to touch '83 on that day.

Happy birthday to You.

Thanks.

83 looks like old age but in 2032 the new age 'Don't Grow Old' pills had been fine tuned to keep Senior Citizens youthful and peppery.

The previous evening I had persuaded my grand-nephew to make all preparations 'glitch' proof.

No disruptions. On any account.

My seat was reserved next to the Ice box full of soft drinks. I avoid hard drinks on 'must stay awake' occasions.

Fresh snacks would be ordered from 999 during the game. I loved sautéed Prawns.

Excitement was in the air and I was lit into H 100.

My family, that is my 80 plus wife Chirpy and children had agreed to join me in the drawing room to watch the game.

Birthday celebrations after the game.

Defending champions Namibia were pitted against the new Cricket Kings, Netherlands.

I was rooting for Namibia. I really liked Mbanga Jr. He was in Sir Gary mould. And sis Abena had cornered huge glory in the past six months. She was known as the 'Foxer'.

Man Friday had ensured that I was up and about on 25th before 8 and was ready for breakfast.

As I waited for 2 water poached eggs with buttered toast I scanned the Morning Star hurriedly.

One large cuppa hot sweet and steaming tea was already at my elbow.

Weathermen predicted clear balmy evening over the Hammer Complex, Rochester.

So far so Good.

As usual I was tiring by 11. Man Friday gently tucked me into the bed for my usual pre-lunch nap. That kept me going for the rest of the day.

As per custom I would wake up around 12 but that didn't happen on 25th.

> One large cuppa hot sweet and steaming tea was already at my elbow. Weathermen predicted clear balmy evening over the Hammer Complex, Rochester. So far so Good. As usual I was tiring by 11. Man Friday gently tucked me into the bed for my usual pre-lunch nap. That kept me going for the rest of the day. As per custom I would wake up around 12 but that didn't happen on 25th.

Worried, Man Friday rushed into my bedroom and tried to wake me up but to no avail.

He even slapped me twice. On my cheek!

Audacious fellow.

Shortly thereafter he shouted for the other family members to converge and check me out.

Each one tried cajoling me into wakefulness.

My wife Chirpy of 62 years togetherness walked in and took control. She whispered sweet nothings into my ears. But they fell on deaf ears.

I could hear some subdued sobbing and sense lots of frenetic activity.

Our building resident doctor was being contacted but he was in the shower.

Soon I heard my son Munnu [Manohar for the uninitiated] calling for the ambulance.

He vaguely mentioned Escorts Jaipur to Grandy Ambika.

Our eldest Bahu, Vatika started chanting Babu ji 'Kitne acche they' but quickly corrected herself into 'Kitne acche hain'

After all I wasn't declared dead just yet.

Out of the blue Ambika groaned and blurted out 'Oh my God, Babaji will miss the Finale'.

How cute!

Finally the resident Doc Hari blustered his way on to my bedside with a serious countenance. Hurriedly he conducted a feverish preliminary exam just to confirm what I already what I knew:

That I was 'Dead as a Dodo'.

Exam over, he solemnly announced:

'It's all over. Call the relatives.'

And left hurriedly.

Family took over.

Just then the voices started fading away. Why was I left alone?

Oh! I realised that they were now busy with the arrangements.

When will the funeral happen?

Today? Too late. Tomorrow would suit everyone.

Which 'Shamshan' Ghat will be nicer? And so on.

Let's divide the work of informing the Family and friends.

We have to give time for the outstation family to join.

Eldest Bahu Vatika was entrusted with drafting the obituary for the local papers. She began feeling important.

Just then I heard Mansi, the younger daughter crying inconsolably on the speaker phone. And giving out instructions to Munnu in between the sobs.

You know Munnu, she blurted out 'We need a befitting funeral For the Doyen!

Befitting? Never mind. Doyen! Seriously.

And wait till I reach and please please don't do anything stupid in the meanwhile' Mansi admonished Munnu.

Just then Chunnu, the younger one joined the conference call - Hey wait for us to reach. Don't be in a rush.

Mansi as usual ignored Chunnu and went on: put Papa comfortably on an ice slab under a see through tent. For clear 'darshan'.

How lovely.

And listen Munnu light a few candles and Agarbatti - Papa loved the rose scent.

Let's make him feel comfortable and important. Yeah put him in the drawing room. It's a large room.

And yes, before I forget book the Zia band.

We will take him in a Song and Dance grand procession. I loved him you know.

And Munnu, listen don't forget to call Dangi Chachi and Piyu Bhua. They would be livid if we didn't inform them straightaway.

They were close to Papa.

See you all soon. The chatter ebbed away.

In the midst of all the activities I lay comfortably on the Ice Slab. For some odd reason I didn't feel the cold at all.

Lots of activity was happening. People were coming in and going out.

Visitors entered the Flat with mildly shaking folded hands. And bare footed. Tip toeing to stand in front of me almost touching my fee.

Very soon some mantras chanting started. The Priests had landed I surmised.

It was finally getting kind of claustrophobic. I could feel it in my bones.

But exhaustion finally took over. I fell asleep.

As morning dawned I was jolted awake as someone had removed the tent. And two strangers were taking off my clothes.

What the hell was going on?

They didn't even ask me. But it didn't matter to anyone anymore.

Just then I remembered: I was dead anyway.

I should not butt in unnecessarily.

As clothes resisted being taken off they were just cut them open. And cast asunder.

Eeeks!

'Nange aayey the Nange he jaayey ge'

And quickly bathed me with cold water. How I hated cold baths.

'Nange aayey the Nange he jaayey ge'
And quickly bathed me with cold water.
How I hated cold baths.
Swoosh! Without warning I was lifted in the air and then placed on a rickety bed.
With six relatives holding it afloat.
Barely.
Ah! The Last Journey had begun.
But I still was desperate to know - who won the final?
Grandy Ambika made sure that I knew.
Namibia she shouted out to no one in particular. But I understood.

Typical drawing room.

> See you all soon. The chatter ebbed away. In the midst of all the activities I lay comfortably on the Ice Slab. For some odd reason I didn't feel the cold at all. Lots of activity was happening. People were coming in and going out.

Swoosh! Without warning I was lifted in the air and then placed on a rickety bed. With six relatives holding it afloat.

Barely.

Ah! The Last Journey had begun.

But I still was desperate to know – who won the final?

Grandy Ambika made sure that I knew. Namibia she shouted out to no one in particular. But I understood.

Briefly the procession halted at the exit gate of the building to enable the women folk to howl, sob and pay a tearful farewell.

Soon, I was riding an elevated heavily bedecked truck with Zia band ahead, striking soul foul tunes till Mansi shouted for more peppy numbers.

Zia obliged with 'Zindagi Ek Safar Hai Suhana'. I wanted to get up and do a jig.

Frenetic activity began once I was laid on the wooden Pyre!

Ouch!

Soon I could feel that heat from the Pyre. Wood was burning gloriously around me.

I could see mourners backing away but the Family stood ground bravely ignoring the heat and the smoke. They were murmuring farewell chants:

'Farewell dear Papa for we lived a happy a happy life with you '.

Chirpy stood so lost and forlorn as if in deep thought. Obviously she was in shock. After all I had broken our Solemn Pact – that she would go first.

I shed a tear for leaving Chirpy all alone.

Surrounded by the family I made my way to 'Jannat 'with my Sanchit Karma in tow.

'Ashes to Ashes! Dust to Dust'

Amen.

writetoarbit@rashtradoot.com

#DIABETES

Insulin Doses Could Be More Accurate

The absorption of insulin in the body is controlled by how insulin molecules assemble themselves in clusters.

A large portion of a diabetic's insulin dose is unlikely to work as expected, new research suggests.

The discovery provides a tool for developing better insulin preparations that millions of people around the world depend on.

If you are one of the many millions of type 1 diabetics worldwide, you know that there is a difference in how rapidly and for how long insulin preparations work in the body. For diabetics, these differences are crucial for effective treatment. Getting too little or too much insulin can lead to blood sugar that is either too low or high. Both conditions can be dangerous.

The absorption of insulin in the body is controlled by how insulin molecules assemble themselves in clusters. Whereas

a single molecule provides rapid action in the body, clusters of six molecules-known as hexamers-are long-acting. For decades, it has been assumed that insulin assembles with a certain distribution of molecular clusters of either one, two, or six molecules. Pharmaceuticals have been designed based upon this assumption.

But with the help of highly advanced single molecule microscopy, a team of researchers is the first to demonstrate that this important point has been wrong for years.

"It is now apparent to us that we've gotten things wrong by 200%. There are only half as many single molecules in insulin compared to what we thought. Conversely, there are far more six-molecule clusters than we assumed. These experiments were not on animals but were performed on a microscope slide and one should be careful how to interpret their direct application to humans," says professor Nikos Hatzakis of the chemistry department at the University of Copenhagen.

"However, our results may mean that when we believe to be administering a certain dose, it may mean that insulin behaves in a different way than expected and that even better insulin therapeutics can be developed."

In other words, much of the insulin that diabetics currently put into their bodies may not actually be getting absorbed as expected. While the researchers emphasize that this is not outright dangerous for patients, it does show that there is great potential for the development of more precise medications.

Zooming in On Insulin

"Insulin preparations have only gotten better and better over the years, and a great many diabetics are well regulated. However, the development of insulin preparations has been based on a certain assumption about how the molecules assemble. With the crude standard model, this process was never been appreciated at a detailed level. That's what we can do," says the study's other lead author, ProfessorKnud J. Jensen of the chemistry department.

"This doesn't mean that current insulin medications are bad or that patients have been medicated wrongly. But we now have a basic understanding of how insulin behaves and how much could be available to the body as rapid-acting medication. We now have the right method for providing us with accurate figures. We hope that the industry will use this or a similar tool-both to check current insulin preparations and to develop new ones," adds Hatzakis.

The research results were achieved through a mix of chemistry, machine learning, simulations, and advanced microscopy. The researchers began by directly observing the process in which each insulin molecule joins forces with other molecules to assemble into clusters. This allowed them to see how fast each cluster forms. The researchers looked at about 50,000 clusters.

Knowing the exact distribution of different clusters in a given amount of insulin is fundamental when developing medications that need to have either short- or long-acting effects in the body:

"The clustering of insulin is incredibly important for how preparations work. Because the difference between a rapid- and slow-acting insulin preparation is dependent upon how quickly the molecules assemble in clusters and how quickly they disassemble. Access to highly advanced equipment makes it relatively simple and fast to gain insight into exact concentrations, knowledge that at the same time, is also quite sophisticated," says lead author Freja Bohr, a PhD fellow in Hatzakis's research group.

Better Insulin

In addition to the different distribution of molecular clusters, the observations also show that cluster formation is a much more complex process than once presumed. The clusters can both grow and shrink at far more different intervals than previously supposed.

"Without being able to say exactly how just yet, this should make it possible to expand the number of ways in which preparations are designed. This could lead to an insulin with a different effect profile that reduces the fluctuations in patients' blood sugar-which remains a major challenge," says Bohr.

Jensen believes that the new knowledge will be able to optimize all types of new insulin and make a difference for the more than 40 million children and adults who take insulin on a daily basis. Life as a diabetic is still not without trouble.

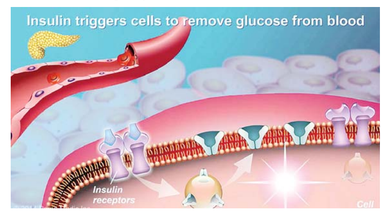

THE WALL

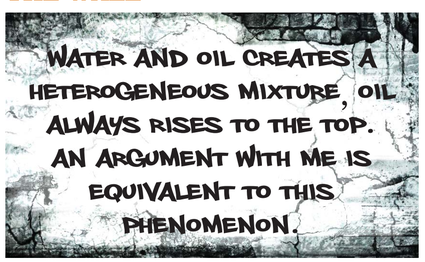

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

अवैध बजरी परिवहन करते चार डंपर जब्त, चालक गिरफ्तार

उन्नडी व पोषाणा गांव में भीनमाल-पोषाणा स्टेट हाईवे पर कार्रवाई की

सायला, (निसं)। सायला थाना क्षेत्र के उन्नडी व पोषाणा गांव में जिला विशेष पुलिस टीम और सायला पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए अवैध बजरी परिवहन करते पाए जाने पर चार डंपर समेत 4 चालकों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस के अनुसार उन्नडी व पोषाणा गांव में भीनमाल-पोषाणा स्टेट हाईवे पर अवैध बजरी परिवहन करते पाए जाने पर चार डंपर एवं एक बिना नंबरी डंपर को जब्त किया है। साथ ही डंपर चालक सोनाराम पुत्र मोटाराम पोटलिया जाट निवासी आदर्श चवा पुलिस थाना बाडमेर, दिनेशपुरी पुत्री सायरपुरी गोस्वामी निवासी सोढावास पुलिस थाना पीपाड, केसर सिंह पुत्र मोहन सिंह भाटी निवासी नानणा पुलिस थाना पीपाड एवं अयुब खां पुत्र हसन खां निवासी राह पुलिस थाना बागोडा को गिरफ्तार किया है। इस दौरान कार्रवाई टीम में डीएसटी प्रभारी लालाराम, सायला पुलिस थाना के हेड कांस्टेबल मोहनलाल समेत पुलिसकर्मी शामिल थे।

सायला थाना पुलिस ने अवैध बजरी परिवहन के आरोपी चालक को गिरफ्तार किया।

पांच वांछित अपराधियों की बढ़ाई ईनाम राशि

फरार चल रहे वांछित अपराधियों पर कसा शिकंजा

धौलपुर, (निसं)। धौलपुर जिले में पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार ने अपराधियों पर नकेल कसना शुरू कर दिया है। उन्होंने साफ कर दिया है कि अपराध करने वालों को जेल का रास्ता देखना ही पड़ेगा। जिलेभर में नकबजनी, धोखाधड़ी, अपहरण, हत्या, हत्या का प्रयास, मारपीट, चोरी, पॉक्सो एवं प्रतिबंधित चंबल बजरी खनन जैसे संगीन मामलों में फरार चल रहे अपराधी जल्द ही पुलिस की गिरफ्त में होंगे। एसपी ने जहां 5 वांछित अपराधियों की ईनाम राशि में बढ़ोतरी की है। वहीं 16 अन्य अपराधियों पर ईनाम घोषित किया है। उन्होंने आमजन से भी अपील करते हुए कहा है कि इन अपराधियों को बंदी कराने के लिए सही सूचना देने वाले को इनकी ईनाम राशि दी जाएगी।

■ अन्य 16 पर किया ईनाम घोषित

एसपी मनोज कुमार ने 5 वांछित अपराधियों अतिराज का पुरा कंचनपुर निवासी मोनू पुत्र मानसिंह गुर्जर पर 2 हजार से 5 हजार रुपये, कपरोला सेवर भरतपुर निवासी साहब सिंह पुत्र गोधन सिंह गुर्जर, सर्वोदय नगर रीको रोड भरतपुर निवासी देवेश पुत्र लाल सिंह चाहर पर 1 हजार से 2 हजार रुपये, मोहन सिंह का अड्डा लालोनी कंचनपुर निवासी हरवेंद्र उर्फ हरेंद्र पुत्र मोहन सिंह गुर्जर पर 500 रुपये से 1 हजार रुपये और नौगजा पुराना शहर धौलपुर निवासी राहुल पुत्र कुमर सिंह उर्फ कुमरसेन बेडिया पर 1 हजार से 2 हजार रुपये ईनाम राशि बढ़ाई है।

इनके अलावा 16 अन्य अपराधियों में अतिराज का पुरा कंचनपुर निवासी पूरन पुत्र भरत सिंह पर 2 हजार रुपये ईनाम राशि घोषित की है। वहीं 1 हजार रुपये केशव व सुरेंद्र पुत्रगण भरत सिंह गुर्जर, अतिराज का पुरा निवासी कृष्ण पुत्र रघुवर गुर्जर, बैसोरा गढ़ी बाजना कंचनपुर निवासी हरवीर सिंह पुत्र श्री लाल गुर्जर, नथुआ का पुरा मोरोली धौलपुर निवासी धीरज पुत्र सुभाष गुर्जर, तिघरा सदर धौलपुर निवासी उदयवीर सिंह पुत्र दीना गुर्जर, सब्जी गली पुराना शहर धौलपुर निवासी भूरा उर्फ अर्पित पुत्र जयप्रकाश उर्फ जज्जो ब्राह्मण, अजीतपुरा गुमट बाड़ी निवासी सिराजुद्दीन उर्फ जमूरा, पुद्दीन उर्फ सलाउद्दीन पुत्रगण चुन्ना, जोशी पाड़ा बाड़ी निवासी कल्ला उर्फ इकबाल पुत्र गफ्फार, बड़ापुरा मोरोली धौलपुर निवासी दिनेश पुत्र मुंशी गुर्जर, खाई दार का पुरा बसई डांग निवासी बलबीर पुत्र लोकमन गुर्जर, नंदा का नगला कुनकुटा बसेड़ी निवासी रामौतार पुत्र करन सिंह गुर्जर एवं निधारा बाड़ी सदर निवासी हंसा उर्फ हंसराम पुत्र मुंशी गुर्जर पर और कसाई पाड़ा बाड़ी निवासी चांद खान पुत्र छन्नू पर 500 रुपये ईनाम घोषित किया है।

कुख्यात अपराधियों पर इनाम घोषित

भरतपुर, (निस)। भरतपुर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक गौरव श्रीवास्तव ने कुख्यात अपराधियों पर 10-10 हजार रूपये का इनाम घोषित किया है। पुलिस महानिरीक्षक श्रीवास्वत ने बताया कि कुख्यात अपराधी अनिल पुत्र नन्द किशोर प्रजापत निवासी मूलथान थाना नगीना जिला नूहॅ हरियाणा, मोनू राणा उर्फ नरेन्द्र पुत्र जयभगवान निवासी पालुबास थाना औद्योगिक क्षेत्र भिवानी हरियाणा, गोगी उर्फ मोनू पुत्र रामफल जाति कुम्हार निवासी बालाजी कॉलोनी भिवानी हरियाणा, कालू उर्फ कृष्ण पुत्र जगदीश जाति जाट निवासी बाबा लदाना थाना सदर कैथल हरियाणा, विकास आर्य पुत्र प्रताप सिंह जाति ब्राह्मण निवासी सफीदन रोड शिव कॉलोनी जिन्द थाना सिविल लाईन्स जिन्द हरियाणा, किशोर पुत्र प्रदीप जाति सैन निवासी घरौंदा थाना घरौंदा जिला करनाल हरियाणा, शाशीकान्त पुत्र ज्ञानीराम जाति ब्राह्मण निवासी मूनक थाना मूनक जिला करनाल हरियाणा एवं श्रीकान्त पुत्र बालकिशन जाति ब्राह्मण निवासी मरोडा थाना नगीना जिला नूहॅ हरियाणा की भरतपुर पुलिस को दर्ज मुकदमों में तलाश है। पुलिस को इनकी सूचना देने वाले को 10-10 हजार रूपये इनाम दिया जायेगा एवं पहचान गोपनीय रखी जायेगी।

अफीम के छह हजार पौधे जब्त

सैंपल की करवाई जांच, डीएसटी एवं राजियासर पुलिस की बड़ी कार्रवाई

सूरतगढ़, (निसं)। सुपर थर्मल पावर प्लांट की आवासीय कॉलोनी में आज अफीम की खेती के अंदेशे में डीएसटी ने राजियासर पुलिस के साथ कार्रवाई करते हुए हजारों की संख्या में पौधे जब्त किये हैं। राजियासर पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार थर्मल कॉलोनी के आर-3/1 आवास के बाहर खाली पड़ी भूमि पर हजारों की संख्या में अफीम के पौधे लगे होने की सूचना डीएसटी द्वारा दी गई।

■ थर्मल कॉलोनी में खेती की सूचना मिली थी

जिस पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने आसपास के लोगों से पूछताछ की। साथ ही सैंपल की जांच करवाई। जिसमें पुष्टि होने पर पुलिस ने करीब छह हजार पौधों को अपने कब्जे में लिया है। जिला स्पेशल टीम को थर्मल कॉलोनी में अफीम की खेती की सूचना मिली थी। जिस पर पुलिस अधीक्षक परिस देशमुख के निर्देशों पर डीएसटी प्रभारी कश्यप सिंह की टीम के सहायक उप निरीक्षक दारासिंह शेखावत के नेतृत्व में टीम ने कॉलोनी में आकर मौका मुआयना कर भौतिक सत्यापन किया। इसके पश्चात रजियासर थानाधिकारी सत्यनारायण गोदारा को सूचना दी गई। जिसके बाद पुलिस ने कार्रवाई करते हुए कॉलोनी स्थित कर्मचारी के आवास के नजदीक लगे इन पौधों को जब्त किया है। फिलहाल मामले में पूछताछ और पड़ताल जारी है।

हादसे में पिता-पुत्र की मौत

बीकानेर, (कासं)। बीछवाल थाना एरिया में देर रात एक सड़क हादसे में पिता-पुत्र की दर्दनाक मौत हो गई। ये दोनों खारा स्थित अपनी एक फैक्ट्री संभालकर वापस लौट रहे थे कि सामने से आ रही पिकअप गाड़ी ने टक्कर मार दी। दोनों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। शव पीबीएम अस्पताल की मोर्चरी में रखा गया है, जहां पोस्टमार्टम होगा।

बीछवाला थाना प्रभारी महेन्द्र दत्त ने बताया कि बीकानेर के सुभाषपुरा एरिया में रहने वाले चिरंजीलाल अग्रवाल (80) और उनके बेटे राजेन्द्र अग्रवाल खारा गए थे। वहां फैक्ट्री का काम देखकर वापस लौट रहे थे। रास्ते बीछवाल थाने से कुछ दूरी पर ही नेशनल हाईवे पर तेज स्पीड से आ रही पिकअप ने टक्कर मार दी। ब्रेजा कार पुत्र राजेन्द्र अग्रवाल चला रहे थे। जबकि पिता चिरंजीलाल पास में ही बैठे थे। टक्कर इतनी जबर्दस्त थी कि कार के आगे का हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। दोनों को बमुश्किल बाहर निकाला गया, लेकिन तब तक दम तोड़ चुके थे। दोनों को पीबीएम अस्पताल के ट्रोमा सेंटर पहुंचाया गया जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। टक्कर के बाद पिकअप गाड़ी भी पलट गई।

तिरुपति कॉलेज ऑफ नर्सिंग के छात्रों ने किया प्रदर्शन

उदयपुर, (कासं)। रजिस्ट्रेशन के आभाव में नौकरी से वंचित तिरुपति कॉलेज ऑफ नर्सिंग के छात्रों ने शुक्रवार को अपनी मांगो को लेकर जमकर धरना प्रदर्शन किया और कॉलेज को बंद करवाया। पुलिस प्रशासन ने मौके पर पहुंच छात्रों को आश्वासन देकर मामला शांत करवाया।

■ रजिस्ट्रेशन के आभाव में नौकरी से वंचित छात्रों ने दिया धरना

कॉलेज के 2017-18 बैच के छात्र उदित पंड्या ने बताया कि उनका रजिस्ट्रेशन नहीं होने से नर्सिंग की डिग्री पूरी होने के बावजूद नौकरी नहीं मिल रही है। जब भी वह कहीं इंटरव्यू देने जाते है तो नौकरी के लिए चयन होने के बावजूद भी नौकरी उनके हाथ से निकल जाती है। जिसको लेकर उन्होंने पूर्व में भी कॉलेज प्रशासन से रजिस्ट्रेशन नंबर उपलब्ध करवाने की बात की। पंड्या ने बताया कि फरवरी माह में भी उन्होंने इन्ही मामलो को लेकर हड़ताल की थी लेकिन कॉलेज प्रशासन द्वारा सात दिन की मोहलत मांगते हुए रजिस्ट्रेशन नंबर देने का आश्वासन दिया गया था लेकिन अभी तक कोई कार्यवाही इसमें नहीं हुई। उन्होंने कहा कि कॉलेज प्रशासन द्वारा दिए गए झूठे आश्वासन देने के चलते शुक्रवार को एक बार फिर हड़ताल करने को मजबूर होना पड़ा। पंड्या ने बताया कि कॉलेज के दो छात्रों का जिसमे से तरुण वैष्णव का सिलेक्शन एम्स भोपाल में हो गया था लेकिन रजिस्ट्रेशन नहीं होने से नौकरी नहीं लगी। अभी तक सिर्फ नर्सिंग के पहले बैच 2016 के छात्रों को ही रजिस्ट्रेशन हो पाया है।

इधर कॉलेज के प्रिंसिपल सुनील जोशी कहना है कि सभी छात्रों को प्रोविजनल रजिस्ट्रेशन नंबर उपलब्ध करवा दिए गए है। यह पूरा मामला कोर्ट में विचाराधीन है। कोर्ट का फैसला आने पर ही कॉलेज द्वारा ओरिजिनल रजिस्ट्रेशन उपलब्ध करवाए जाएंगे। फैसला इसी महीने के अंत में आने वाला है। इसीलिए सभी छात्रों को 15 दिन तक रुकने की सलाह दी गई है।

एम्बुलेंस ट्रक में घुसी, चालक की मौत

सूरतगढ़, (कासं)। नेशनल हाईवे संख्या 62 पर गांव मानकसर के पास श्रीगंगानगर की ओर जा रही 108 एम्बुलेंस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इस हादसे में ड्राइवर की मौत हो गई जबकि नर्सिंग कर्मी घायल हो गया।

घटना देर रात करीब 2 बजे की बताई जा रही है। वहीं हादसे को लेकर शुक्रवार सुबह ब्लॉक के 108 और 104 एम्बुलेंस कर्मियों ने मुआवजे की मांग को लेकर राजकीय चिकित्सालय में सभी 108 एम्बुलेंस को खड़ी कर हड़ताल शुरू कर दी। राजस्थान एम्बुलेंस कर्मचारी एसोसिएशन श्रीगंगानगर के जिला कोषाध्यक्ष मंगल सिंह ने बताया कि सूरतगढ़ उपखंड के गांव ढाबां झालार का निवासी चालक संजय (38) पुत्र कालूराम और नर्सिंग कर्मी शिवदयाल पुत्र रामप्रताप के साथ श्रीगंगानगर से बीकानेर के पीबीएम अस्पताल में एक मरीज को छोड़ने गए थे।

वापसी में रात के समय मानकसर फ्लाईओवर के पास श्रीगंगानगर की तरफ आगे जा रहे ट्रक के अचानक ब्रेक लगा देने से एम्बुलेंस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इसमें चालक संजय की मौत हो गई।

दिन दहाड़े युवक पर फायरिंग, युवक घायल

जमीनी विवाद में लोगों ने फायरिंग की थी

अजमेर, (कासं)। शहर में अवैध हथियारों से फ़ायरिंग के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। अजमेर शहर के रामगंज थाना इलाक़े के चंद्र वरदाई नगर क्षेत्र का है, जहाँ एक ज़मीनी विवाद में कुछ लोगों ने फ़ायरिंग कर एक युवक को ज़ख्मी कर दिया युवक का नाम राजेंद्र है। पुलिस उपाधीक्षक छवि शर्मा के अनुसार राजेंद्र का ज़मीनी विवाद अजमेर के ही कुछ अन्य लोगों के साथ चल रहा था, इस मामले में आज सुबह भी दोनों पक्षों के बीच वार्ता हुई, लेकिन दोपहर 2 कारों में सवार होकर आए 8-10 युवकों ने राजेंद्र पर हमला कर दिया।

फ़िल्मी अंदाज़ में खुलेआम फ़ायरिंग की गई, जिससे क्षेत्र में दहशत फैल गई। वहीं बताया जा रहा है कि पीड़ित राजेंद्र को दो गोलियाँ लगी है जिसे तुरंत अजमेर के जवाहर लाल नेहरू हॉस्पिटल लाया गया, मामले की जानकारी मिलते ही पुलिस के आलाधिकारी भी अस्पताल पहुँचे। इस मामले में पीड़ित पक्ष न आंशका व्यक्त करते हुये आरोप लगाया कि वारदात को सुनील, रमेश और दीपक नाम के आरोपियों ने अंजाम दिया है। इस मामले में पुलिस ने मुक़दमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

ग़ौरतलब है कि इससे पहले भी अवैध हथियारों से फ़ायरिंग के कई मामले सामने आ चुके हैं। पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के अजमेर यात्रा के दौरान खरवा इलाक़े में फ़ायरिंग का मामला सामने आया था और उसके बाद पिछले दिनों किशनगढ़ में भी फ़ायरिंग का एक मामला सामने आया जिसमें एक युवक की मौत हो गई थी। अजमेर में लगातार बढ़ ते फ़ायरिंग के मामलों से अजमेर पुलिस पर भी सवालिया निशान उठ रहे हैं।

मानसिक रूप से परेशान बुजुर्ग ने लगाया फंदा

64 वर्षीय बुजुर्ग खेत पर बेटों के साथ रहता था

अनूपगढ़, (निसं)। पंचायत समिति की ग्राम पंचायत 2 पीजीएम के गांव 5 पीजीएम में आज एक 64 साल के व्यक्ति ने अपने ही घर पर फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक के परिजनों की सूचना पर अनूपगढ़ पुलिस थाने के एसआई हंसराज मौके पर पहुंचे और शव को फंदे से नीचे उतारा। पुलिस ने मौका मुआयना कर शव को अनूपगढ़ के राजकीय चिकित्सालय ले जाया गया और शव का पोस्टमार्टम करवा कर शव परिजनों को सौंप दिया है।

मृतक के परिजनों ने बताया कि मृतक ओम प्रकाश की पिछले कुछ समय से मानसिक स्थिति सही नहीं थी। मृतक के बेटे की ओर से अनूपगढ़ पुलिस थाने में मर्ग दर्ज करवाई गई है। मृतक के बेटे दिलीप कुमार ने अनूपगढ़ पुलिस थाने में मर्ग दर्ज करवाते में लिखवाया है कि वह अनूपगढ़ के प्रेम नगर के वार्ड नंबर 8 में रहता है और उसके पिता ओमप्रकाश गांव 5 पीजीएम में अपने खेत में बनी ढाणी में उसके छोटे भाइयों के साथ रहते थे। दिलीप कुमार ने पुलिस को बताया कि उसके पिता ओमप्रकाश की पिछले कुछ समय से मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी और आज सुबह उसे उसकी पुत्रवधू कांता ने फोन पर सूचना दी कि उसके पिता ओमप्रकाश ने कमरे में फांसी लगा ली है।

दिलीप ने बताया कि सूचना मिलने पर वह मौके पर पहुंचा और देखा कि उसके पिता कमरे की छत पर लोहे के एंगल से लटके हुए हैं। दिलीप ने इसकी सूचना अनूपगढ़ पुलिस थाने में दी। सूचना मिलने पर एसआई हंसराज मौके पर पहुंचे और परिजनों की सहायता से शव को नीचे उतारा। एसआई हंसराज ने बताया कि शव को अनूपगढ़ के राजकीय चिकित्सालय ले जाया गया और शव का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया है। मृतक के बेटे की रिपोर्ट के आधार पर मर्ग दर्ज कर ली गई है।

होटल के कमरे में फंदे से लटका मिला युवक

बीकानेर, (निसं)। रेलवे स्टेशन क्षेत्र में एक युवक ने कमरे में फांसी लगा ली। दो दिन तक उसका शव लटका रहा लेकिन किसी को पता नहीं चला। होटल कर्मचारियों ने शुक्रवार को गेट खटखटाया तो कोई आवाज नहीं आई। बाद में गेट तोड़कर खोला गया तो उसकी लाश पंखे से लटकते हुए मिली। होटल सिमरन में दो दिन पहले एक युवक ने कमरा लिया था। उसने अपना नाम रामरख बताया। वो जैतासर का रहने वाला था। पुलिस ने रजिस्टर में दर्ज एड्रेस पर इसकी सूचना दे दी है, जिसके बाद परिजन बीकानेर आ रहे हैं।

■ स्टाफ को दो दिन बाद पता चला, सुसाइट नोट भी लिखा

शुक्रवार सुबह उसका शव पंखे से उतारकर पीबीएम अस्पताल भेजा गया। जहां उसे मृत घोषित करने के बाद शव मोर्चरी में भेज दिया गया। जहां पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंपा जाएगा। मृतक ने चार लाइन का सुसाइड नोट भी छोड़ा है। जिसमें सुसाइड के लिए किसी को दोषी नहीं ठहराया है और स्वयं ही सुसाइड करना लिखा है। पुलिस ने सुसाइड नोट के बारे में जानकारी नहीं दी है, लेकिन इतना स्पष्ट किया है कि सुसाइड नोट में किसी व्यक्ति पर सुसाइड के लिए उकसाने या फिर परेशान करने का आरोप नहीं लगाया गया है। पुलिस ने मर्ग दर्ज करके छानबीन शुरू कर दी है।

चोरी करने वाले दो गिरफ्तातर

उदयपुर, (कासं)। गोवर्धन विलास थाना पुलिस ने सूने मकान का ताला तोड कर सामान चोरी करने के मामले में दोआरोपियों को गिरफ्तार किया तथा विधी से संघर्षरत एक बाल अपचारी को डिटेन किया। पुलिस ने आरोपियों से चोरी किया माल बरामद किया।

प्रकरण के अनुसार 15 मार्च 2023 को प्रार्थी जसवंत चैहान पुत्र विरा राम निवासी दक्षिण सुन्दरवास थाना प्रतापनगर हाल जोगी तालाब थाना गोवर्धनविलास उदयपुर ने थाना गोवर्धनविलास पर एक प्रकरण इस आशय का दर्ज करवाया की रात में जोगी तालाब स्थित मकान पर अज्ञात चोर रात्रि के समय घर से सीसीटीवी कैमरे, इन्वेटर, बैटरी व अन्य उपकरण चुरा ले गये। उक्त घटना पर प्रकरण दर्ज होने पर गोवर्धन विलास थानाधिकारी संजीव स्वामी के नेतृत्व में गठित दल ने नरेन्द्र उर्फ टोपी पुत्र धर्माजी निवासी जोगी तालाब थाना गोवर्धनविलास व तेजा राम पुत्र राम लाल निवासी जोगी तालाब थाना गोवर्धन विलास को गिरफ्तार कर चोरी किया माल बरामद किया गया।

बस में जहरखुरानी का शिकार हुआ युवक

'बस में साथ बैठे युवक ने कोल्ड ड्रिंक पिलाई थी'

धौलपुर, (निसं)। चौथ का बरवाड़ा सवाई माधोपुर से धौलपुर आ रहा एक व्यक्ति प्राइवेट बस में जहर खुरानी का शिकार हुआ है। जिसे गंभीर हालत में जिला अस्पताल धौलपुर में भर्ती कराया गया। इसे बस में साथ बैठे युवक ने कोल्ड ड्रिंक पिलाई थी।

■ धौलपुर के मनियां में बहन के यहां आ रहा था व्यक्ति

मेल मेडिकल वार्ड में बेहोशी की हालत में भर्ती कराए गए राहुल (50) पुत्र बच्चू सिंह निवासी चौथ का बरवाड़ा सवाई माधोपुर ने बताया कि वह धौलपुर जिले के मनियां में अपनी बहन के घर आ रहा था। सवाई माधोपुर से जयपुर पहुंचने के बाद धौलपुर के लिए प्राइवेट बस में बैठ गया। जहां दौसा के पास उसके पास में बैठे युवक ने उसे कोल्ड ड्रिंक पिला दी। कोल्ड ड्रिंक पीने के बाद ही वह अचेत हो गया। जयपुर से धौलपुर आ रही बस के धौलपुर पहुंचते ही बस के स्टाफ ने अचेत व्यक्ति को स्थानीय पेट्रोल पंप पर उतार दिया।

पेट्रोल पंप पर व्यक्ति के अचेत होने की सूचना मिलने पर निहालगंज थाना पुलिस मौके पर पहुंच गई। जिसने एंबुलेंस की मदद से जिला अस्पताल के मेल मेडिकल वार्ड में भर्ती कराया। घटना को लेकर थाना प्रभारी विजय मीणा ने बताया कि व्यक्ति के पास उसका मोबाइल और पैसे नहीं मिले हैं। मामले की जाँच की जा रही है।

उदयपुर में बारिश हुई

उदयपुर, (कासं)। प्रदेश में पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से बने नए परिसंचरण तंत्र के लिए लेकसिटी में शुक्रवार दोपहर बाद मौसम में एक बार फिर करवट ली है। शाम 4 बजे के करीब शहर के कई हिस्सों में 10 से 12 मिनट मध्यम क्रम की बारिश हुई वहीं बारिश के साथ बादलों के बीच मौसम में सर्द अहसास भी दिखाई दिया। इधर, शहर की फतहसागर झील के किनारे उठती लहरों के साथ हल्की धुंध से मौसम खुशनुमा दिखाई दिया।

लेकसिटी में दोपहर 1.30 बजे अचानक चली हवाओं के साथ मौसम ने करवट ली और हवाओं के साथ ही आसमान में बादल छाए दिखाई दिए। शहर से 40 किमी दूर भटेवर में तेज बारिश के समाचार मिले है वहीं शहर के अंदरूनी हिस्सों जगदीश चौक, गुलाबबाग आदि क्षेत्रों में भी मध्यम क्रम की बारिश हुई जो 10-12 मिनट चली। वहीं शहर के अधिकांश हिस्सों में बूंदाबांदी के ही समाचार मिले है। बादलों के छाए रहने के साथ शाम होते मौसम में सर्द अहसास भी देखा गया। इधर, तापमान में भी कमी आई है।

खिलाड़ी से मारपीट करने वाला गिरफ्तार

उदयपुर, (कासं)। पीड़िता का अपहरण कर उसके साथ मारपीट करने वाले क्रिकेट कोच को पुलिस ने गिरफ्तार किया। प्रकरण के अनुसार पीडिता ने 7 मार्च को हाथीपोल पुलिस थाने में रिपोर्ट दी कि मैं 5 मार्च दोपहर गांधी ग्राउंड, चेटक सर्कल में क्रिकेट अभ्यास कर फ्री होकर अपना मोबाइल देख रही थी। तभी अबरार उर्फ सोनू पुत्र इकबाल आया और मेरा फोन झपट कर मुझे जबरन घसीटते हुए बाहर ले गया।

इस दौरान मेरे साथ मारपीट करते हुए मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझे जबरन स्कूटी पर बैठा फतहसागर की ओर ले गया और वहां पर मेरे फोन का लॉक खुलवा फोन चैक करने लगा और कहने लगा कि यदि तुझे क्रिकेट सीखना है तो मुझसे ही सीखना होगा खबरदार जो किसी और से क्रिकेट सिखा तो इसी फतहसागर में डाल दूंगा। मेरे द्वारा विरोध करने पर उसने वहा भी मेरे साथ मारपीट की तथा धमकाया। मामले में प्रकरण दर्ज होने पर हाथीपोल थानाधिकारी योगेश चौहान ने अबरार हुसैन उर्फ सोनु पुत्र इकबाल को गिरफ्तार किया।

गैस सिलेंडर से लगी आग में घर का सामान जला

घर का सामान जल जाने से बी.पी.एल. परिवार बेसहारा हो गया

टोंक, (निसं)। जिले के टोडारायसिंह उपखंड के माधोगंज गांव में गैस सिलेंडर से भड़की आग में घर का सारा सामान जल जाने से बीपीएल परिवार बेसहारा हो गया।

घटना शुक्रवार सुबह उस वक्त गति हुई जब सोजी राम पांचाल की पत्नी लाली देवी खाना बना रही थी कि अचानक गैस सिलेंडर के रेगुलेटर से आग भभकने लगी, आग अचानक घर में फैल जाने से परिवार के सदस्य बाहर निकल आए लेकिन देखते ही देखते घर में रखे इलेक्ट्रॉनिक सामान, कपडे, खाद्य सामग्री, सिलाई मशीन समेत सभी अन्य सामान नष्ट हो गए।

मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने आग बुझाने का प्रयास शुरू कर नगर पालिका को सूचना दी गई, आग पर काबू किया गया लेकिन इस बीच आग सें घर की छत क्षतिग्रस्त हो गई। घटना से परिवार बेसहारा हो गया, लाली देवी पांचाल ने ग्रामीणों के साथ उपखंड अधिकारी नेहा मिश्रा को ज्ञापन सौंपकर तत्काल सहायता की मांग की। इस मौके पर मौजूद पूर्व डीआर रामचंद्र गुर्जर ने निजी स्तर पर पीड़िता को पांच हजार रुपए की आर्थिक सहायता राशि तुरंत उपलब्ध करा दी गई।

जबकि एसडीएम नेहा मिश्रा ने ग्राम पंचायत गोपालपुरा के राशन डीलर को पीड़ित परिवार हेतु तुरंत खाद्य सामग्री पहुंचाने के निर्देश दिए गए तथा अन्य सरकारी सहायता के लिए नियमानुसार कार्रवाई का आश्वासन दिया गया। इस दौरान पीड़िता के साथ करीब एक दर्जन स्थानीय ग्रामीण भी मौजूद रहे।

युवक को डंडा मारकर गिराया

धौलपुर, (निसं)। आगरा के शाहगंज के पास ट्रेन के दरवाजे पर बैठे धौलपुर निवासी एक युवक को पटरी किनारे खड़े कुछ बदमाशों ने डंडा मार दिया। जिससे युवक ट्रेन से नीचे गिर गया। जिसके बाद बदमाशों ने युवक का मोबाइल छीन लिया। ट्रेन से नीचे गिर कर बेहोश हुए युवक को स्थानीय लोगों की मदद से इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया। युवक के होश में आने पर परिजन धौलपुर से आगरा पहुंचे और युवक को जिला अस्पताल धौलपुर लेकर आए।

घायल युवक मनीष कुमार (22) पुत्र वासुदेव निवासी धर्मपुरा थाना मनियां ने बताया कि वह दिल्ली में एक जूता फैक्ट्री में काम करता है। होली के त्योहार पर छुट्टी में अपने गांव आया हुआ था। गुरुवार दोपहर सवा 3 बजे धौलपुर रेलवे स्टेशन से दिल्ली जाने के लिए ट्रेन में बैठा था। युवक ने बताया कि उसकी ट्रेन छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस जैसे ही आगरा के पास पहुंची तो पटरी किनारे खड़े 3 बदमाशों ने उसके हाथ में डंडा मार दिया। अचानक हुए हमले से वह ट्रेन से नीचे गिर गया।

नौकरी दिलाने के नाम पर 13 लाख रुपए की धोखाधड़ी

आर.ओ. के पद पर लगाने का दिया था झांसा, 2 लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज

हनुमानगढ़, (निसं)। भतीजे और भांजे को आरओ के पद पर नौकरी दिलवाने के नाम पर धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। आरोपियों ने नौकरी दिलाने के नाम पर 13 लाख 50 हजार रुपए ले लिए। इस मामले में पीड़ित ने रावतसर पुलिस थाने में एक महिला सहित 2 लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है।

रावतसर सीओ पूनम चौहान ने बताया कि नरेन्द्र पाल (45) पुत्र कृष्णचन्द्र जाट निवासी वार्ड 7, गांव भैरुसरी ने रिपोर्ट दी कि वह ट्रैक्टर और कार के जरिए दिहाड़ी मजदूरी करता है। करीब डेढ़ महीने पहले उसके पास उसी के गांव के इन्द्रपाल पुत्र शिवप्रताप जाट का फोन आया। इन्द्रपाल ने कहा कि उसे अपनी गाड़ी में उसके जानने वाले कुलदीप और उसकी पत्नी रवीना को किसी काम से मेरठ लेकर जाना है। जिसके बाद वह राजू वर्मा निवासी कुम्हारांवाली ढाणी की गाड़ी लेकर लाया और अपने साथ इन्द्रपाल को उसके घर से साथ लेकर रावतसर पहुंच गया। रावतसर से इन्द्रपाल के जानने वाले कुलदीप और उसकी पत्नी रवीना को भी साथ लिया और रावतसर से गांव चंदौली खास मेरठ उत्तरप्रदेश पहुंच गए। वह दो दिन उनके साथ ही रहा। तब उसने कुलदीप और रवीना को आपस में बात करते सुना कि रवीना के नाम रामनगर उत्तराखंड वाली जमीन 63 करोड़ रुपए में बेचनी है। उन रुपयों का बड़ा सौदा करना है। उसके बाद वे हरिद्वार उत्तराखंड चले गए। उसके बाद वे वापस गांव भैरुसरी आ गए। जिसके बाद से ही कुलदीप और रवीना ने उसके घर आना-जाना शुरू कर दिया।

इस दौरान कुलदीप और रवीना ने उसे बताया कि रवीना के पिता वर्तमान में उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री के ओएसडी हैं और एसीएम द्वितीय के पद पर गोरखपुर में तैनात हैं। साथ ही कहा कि वे अपनी इस जानकारी से उसके भतीजे प्रवीण और भांजे आशीष को विधानसभा उत्तरप्रदेश में आरओ के पद पर अप्रैल महीने में भर्ती निकलने पर नौकरी लगवा देंगे। भतीजे और भांजे को नौकरी लगवाने के नाम पर इन्होंने 20 लाख रुपए की मांग की। बीस लाख रुपए में से सत्तर प्रतिशत रुपयों की अग्रिम किश्त मांगी। शेष 30 प्रतिशत रुपए भतीजे और भांजे के नौकरी जॉइन करने पर देने की बात कही। इस पर वह कुलदीप और रवीना के झांसे में आ गया और इन दोनों को नौकरी के बदले कुल 13 लाख 50 हजार रुपए अलग-अलग समय में अकाउंट में जमा करवा दिए। जिसके बाद कुलदीप ने 13 लाख 50 हजार रुपए का एक चेक भरकर दिया। नरेन्द्र पाल के अनुसार इसी दौरान उसे पता चला कि कुलदीप और रवीना नाम के दो शख्स रावतसर इलाके में भोले-भाले लोगों को नौकरी लगवाने के नाम पर रुपए हड़पने का काम कर रहे हैं। यह सब सुनकर वह अपने गांव के इन्द्रपाल जाट के घर गया तो वहां पर कुलदीप और रविना मिले। उसने इन्हें कहा कि उन लोगों ने उसके भतीजे और भांजे को नौकरी लगवाने का झांसा देकर तेरह लाख पचास हजार रुपए हड़प लिए हैं। उसे उसके रुपए आज ही वापस कर दो तो कुलदीप और रवीना ने कहा कि उनके पास उसके रुपए नहीं हैं। पुलिस ने कुलदीप और रविना के खिलाफ धोखाधड़ी के आरोप में मामला दर्ज कर लिया है।

सुजानगढ़ को जिला नहीं बनाने पर क्षेत्र के लोगों में रोष, सीएम गहलोत व क्षेत्रीय विधायक का पुतला फूंका

जिला नहीं बनने पर विधायक मनोज मेघवाल ने बयान देते हुए कहा कि सुजानगढ जिला बनता तो लाडनूं को उसमें शामिल किया जाता

सुजानगढ़, (निसं)। सुजानगढ़ को जिला नहीं बनाने पर क्षेत्र के लोगों में रोष देखने को मिला। गांधी चौक में जनहित संघर्ष मोर्चा के बैनर तले क्षेत्र के लोगों ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत व क्षेत्रीय विधायक मनोज मेघवाल का पुतला फूंक कर आक्रोश जताया। इस मौके पर जनहित संघर्ष मोर्चा के अध्यक्ष रामकुमार मेघवाल ने कहा कि क्षेत्र की जनता के साथ मुख्यमंत्री गहलोत ने धोखा किया है। साथ ही कहा कि क्षेत्र का नेतृत्व कमजोर होने के कारण सुजानगढ जिला नहीं बन पाया। आरएलपी नेता बाबूलाल कुलदीप ने कहा कि विधायक मनोज मेघवाल का प्रतिनिधित्व मजबूत नहीं है। कुलदीप ने कहा कि उपचुनाव में जनता ने कांग्रेस को भारी मतों से जिताया था।

- **विधायक ने कहा कि लेकिन एनवक्त पर वहां के विधायक भाकर ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर डीडवाना को नया जिला बनाने की अनुशंषा कर लाडनूं को डीडवाना में शामिल करने की मांग कर डाली**

सुजानगढ़ के गांधी चौक में लोगों ने नारेबाजी कर प्रदर्शन किया।

सुजानगढ जिले को लेकर सभी मापदंड पूरे करता है। फिर भी सुजानगढ को जिला बनाया गया, जो क्षेत्र की जनता के छलावा है। रामनायारण रूलाणियां ने कहा कि कांग्रेस को वोट की चोट आगामी चुनावों में क्षेत्र की जनता द्वारा दी जायेगी। बनवारी बिजारणियां ने कडे शब्दों में विधायक व मुख्यमंत्री की निंदा की। इस मौके पर विरेन्द्र सैन, नरेन्द्र गुर्जर, जितेन्द्र भार्गव, नरेन्द्र रणवां, लालनाथ, कमल दाधीच सहित क्षेत्र के अनेकों लोगों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी की।

विधायक ने दिया बयान :- जिला नहीं बनने पर विधायक मनोज मेघवाल ने बयान देते हुए कहा कि सुजानगढ जिला बनता तो लाडनूं को उसमें शामिल किया जाता है। लेकिन एनवक्त पर वहां के विधायक मुकेश भाकर ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर डीडवाना को नया जिला बनाने की अनुशंषा कर लाडनूं को डीडवाना में शामिल करने की मांग कर डाली। जिस कारण सुजानगढ जिला नहीं बन पाया। वहीं विधायक मनोज मेघवाल ने कहा कि सुजानगढ जिले को लेकर सभी मापदंड पूरे करता है। क्षेत्र की मांग पूरी होनी चाहिये।

मालपुरा को जिला नहीं बनाने पर विधायक ने दी आंदोलन की चेतावनी

मालपुरा, (निसं)। शुक्रवार को विधानसभा में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा प्रदेश में नये जिलों की घोषणा में मालपुरा को जिला बनाने को लेकर भाजपा विधायक कन्हैयालाल चौधरी ने सोशल मीडिया पर वीडियो जारी कर आंदोलन की चेतावनी देते हुए मुख्यमंत्री से पुनः विचार किये जाने की मांग की है।

- **भाजपा विधायक कन्हैयालाल चौधरी ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से पुनः विचार किये जाने की मांग की**
- **विधायक कन्हैयालाल चौधरी ने सोशल मीडिया पर वीडियो जारी कर आंदोलन की चेतावनी दी**
- **सोशल मीडिया पर शुरू हुई बहस से लोगों का गुस्सा प्रदेश कांग्रेस सरकार के प्रति देखा गया**

विधायक चौधरी ने कहा कि रियासत काल से बसे व सभी सुविधाओं से सम्पन्न तथा जिला बनने के सभी मापदण्ड पूरे करने वाले मालपुरा को जिला बनाये जाने के लिए मालपुरा की जनता ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखने के साथ-साथ अपनी भावनाओं से अवगत करवाये जाने के बावजूद राजनैतिक द्वेषता पूर्ण व्यवहार करते हुए मालपुरा की अनदेखी कर मालपुरा को दूदू व केकडी में मिलाये जाने की मंशा को जनभावनाओं के विपरीत बताते हुए क्षेत्र की जनता के साथ आंदोलन किये जाने की चेतावनी दी। विधायक चौधरी ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से एक बार फिर से पुर्नविचार करने का आग्रह किया।

मुख्यमंत्री की घोषणा के बाद मालपुरा में सोशल मीडिया पर शुरू हुई बहस से एकाएक लोगों का गुस्सा प्रदेश की कांग्रेस सरकार के प्रति इस कदर देखा गया कि भाजपा व कांग्रेस सहित अन्य राजनैतिक पार्टियों से जुड़े वरिष्ठ नेताओं तथा शहर के लोगों ने यहां तक लिखा कि तीस साल से हार का सामना कर रही कांग्रेस पार्टी को मालपुरा में मुख्यमंत्री जीत का सेहरा पहनने के विरोध में है। मुख्यमंत्री भी यही चाहते कि मालपुरा से कांग्रेस पराजित होती रहे। मुख्यमंत्री ने दबाव में आकर केकडी व दूदू को जिला बनने के मापदण्ड पूरे नहीं करने के बावजूद जिला बनाकर मालपुरा का हक छीना है।

सांभर को जिला बनाने की सात दशक से चली आ रही मांग अधुरी रही

सांभर अब कभी जिला घोषित नहीं हो सकता, क्योंकि सांभर और नवीन जिला घोषित दूदू की दूरी महज करीब 30 किलोमीटर है

सांभरझील, (निसं)। प्रदेश के मुखिया अशोक गहलोत की ओर से नए जिलों की कि गई घोषणा के तहत दूदू को नए जिले की सौगात देने के बाद अब सांभर को जिला बनाने की 7 दशकों से चली आ रही मांग का आज दुखद पटाक्षेप हो गया है। यानी अब सांभर कभी जिला घोषित नहीं हो सकता क्योंकि सांभर और नवीन जिला घोषित दूदू की दूरी यहां से महज करीब 30 किलोमीटर दूरी पर ही है। सांभर को जिला घोषित करवाने के लिए वर्ष 1952 से जितने भी आंदोलन और धरना प्रदर्शन हुए उन सब का परिणाम एक झटके में शून्य हो गया। हकीकत तो यह है कि सांभर को जिला घोषित करवाने के लिए बीते वर्षों में ऐसा कोई दमदार विधायक अथवा प्रतिपक्ष नेता हुआ ही नहीं जो सांभर के भले की सोचता हो।

जितने भी विधायक फुलेरा विधानसभा से जीत कर के आए वे तथाकथित इने गिने राजनेताओं के सुझाव पर इर्द-गिर्द ही पूरे 5 साल तक अपनी राजनीति चलाते रहे और आमजन इस रणनीति को आज तक नहीं समझ पाया। खास बात यह रही कि विपक्ष के नेता और विधायक दोनों ही सांभर को जिला बनाने के लिए ऐसा कोई प्रमाण और उदाहरण पेश नहीं कर पाए जिससे ऐसा परिलक्षित होता हो की नवीन जिला घोषित करने की मांग के दौरान सांभर का पक्ष प्रमुखता से उभर कर सामने आया हो। इसका सबसे बड़ा एक और कारण यह भी रहा है कि सोशल मीडिया पर राजनीतिक रूप से एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश ने भी सांभर की एकजुटता में कहीं न कहीं टकराव पैदा किया है। दोनों राजनीतिक दलों के स्थानीय नेताओं में आपसी विचार धारा का अभाव तो शुरू से ही रहा है।

- **सांभर को जिला घोषित करवाने के लिए वर्ष 1952 से जितने भी आंदोलन और धरना प्रदर्शन हुए उन सब का परिणाम एक झटके में शून्य हो गया**

यह बताना जरूरी है कि अभिभाषक संघ सांभर लेक की ओर से अपर जिला कलेक्टर कार्यालय खुलवाने की मांग करीब 40 सालों से लगातार की जा रही है लेकिन इस मांग को भी सरकार ने कभी पूरा करना मुनासिब नहीं समझा और ना ही यहां के सत्तापक्ष और विपक्ष के लोगों ने कभी इस मामले में खुलकर उनका साथ दिया। सांभर को जिला घोषित नहीं करने से हालांकि सांभर सहित क्षेत्र की हजारों लोगों में मायूसी व्याप्त है। इस मामले में विधायक निर्मल कुमावत ने कहा कि कांग्रेस राज में दूदू को जिले की घोषणा कर फुलेरा विधानसभा क्षेत्र के साथ सौतेला व्यवहार किया गया है। दूदू को जिला बनाना ही दुर्भाग्यपूर्ण है। जबकि फुलेरा विधानसभा क्षेत्र में सभी नगर पालिकाओं में कांग्रेस के चेयरमैन, कांग्रेस के प्रधान है इसके बावजूद सांभर के साथ भेदभाव हुआ है।

बीकानेर में कोरोना ने एक बार फिर दस्तक दी

यूरोलॉजी व टी.बी. हॉस्पिटल में भर्ती दो मरीज पॉजिटिव

बीकानेर, (निसं)। कोरोना ने एक बार फिर दस्तक दे दी है। इस साल मार्च के महीने में पांच दिन में पांच केस रिपोर्ट हो चुके हैं। इनमें से एक को पीबीएम हॉस्पिटल के डी वार्ड आईसीयू में भर्ती किया गया है। पीबीएम हॉस्पिटल के यूरोलॉजी विभाग में भादरा से आए एक रोगी को भर्ती किया गया था। उनके गुर्दे में गांठ का ऑपरेशन होना है। जांच में कोरोना पॉजिटिव आने पर उन्हें घर भेज दिया गया। मरीज की स्थित गंभीर बताई जा रही है। इसी प्रकार टीबी हॉस्पिटल में भर्ती एक मरीज कोरोना पॉजिटिव आ गया। उसे गुरुवार को डी वार्ड आईसीयू में भर्ती कर लिया गया।

डॉक्टरों का कहना है कि मरीज खतरे से बाहर है। इसी प्रकार एक मरीज नापासर और दो देशनोक के कोरोना पॉजिटिव आए हैं। देशनोक में दादी और उनके तीन साल के पोते के कोरोना हुआ है। तीनों को घर पर ही आइसोलेट किया गया है। इस साल में मार्च में पांच दिन में पांच केस कोरोना पॉजिटिव आ गए हैं। लेकिन पीबीएम हॉस्पिटल में फिलहाल कोरोना से निपटने की तैयारी नहीं है। क्योंकि कोरोना अलविदा मानते हुए एमसीएच कोविड हॉस्पिटल बंद किया जा चुका है। सरकार और दानदाताओं की ओर से दिए गए करोड़ों के उपकरण धूल फांक रहे हैं। पीबीएम प्रशासन ने एकबारगी डी वार्ड को कोरोना रोगियों के लिए सेपरेट कर दिया है। डी वार्ड आईसीयू हाल ही में तैयार किया गया था। इसमें इंफ्लूएंजा के गंभीर रोगियों को रखा जा रहा था। अब कोरोना के रोगियों को रखा जाएगा।

कोरोना का पता लगाने के लिए सैंपलिंग और बचाव के लिए वैक्सीनेशन दोनों ही बंद हैं। दिसंबर के बाद वैक्सीन ही नहीं आई। अस्पतालों के सर्दी, जुकाम, बुखार, गंभीर बीमार या ऑपरेशन वाले मरीजों की ही कोरोना की जांच हो रही है। पॉजिटिव केस इन्हीं में से आ रहे हैं।

डॉ. पीके सैनी, अधीक्षक, पीबीएम हॉस्पिटल का कहना है कि कोरोना के दो केस पॉजिटिव रिपोर्ट हुए हैं। एक को भर्ती कर लिया गया है। कोरोना मरीजों के लिए डी वार्ड सेपरेट कर दिया गया है। रेमडेसिविर भी मंगवाए जाएंगे। हालांकि अब यह एक वायरल की तरह ही है।

सड़क हादसे में दो जनों की मौत

टोंक, (निसं)। मेहंदवास थाना क्षेत्र के निर्बाना गांव के पास गुरुवार रात सड़क हादसे में बाइक सवार दो जनों की मौत हो गई। हादसा निमोला व निर्बाना गांव के बीच गुरुवार रात 9 बजे हुआ। मेहंदवास थाना प्रभारी देवेन्द्रसिंह ने बताया कि मृतक निर्बाना निवासी रामलाल बैरवा पुत्र मांगीलाल व नरसी मीणा पुत्र परशराम है। दोनों निमोला कट से खेत पर जा रहे थे, इसी बीच सामने से जा रहे वाहन ने टक्कर मार दी। सूचना पर पहुंची एम्बूलेंस ने घायलों को सआदत अस्पताल पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। मृतक रामलाल व नरसी दोनों मेहनत मजूदरी कर घर का खर्चा चलाते थे।

रसद विभाग की टीम पर हमला, डी.एस.ओ. गंभीर घायल

अजमेर, (कासं)। जिला रसद विभाग द्वारा चलाए जा रहे जांच अभियान के तहत शुक्रवार को मांगलियावास थाना क्षेत्र के केसरपुरा हाइवे पर रसद विभाग की टीम डीएसओ विनय कुमार के नेतृत्व में होटल जयपुर गोल्डन पर अवैध बायोगैस टैंकर की सूचना मिलने पर कार्यवाही करने पहुंची, तभी अज्ञात बदमाशों ने हमला बोल दिया, जिसमें डीएसओ गंभीर रूपसे घायल हो गए। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने डीएसओ को अस्पताल पहुंचाया। मामले पुलिस ने पांच को पकड़ा है।

मांगलियावास थाना क्षेत्र में शुक्रवार अल सुबह जब रसद विभाग की टीम से बदमाशों ने मारपीट की। जब जिला रसद अधिकारी विनय कुमार के नेतृत्व में टीम मांगलियावास थाना क्षेत्र के केसरपुरा हाईवे स्थित होटल जयपुर गोल्डन पर अवैध बायोगैस टैंकर की सूचना पर मिलने पर कार्रवाई करने पहुंचे थे। जब टीम ट्रक के पास खड़े लोगों से पूछताछ कर रही थी, इसी दौरान वहां मौजूद कुछ बदमाशों ने जिला रसद अधिकारी सहित उनकी टीम पर जानलेवा हमला कर दिया।

हमले में डीएसओ विनय कुमार गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना मिलते ही मौके पर मांगलियावास थाना प्रभारी सुनील, एएसआई भगवान सिंह टीम के साथ पहुंचे। मांगलियावास थाना प्रभारी सुनील ने बताया कि रसद विभाग के अधिकारी योगेश मिश्रा की रिपोर्ट पर पुलिस ने मारपीट, लूट और राजकार्य में बाधा का मुकदमा दर्ज किया है। जिला रसद विभाग की टीम पर हुए जानलेवा हमले व मारपीट के मामले में एसपी चूनाराम जाट के दिशा निर्देशों पर टीमों का गठन किया है।

तेज हवाओं के साथ बारिश व ओलावृष्टि हुई, फसलों में हुआ नुकसान

जौ, चना, गेंहू और सरसों, सब्जियों सहित अन्य फसलें प्रभावित होने से किसानों की चिंता बढ़ी

विराटनगर विधानसभा क्षेत्र में कई गांवों में ओले गिरे।

पावटा, (निसं)। विराटनगर विधानसभा क्षेत्र में गुरुवार को मौसम का मिजाज बदल गया। तेज हवाओं के साथ सुबह से ही बादलों व धूप की आवाजाही का सिलसिला चला। शाम को तेज बरसात के दौरान ओलावृष्टि भी हुई, इससे फसलों को नुकसान हुआ है।

वहीं पावटा प्रधान प्रतिनिधि जगन चौधरी, किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष कैलाश ताखर, हरी प्रसाद बल्लीवाल, महेंद्र शर्मा, पंचायत समिति सदस्य प्रतिनिधि मुखराम धनकड़ सहित जनप्रतिनिधियों ने बताया कि जौ, चना, गेंहू और सरसों, सब्जियों सहित अन्य फसलें प्रभावित होने से किसानों की चिंता बढ़ गई है।

- **विराटनगर विधानसभा क्षेत्र के कई गांवों में तेज बारिश व ओलावृष्टि से किसानों को काफी नुकसान हुआ**

विराटनगर विधानसभा क्षेत्र के कई गांवों में तेज बारिश व ओलावृष्टि से किसानों को काफी नुकसान हुआ है। किसान की फसल पककर तैयार थी कटाई पर थी। बारिश के साथ ओलावृष्टि देख किसानों के माथे पर चिंता की लकीरें झलकने लगीं। किसानों के अनुसार फसलों सहित बागानी व साग सब्जी की फसलें बारिश के साथ हुई ओलावृष्टि से प्रभावित हुई हैं। बारिश, ओलावृष्टि और ठंडी हवाएं चलने से मौसम में गलन बढ़ गई. तापमान में गिरावट दर्ज की गई।

मारवाड़ में बदला मौसम

जोधपुर, (कासं)। मारवाड़ में शुक्रवार को मौसम बदल गया। कई स्थानों पर आंधी और बारिश भी हुई। जोधपुर संभाग में सुबह से मौसम बदला नजर आया। दोपहर में अचानक आई आंधी ने सब कुछ अस्त-व्यस्त कर डाला। तेज आंधी से कई जगहों पर पेड़ पौधे उखड़ गए। कुछेक स्थानों पर बंबूदाबांदी भी हुई। बूंदाबांदी होने से मौसम ठंडा हो गया और वातावरण में ठंडक घुल गई। आसमां में बादल छाने से मौसम खुशनुमा बना रहा। धूप छांव की स्थिति दिन भर बनी रही।

मौसम विभाग ने आगामी 19 मार्च तक प्रदेश में आंधी, बारिश और ओलावृष्टि की चेतावनी दी थी। मारवाड़ में हालांकि दो दिनों से आसमां पर बादल छाए हुए है। शुक्रवार की दोपहर में अचानक से मौसम तेजी से बदला और आंधी चली। आंधी से एक बारगी राहगीरों को भी भारी परेशानी उठानी पड़ गई। आंधी चलने से कई स्थानों पर पेड़ पौधे उखड़ कर टूट गए और टिनटपर भी उड़ गए। शहर के महामंदिर इलाके पावटा, बीजेएस में बूंदाबांदी की जानकारी मिली। फिलहाल आसमां में बादलों के छाने से मौसम खुशनुमा होने के साथ ठंडी बयार चल रही है। धूप छांव भी चल रही है।

श्रीगंगानगर व सूरतगढ़ में ओले गिरने से ठंडक बढ़ी

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिला मुख्यालय पर देर रात अंधड़ और बारिश के बाद शुक्रवार सुबह बूंदाबांदी हुई। इससे मौसम में ठंडक बढ़ गई। जिले के सूरतगढ़ इलाके के कालूसर और एटा में देर रात ओले गिरने से सर्दी में तेजी आ गई। इन दिनों मैक्सिमम तापमान 35 के पार हो जाने से गर्मी असर दिखाने लगी थी, दिन में पंखों की जरूरत महसूस होने लगी थी वहीं शाम के समय चलने वाली ठंडी हवा भी सुहाने लगी थी, लेकिन गुरुवार देर रात अचानक मौसम में आए बदलाव से लोगों को कंबल और चद्दरें ओढ़ने पड़े। वहीं अल सुबह बूंदाबांदी ने सर्दी बढ़ा दी।

इलाके में वेस्टर्न डिस्टर्बेंस असर दिखा रहा है। इसी से देर रात कालूसर और ऐटा में ओले गिरे। इससे सर्दी का असर तेज हो गया। वेदर एक्सपर्ट बताते हैं कि मौसम में इस बदलाव का असर अगले कुछ दिन बना रहेगा। शुक्रवार को मौसम में बदलाव का यह असर नजर भी आया। इलाके में अगले चौबीस घंटे में मेघ गर्जन के साथ तेज हवा चलेगी। एक्सपर्ट बताते हैं कि शुक्रवार सुबह का तापमान 19 डिग्री सेल्सियस के आसपास बना हुआ है।

बीकानेर संवाददाता के अनुसार:- रुक-रुक कर हो रही रिमझिम बारिश ने मौसम सुहाना कर दिया है। तापमान में गिरावट आई है और शुक्रवार को दिनभर ऐसा ही माहौल रहने की उम्मीद की जा रही है। पिछले एक सप्ताह में बीकानेर में दूसरी बार हल्की बारिश हुई है। जबकि मौसम विभाग मेघगर्जन के साथ बारिश की चेतावनी दे रहा है।

मौसम विभाग ने शुक्रवार सुबह ही जयपुर, जयपुर शहर, दौसा, अलवर, भरतपुर, सीकर, चूरू, नागौर, जैसलमेर और बीकानेर में कहीं कहीं मेघ गर्जन के साथ बूंदाबांदी और हल्की बारिश की चेतावनी दी थी। सुबह नौ बजे दी गई इस चेतावनी से पहले ही बीकानेर में बूंदाबांदी शुरू हो चुकी थी। सुबह छह बजे से बीकानेर के कई क्षेत्रों में हल्की बारिश हई। हालांकि कहीं से भी तेज बारिश की सूचना नहीं है। शहरी क्षेत्र में सड़कों को भिगाने तक की बारिश हुई है। गांवों में भी तेज बारिश नहीं हुई है। बीकानेर के अलावा श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ और चूरू में भी बादल छाए हुए हैं। इस मौसम के बाद बीकानेर में हवाओं में ठंडक बढ़ी है। सर्दी का अहसास होने लगा है।

मौसम बदलने से किसान मायूस

निवाई, (निसं)। शुक्रवार की शाम अचानक मौसम बदल गया और आकाश में बादल छा गए। मौसम बदलने के साथ ही तेज ठण्डी हवाएं चलने लगी जिससे लोगों को ठण्ड का अहसास हुआ। मौसम विभाग की भविष्यवाणी के अनुरूप तीन दिन से मौसम में परिवर्तन हो रहा है। शुक्रवार की सुबह आकाश में काली घटाएं छा गई और बूंदाबांदी हुई। बूंदाबांदी होने से मौसम ठण्डा हो गया। दिन में आकाश साफ हो गया और धूप खिली। शम को 5 बजे बाद फिर मौसम पलट गया और बादलों ने पूरे आकाश को अपने आगोश में ले लिया। बादलों के छा जाने से अंधेरा हो गया और हल्की बूंदाबांदी भी हुई। मौसम के बदले जाने व बरसात होने की संभवना के चलते किसानों के चेहरे पर मायूसी छा गई। किसान कटी हुई फसलों को समेटते हुए दिखाई दिए।

सांभर संवाददाता के अनुसार:- आज दोपहर से तेज हवा और अंधड़ चलने के साथ आसमान में काली घटाओं के साथ बादल छाए रहने से मौसम बदल गया। जहां शुरुआत में हल्की और कुछ ही देर बाद अचानक झमाझम बारिश का दौर शुरू हो गया। शाम को आसमान में बादल छा गए और अचानक तेज गति से हवा का दौर चलने लगा।

संक्षिप्त

फरार स्थाई वारंटी गिरफ्तार

मालपुरा, (निसं)। टोडारायसिंह थाना पुलिस ने तीन साल से फरार चल रहे स्थाई वारंटी रामदयाल पुत्र प्रभुलाल मीणा निवासी मोरमाचाह थाना अटरू जिला बांरा को गिरफतार किया गया। वही थाना पुलिस टीम ने अवैध बजरी खनन व परिवहन पर कार्यवाही करते हुए बावडी से पन्द्राहेडा मार्ग पर अवैध बजरी से भरी ट्रेक्टर-ट्रोली जप्त कर चालक दिलखुश सैनी पुत्र छोटू सैनी निवासी सोहेला थाना टोडारायसिंह को गिरफतार किया गया।

ब्राह्मण पंचायत हेतु जनसंपर्क किया

श्रीमाधोपुर, (निसं)। ग्राम मूंडरू के वरिष्ठ विप्र जनों ने शुक्रवार को ग्राम के सभी विप्रजनों के घर घर पहुंच कर 19 मार्च रविवार को विद्याधर नगर जयपुर में होने वाली ब्राह्मण महापंचायत में अधिकाधिक लोगों से पहुंचने का आग्रह करते हुए निमंत्रण दिया। तहसील अध्यक्ष डॉ विजय जोशी ने बताया कि विप्र परिवारों से संपर्क करने वालों में वैद्य नाथू लाल पटेल ,कैलाश काका, राम प्रकाश शर्मा, विनोद पारीक आदि शामिल थे।

कादरी का सालाना उर्स आज

मनोहरपुर, (निसं)। सीकर मोहल्ला नारवान स्थित सूफी बिस्मिल चौक खलील शाह की दरगाह के पास शनिवार को हजरत ख्वाजा हाजी सूफी अब्दुल मजीद बिस्मिल कादरी का सालाना 22 वां उर्स मुबारक बड़ी अकीदत और धूमधाम के साथ मनाया जाएगा। दरगाह के सज्जादा नशीन हजरत सूफी मोइनुद्दीन जिलानी के अनुसार सुबह 9 बजे कुरान खानी और दोपहर 2 बजे झंडे की रस्म और बाद नमाज असर कव्वाली के साथ दरगाह मजार शरीफ पर चादर पेश की जाएगी।

रक्तदान शिविर 19 मार्च को

राजगढ़, (निसं)। किरण मोतीलाल बोहरा की स्मृति में भारत विकास परिषद राजगढ की ओर से विशाल रक्तदान शिविर खंडेलवाल धर्मशाला में 19 मार्च रविवार को प्रात: 9 बजे आयोजित होगा। भारत विकास परिषद के अध्यक्ष रामरतन तांबी एवं आयोजन से जुडे गिर्राज शर्मा ने बताया कि इस आयोजन को लेकर सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई है।

आखिरकार खत्म हुआ कोटपूतली का 75 वर्ष पुराना जिला बनने का इंतजार

गहलोत सरकार के अन्तिम बजट में कोटपूतली को सबसे बड़ी सौगात मिली

- क्षेत्रीय विधायक व गृह राज्यमंत्री राजेन्द्र सिंह यादव के प्रयास लाये रंग
- सर्वप्रथम यहां के प्रथम विधायक बाबू हजारी लाल जोशी ने पहली विधानसभा में कोटपूतली को जिला बनाने की मांग की थी

कोटपूतली, (निसं)। कोटपूतली को जिला बनाने का 75 वर्षों से चला आ रहा इन्तजार शुक्रवार देर शाम उस वक्त खत्म हुआ जब प्रदेश के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 19 नये जिले बनाने की घोषणा की।

जैसे ही घोषणा हुई उसके पश्चात सम्पूर्ण कोटपूतली क्षेत्र में मानो दीपावली का जश्न मन रहा हो ऐसा माहौल देखने को मिला। जहां हर गली मौहल्ले तिराहे और चौराहों पर शहरवासी मिठाईयां बांट कर व पटाखे छोड कर खुशियां मनाते नजर आये। इसी दौरान स्थानीय विधायक व गृहराज्यमंत्री राजेन्द्र सिंह यादव व प्रदेश के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के भी शहर में जिन्दाबाद के नारे लगे। आपकों बता दें कि कोटपूतली को जिला बनाने की मांग, जो आजादी के बाद पिछले 75 वर्षों से लगातार चली आ रही थी। लेकिन इस बार यहां से कांग्रेस टिकिट पर लगातार दूसरी बार चुनाव जीतकर गहलोत सरकार में मंत्री बने राजेन्द्र सिंह यादव के सार्थक प्रयास रंग लाये एवं कोटपूतली को जिला बनाये जाने की मांग अन्तत: पुरी हो गई।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने शुक्रवार को राजस्थान विधानसभा में राज्य सरकार के कार्यकाल के 5 वें व अन्तिम बजट पारित होने पर वित्त एवं विनियोग विधेयक पर चर्चा के दौरान कोटपूतली को जिला घोषित किया। मुख्यमंत्री गहलोत द्वारा प्रदेश में कोटपूतली समेत 19 नये जिले बनाये गये है।

इधर बड़ी संख्या में कार्यकर्ता राजमार्ग स्थित कांग्रेस कार्यालय पर एकत्रित हो गये। जहां गृह राज्यमंत्री राजेन्द्र सिंह यादव के प्रतिनिधि व पीसीसी मेम्बर मधुर यादव को मिठाई खिलाकर जिले का जश्न मनाया। इसके अलावा यहां के नगर परिषद भवन पर सभापति प्रतिनिधि दुर्गा प्रसाद सैनी के नेतृत्व में पार्षदों द्वारा जमकर आतिशबाजी करते हुए मिठाईयां बांटी गई। इसी प्रकार कस्बे में आजाद चौक, पूरानी नगर पालिका तिराहा समेत जगह-जगह आतिशबाजी कर मिठाईयों का वितरण भी किया गया। ग्राम पनियाला में सरपंच लक्ष्मण रावत के नेतृत्व में मिठाई बांटकर आतिशबाजी की गई।

जयपुर ग्रामीण के कोटपूतली व बहरोड़ को मिलाकर नया जिला बनाया गया है। जिसका मुख्यालय कोटपूतली के पनियाला में होगा। इस प्रकार नये जिला मुख्यालय की कोटपूतली, बहरोड़ व बानसूर कस्बे से लगभग समान दूरी होगी। नया जिला बनने से क्षेत्र का आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक विकास भी तेजी से होगा।

लगातार जारी थे प्रयास :- कोटपूतली को जिला बनवाने के लिए क्षेत्रीय विधायक व गृह राज्यमंत्री राजेन्द्र सिंह यादव द्वारा निरन्तर प्रयास किये जा रहे थे। वर्ष 2018 के विधानसभा चुनाव में भी उन्होंने अपने चुनाव घोषणा पत्र में कोटपूतली को जिला बनवाने का वादा किया था। यही नहीं करीब 6 माह पूर्व कोटपूतली को जिला ना बनाने पर पार्टी व पद से इस्तीफा देने की चेतावनी भी दी थी। अब यादव के सार्थक राजनैतिक प्रयास रंग लेकर आये है। जिससे उनका राजनैतिक कद कोटपूतली में काफी बढ़ गया है। यादव कांग्रेस के कद्दावर नेता व गहलोत सरकार के बेहद ताकतवर मंत्री है।

आजादी के बाद से हो रही थी मांग: उल्लेखनीय है कि कोटपूतली को जिला बनाये जाने की मांग देश की आजादी के बाद राजस्थान के गठन के साथ ही होने लगी थी। सर्वप्रथम यहां के प्रथम विधायक बाबू हजारी लाल जोशी ने प्रथम विधानसभा में कोटपूतली को जिला बनाने की मांग की थी। इसके बाद से ही निरन्तर राजनैतिक रूप से मांग की जा रही थी। पिछले 75 वर्षों में अलग-अलग संगठनों के माध्यम से लगातार धरना प्रदर्शन व ज्ञापन का दौर भी जारी रहा। यहां से जीतने वाले लगभग हर विधायक ने अपने-अपने स्तर पर कोटपूतली को जिला बनाने के सार्थक प्रयास करें। इनमें विशेष रूप से प्रथम विधायक पं. हजारी लाल जोशी के अलावा विकास पुरूष स्व. मुक्तिलाल मोदी, स्व. रामकरण सिंह गुर्जर, स्व. सुरेश शर्मा, रामचन्द्र रावत, डॉ. आर.एस.गौड़, सुभाष चंद शर्मा व गहलोत सरकार में संसदीय सचिव रहे रामस्वरूप कसाना का योगदान भी अपने-अपने समय पर उल्लेखनीय रहा। जिन्होंने राजस्थान विधानसभा में लगातार इस मांग को जीवंत रखा।

गैर राजनैतिक रूप से बात की जाये तो यहां के ग्राम बनेठी के मूल निवासी व भाजपा के कद्दावर नेता एड. योगेन्द्र सिंह तंवर द्वारा भी राजस्थान हाईकोर्ट में इस बाबत याचिका दायर की गई थी। जिस पर हाईकोर्ट ने नये जिलो के गठन में कोटपूतली को प्राथमिकता देने के निर्देश राज्य सरकार को दिये थे। इसके अलावा सर्वदलीय जिला निर्माण संघर्ष समिति के स्व. वैद्य बालाबक्श शास्त्री ने भी कई बार जिले की मांग को लेकर धरने प्रदर्शन किये। जिला निर्माण एवं समग्र विकास समिति के संस्थापक शिक्षाविद् हीरालाल भूषण व अध्यक्ष हंसराज पटेल ने भी कई बार जिले की मांग को लेकर धरना प्रदर्शन व ज्ञापन दिये। वहीं भाजपा नेता मुकेश गोयल द्वारा भी कोटपूतली के विभिन्न गाँवों में पोस्ट कार्ड अभियान चलाया गया।

निम्न तहसील होगी शामिल : नये जिले में कोटपूतली के अलावा जयपुर की पावटा व विराटनगर, अलवर जिले की नारायणपुर, बानसूर, बहरोड़, नीमराणा व मुण्डावर तहसीले शामिल होगी। नये जिले की कुल आबादी 17.79 लाख जबकि क्षेत्रफल 3445 वर्ग किमी होगा। नये जिला मुख्यालय के लिए ग्राम कालुहेड़ा में मिनी सचिवालय व पुलिस लाईन निर्माण हेतु 180 बीघा जमीन का आंवटन हो चुका है।

110 लोगों को पट्टे दिए

निवाई, (निसं)। स्थानीय नगरपालिका में शुक्रवार को पट्टा वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

जिसमें नगरपालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी एवं अधिशाषी अधिकारी महिमा डांगी द्वारा 110 लोगों को पट्टे वितरित किए गए। नगरपालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी ने कहा कि नगरपालिका शहर के विकास के लिए कटिबद्ध है। उन्होंने कहा कि नगरपालिका द्वारा शहर के प्रत्येक व्यक्ति को मालिकाना हक दिलवाने के लिए पट्टे दिए जा रहे है। नगरपालिका के सभी वार्डो के लोग अधिक से अधिक पट्टे बनवाएं। अधिशाषी अधिकारी महिमा डांगी ने बताया कि शुक्रवार को नगरपालिका द्वारा 110 पटटे जारी करके लोगों को वितरित करके लांभंवित किया है।

रास्ते में भरे पानी से राहगीर परेशान

चाकसू, (निसं)। घरों एवं बारिश के पानी की निकासी के लिए नालियां नहीं बनाए जाने के कारण गांवों के रास्ते कीचड़ में तब्दील हो गए हैं। जिससे ग्रामीणों को निकलने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

पालिका क्षेत्र के शील की डूंगरी(शीतला माता) वार्ड नंबर 34 इलाके में बनी सीसी सड़क पर पानी भरने से ग्रामीण नहीं निकल पा रहे हैं। गांव का प्रमुख रास्ता होने के कारण यह रास्ता शीतला माता के दर्शन के लिए भी जाता है वहीं घरों में जाने के लिए भी लोगों को कीचड़ भरे पानी में होकर ही जाना पड़ता है। टोंक रोड मुख्य मार्ग से अंदर जाने वाले इस उपरोक्त रास्ते पर नगर पालिका प्रशासन ने सीसी सड़क तो बनाई है, लेकिन पानी निकासी का इंतजाम नहीं किया, जिस कारण रास्ता अवरुद्ध हो जाता है। सड़क पर 2 फीट के करीब पानी भरा हुआ है, जिस वजह से लोगों परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। यहां से कुछ ही दूरी पर शीतला माता का मंदिर स्थित है जहां रोजना श्रद्धालु दर्शन के लिए जाते हैं। शुक्रवार सोमवार को बड़ी संख्या में लोग यहां पहुंचते हैं। जिस कारण लोग शीतला माता मंदिर पर दर्शन करने लंबे दूसरे रास्ते से होकर गुजरना पड़ता है इसके अलावा खेतों में मकान बनाकर रहने वाले लोग भी इसी रास्ते से जाते हैं लेकिन रास्ता खराब होने के कारण उन लोगों का भी निकला मुश्किल हो गया है, सबसे ज्यादा परेशानी स्कूल जाने वाले छोटे बच्चों को होती है।

वार्ड 34 में बनी सीसी सड़क पर पानी भरने से ग्रामीण निकल नहीं पा रहे हैं।

- घरों एवं बारिश के पानी की निकासी के लिए नालियां नहीं बनाने से हो रही परेशानी

बदमाशों की फायरिंग से गांव में दहशत फैली

दौसा, (निसं)। मंडावरी थाना क्षेत्र के महारिया गांव में कार एवं तीन मोटरसाइकिल पर सवार होकर आए बदमाशों द्वारा की गई बंदूक द्वारा की गई अंधाधुध फायरिंग के बाद गांव में दहशत का माहौल पैदा हो गया।

इस मामले को लेकर पीड़ित द्वारा मंडावरी थाने में चार लोगों के खिलाफ जान से मारने की नियत से अंधाधुंध गोलियां चलाने का मामला दर्ज कराया। पीड़ित मुकेश उर्फ पिंडा पुत्र कालूराम मीणा द्वारा मंडावरी थाने में रिपोर्ट दर्ज कराते हुए बताया कि वह रात्रि दस बजे गांव में रामलाल मीणा के घर सो रहा था। उसके साथ हरिमोहन चैनपुरा व चार-पांच अन्य आदमी भी सो रहे थे। उसी दौरान वहां पर अचानक तीन मोटरसाइकिल व एक बोलेरो गाड़ी में बैठकर दिल्लू उर्फ दिलकुश, लोकेश, गुलकेस, स्वीकार, विकास उर्फ पागा व विकास उर्फ गल्या निवासी करेल थाना क्षेत्र मलारना डूंगर जिला सवाई माधोपुर सहित चार पाच अन्य लोगों द्वारा उनके साथ मारपीट करने लगे एवं उनके ऊपर जान से मारने की नियत से अंधाधुंध बंदूक से गोलियां चलाई गई। जहां बड़ी मुश्किल से इधर-उधर चुप कर जान बचाई गई।

- 4 लोगों के खिलाफ नामजद मामला दर्ज

गोलियों की आवाज सुनकर गांव वाले आए तो भीड़ को देखकर आरोपी खुद की गाड़ियों में बैठकर घटनास्थल से भाग खड़े हुए।

4 घंटे विद्युत सप्लाई बंद रहेगी

श्रीमाधोपुर, (निसं)। अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के कनिष्ठ अभियंता भावेश गुप्ता ने बताया कि 18 मार्च शनिवार को सुबह 6 से 10 बजे तक 132 के वी जीएसएस जालपाली श्रीमाधोपुर मे रख रखाव व मरम्मत कार्य करने के लिए 4 घंटे विधुत आपूर्ति बंदरहेगी तथा इनके अधीन आने वाले जीएसएस तीजावाला जोहड़ा श्रीमाधोपुर, डेरारामसागर, हांसपुर, बस्सी जोरावर नगर की ढाणी, निमड़ावाली, खेड़ी, मऊ, बागरियावास, नांगल, पृथ्वीपुरा, होल्याकाबास व इनके आस पास के गांव व ढाणीयो की विधुत आपूर्ति बंद रहेगी ।

लोकेंद्र सिंह कालवी को याद किया

चौमूं/कालाडेरा, (निसं)। चौमू उपखण्ड के ग्राम गोविन्दगढ़ में स्थित श्रीकृष्ण गोपाल गौशाला परिसर में शुक्रवार को श्री राजपूत सभा तहसील चौमूं एवं श्री राजपूत करणी सेना तहसील इकाई चौमूं के तत्वावधान में श्री राजपूत करणी सेना के संस्थापक लोकेंद्र सिंह कालवी के निधन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। सभा में अखिल भारतीय प्रोफेशनल कांग्रेस की प्रदेश अध्यक्ष रूक्ष्मणी कुमारी ने कहा कि राजपूत समाज के पुरोधा लोकेंद्र सिंह कालवी के निधन पर अपूर्ण क्षति हुई है। सभा में श्री राजपूत सभा तहसील चौमूं अध्यक्ष शंकर सिंह खेजरोली ने कहा कि कालवी का योगदान राजपूत समाज के उत्थान के लिए सराहनीय रहा है। कार्यक्रम के दौरान राजपूत सभा के लोगों ने करणी सेना के संस्थापक लोकेंद्र सिंह कालवी के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किये। सभा में श्री राजपूत सभा जयपुर देहात पूर्व अध्यक्ष एडवोकेट रघुवीर सिंह राठौड एवं राजस्थान बुनकर संघ पूर्व अध्यक्ष राधेश्याम सिंह तवर, राजपूत करणी सेना तहसील संयोजक गिरवर सिंह ईटावा, विश्व हिंदू परिषद तहसील आमेर अध्यक्ष ठाकुर भवानी सिंह टाटियावास आदि मौजूद थे।

बजरी की दरों को कम करने की मांग

टोंक, (निसं)। राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी ने राजस्थान में बजरी माफियाओं की मनमर्जी पर लगाम लगाकर बजरी की दरों को कम करने व राज्य राजमार्गों को टोल फ्री करने की मांग को लेकर शुक्रवार को घंटाघर पर प्रदर्शन कर जिलाध्यक्ष राजेंद्र चौधरी पराना के नेतृत्व में जिला कलेक्टर को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा है।

बजरी ट्रक ऑपरेटर्स के अध्यक्ष अजय चौधरी, डॉ. प्रदीप चौधरी, रामअवतार, अशोक, सुरेश, गणेश, हनुमान, संदीप, रामकृष्ण, लोकेश, रामजी लाल, मदन लाल, खुशीराम चौधरी, देवली तहसील अध्यक्ष रणवीर सिंह राजपूत, अर्जुन चौधरी, लोकेश, जीतराम ताखर, सुरेंद्र मीणा, रामसिंह, भंवर ताखर, राजू सैनी, तालीब खान एवं आसाराम आदि ने बताया कि आज राजस्थान में बजरी माफियाओं की मनमर्जी और बजरी के वैध खनन की आड में मनमाफिक दरों से तथा राज्य राजमार्गों पर लिए जाने वाले टोल टैक्स से आमजन परेशान है। क्योंकि आज प्रति टन बजरी के लिए 600 रूपये से अधिक राशि ली जा रही है और वैध खनन के नाम पर राजस्थान में अधिकतर स्थानों पर ही एक ही समूह के पास बजरी खनन का ठेका है और उसकी आड में उस समय द्वारा रॉयल्टी नाकों पर अधिकतर बदमाशों को बैठा कर रखा है। जो आए दिन स्थानीय लोगों और किसानों को तंग करते हैं।

सात दिवसीय चेटीचंड महोत्सव बाइक रैली के साथ शुरू

खैरथल, (निसं)। सिन्धी समुदाय की ओर से आयोजित 7 दिवसीय भगवान झूलेलाल जयंती महोत्सव का शुक्रवार को बाइक रैली के साथ जोरदार शुभारंभ किया गया।

गाजे-बाजे के साथ झूलेलाल मंदिर से शुरू हुई रैली को मंदिर के महंत बाबा शीतलदास लालवानी, पूज्य सिन्धी पंचायत के अध्यक्ष मनोहर लाल रोघा, मेला कमेटी के अध्यक्ष ओमप्रकाश रोघा ने झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर झूलेलाल सेवा समिति के अध्यक्ष दयालदास प्रदनानी, पूज्य सिन्धी पंचायत अलवर जिलाध्यक्ष ओमप्रकाश रोघा, बाबा, व्यस्थापक अर्जुनदास बाबानी, महेश आडतानी, राजकुमार मंगलानी, प्रदेश मंत्री गिरधारीलाल ज्ञानानी, पूज्य सिन्धी पंचायत के प्रवक्ता प्रहलाद मंगलानी,मुखी सेवक लालवानी, पार्षद जाजन मुलानी, गोपालदास पेशवानी, राजकुमार दादवानी, अशोक महलवानी, किशनचंद भारती, प्रताप कटहरा, राजा मंगलानी, प्रेम प्रदनानी, देवीदास भगतानी, अर्जुनदास असरानी, राजकुमार आसीजा, बोनी जयवानी, रूपचंद भारती, नत्थूमल रामनानी, बूलचंद मानवानी,प्रेम प्रदनानी,गोपाल शर्मा,विष्णुमल गनवानी, मुरलीधर तीर्थानी, धर्मदास तलरेजा, रामचंद, राधाकिशन रोचवानी,घनश्याम बच्चानी, वासुमल दरयानी, नरेश मेठवानी आदि मौजूद रहे। सहित सभी सेवादार मौजूद रहे। प्रारंभ में भगवान झूलेलाल की आराधना कर मंगल कामनाएं की गई व प्रसाद वितरण किया गया।सात दिवसीय महोत्सव के तहत होने वाले कार्यक्रमों में प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित भी किया जाएगा।

महोत्सव के शानदार आयोजन के लिए सभी चौराहों समेत बाजारों में आकर्षक लाइट डेकोरेशन किया गया है और घर घर दीपक बांटे जा रहे हैं।

चेटीचंड के सात दिवसीय महोत्सव के शुभारंभ पर विशाल रैली निकाली।

सात दिवसीय महोत्सव के तहत शुक्रवार को बाइक रैली निकाली गई। शनिवार को पूज्य बहराणा साहिब सवारी, रविवार को भारतीय सिंधु सभा की ओर से मातृशक्ति स्कूटी रैली, सोमवार को झूलेलाल मंदिर में सांय महा आरती, मंगलवार को झूलेलाल मंदिर से अखंड ज्योति नगर भ्रमण, बुधवार को प्रात: 10 बजे कलशयात्रा व सांय 6.30 बजे से देर रात तक प्रतिभा सम्मान व सांस्कृतिक समारोह होगा।

जबकि 23 मार्च गुरुवार को मुख्य कार्यक्रम चेटीचंड महोत्सव मनाया जाएगा जिसमें मंदिर पर ध्वजारोहण,हवन, कन्या वंदन आम भंडारा, भव्य शोभायात्रा के बाद सांय 8 बजे मशहूर शहनाई वादक पेशूराम एवं पार्टी के साथ पूज्य बहराणा साहिब, डांडिया नृत्य व सिन्ध का लोकनृत्य छेज,9 बजे आम भंडारा (डिनर)9.30 से 10 बजे तक शोभायात्रा में शामिल झांकियों को पुरस्कार और रात्रि 10 बजे से सांस्कृतिक प्रस्तुतियां तथा 24 मार्च को सुबह 6 बजे वरुणावतार का पल्लव पाने के बाद महोत्सव का विधिवत समापन किया जाएगा।

लालसोट क्षेत्र को पांच बड़ी सौगातें

लालसोट/रामगढ़ पचवारा, (निसं)। विधानसभा क्षेत्र को एक के बाद एक विकास की नई बड़ी सौगात मिल रही है।

शुक्रवार को राजस्थान विधानसभा सत्र के दौरान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के द्वारा वित्त विनियोग विधेयक चर्चा के दौरान विधानसभा क्षेत्र लालसोट में पांच बड़ी विकास की सौगाते दी हैं। चिकित्सा मंत्री परसादी लाल मीणा ने बताया कि नगरपालिका रामगढ़ पचवारा में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान आईटीआई व रामगढ पचवारा में सहायक अभियंता पीएचडी कार्यालय और लालसोट में अधिशासी अभियंता पीडब्ल्यूडी कार्यालय, लालसोट में परिवहन विभाग कार्यालय एवं लालसोट में पशु चिकित्सा महाविद्यालय सहित लालसोट विधानसभा क्षेत्र के लिए विभिन्न विकास की बडी सौगातें मिली हैं।

चिकित्सा मंत्री मीणा ने कहा कि कांग्रेस कि गहलोत सरकार ने लालसोट विधानसभा क्षेत्र को ऐसी विकास की सौगात दी है जो कभी लालसोट विधानसभा क्षेत्र के लोगों द्वारा मांगी ही नहीं गई थी।

आज लालसोट विधानसभा क्षेत्र विभिन्न स्तर पर विकास में मॉडल के रूप में बनकर उभरा है। चिकित्सा मंत्री मीणा ने कहा कि उनके द्वारा गत विधानसभा चुनाव में की गई सभी घोषणाओं को लगभग है पूरा किया है एवं आने वाले समय में भी लालसोट के विकास में कोई कमी नहीं छोड़ी जाएगी।

सार-समाचार

कार्यक्रम में कलाम पेश किये

टोंक, (निसं)। आजादी के अमृत महोत्सव की श्रृंखला में एपीआरआई में चहार बैत का आयोजन किया गया। चहार बैत के मुख्य अतिथि सभापति अली अहमद, पूर्व जिला परिषद सदस्य अध्यक्षता मणीन्द्र लोदी, विशिष्ट अतिथि फैसल सईदी, पार्षद शब्बीर अहमद, खुर्शीद अहमद नकवी थे। पांच चहार बैत पार्टियों ने अपने कलाम पेश किये। रामपुर की चहार बैत पार्टी "शाने रामपुर" उस्ताद अफजाल व खलीफा लड्डन उत्तरप्रदेश, दूसरी पार्टी "शाने हिन्द", उस्ताद मोहम्मद आसिफ, मोहल्ला बटवालन, टोंक, तीसरी पार्टी "शाने अमन", उस्ताद अख्लाक व वाहिद मियां, खिडकी दरवाजा, पुरानी टोंक, चौथी पार्टी "ताजे हिन्द", उस्ताद सरदार अब्बास काफला बाजार तथा पांचवी पार्टी "शाने चमन" उस्ताद याकूब अख्तर मोहल्ला रजबन टोंक एवं उनके साथियों ने ये कलाम पढा। कार्यक्रम का प्रारम्भ रामपुर, उत्तरप्रदेश के उस्ताद अफजाल व खलीफा लडडन ने नाते पाक से किया।

सुरक्षा सखियों का सम्मान किया

पावटा, (निसं)। पावटा कस्बे के होटल ग्रीन पार्क में सुरक्षा सखी सम्मान समारोह कार्यक्रम भामाशाह व पार्षद भोमाराम गुर्जर के सहयोग से भाजपा महिला मोर्चा जयपुर जिला देहात उत्तर की जिलाध्यक्ष आरती सिंह के मुख्य आतिथ्य व पावटा पंचायत समिति प्रधान पूजा चौधरी की अध्यक्षता एवं जिला अध्यक्ष महिला मोर्चा अलवर सुनीता सैनी, शिवाजी महिला मोर्चा अध्यक्ष अलवर मोनिका शर्मा, जिला मंत्री भाजपा अलवर आरती बहुगुणा, राष्ट्रीय महिला जागृति मंच जिला अध्यक्ष अलवर कल्पना शर्मा के विशिष्ट आतिथ्य में आयोजित किया गया। जिसमें 100 से भी ज्यादा सुरक्षा सखियों को उनके सराहनीय कार्य के लिए सम्मानित किया गया।

नारायणपुर के ग्रामीणों में ख़ुशी की लहर

नारायणपुर, (निसं)। विधानसभा में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा शुक्रवार को नारायणपुर को पंचायत समिति बनाए जाने की घोषणा के बाद कस्बे के ग्रामीणों व कांग्रेस कार्यकर्ताओं में ख़ुशी का माहौल है। नारायणपुर कस्बे को पंचायत समिति बनाये जाने की पुरानी मांग उधोग व देवस्थान मंत्री शकुंतला रावत द्वारा पूरी किए जाने पर ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री गहलोत और कैबिनेट मंत्री रावत का आभार जताकर ख़ुशी प्रकट की। ग्रामीणों ने बताया कि पंचायत समिति बनने पर नारायणपुर सहित आसपास की ग्राम पंचायतों का विकास अब तेजी से होगा। जैसे ही क्षेत्र के लोगों को नारायणपुर को पंचायत समिति बनने का समाचार मिला तो लोगों में ख़ुशी की लहर दौड़ गई। लोगों ने मिठाई बांटकर ख़ुशी का इजहार किया। इस मौके पर सरपंच प्रतिनिधि भवानीशंकर सैनी, विक्रम गुर्जर, गिर्राज सैनी, कमलेश गुर्जर, कमलेश प्रजापत सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

ग्रामीणों ने प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपा

मालपुरा, (निसं)। दूदू-छाण स्टेट हाईवे पर तीन दिन पूर्व इंदोली प्रिंसिपल रामूलाल जाट पर हुए जानलेवा हमले के आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर केरिया गांव के ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन कर एसडीएम,एएसपी व डीवाईएसपी को ज्ञापन सौंपा। बड़ी संख्या में एकत्रित ग्रामीणों ने मलिकपुर महिला सरपंच के विरूद्ध भी जमकर नारेबाजी करते हुए प्रिंसिपल पर हुए हमले में सरपंच के परिजनों की लिप्तत्ता होने का खुला आरोप लगाते हुए संगीन धाराओं में मामला दर्ज कर आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की। साथ ही ग्रामीणो ने बताया कि हमलावरो की गिरफतारी नही होने व खुले में घूमने से ग्रामीण दहशत में है।

विदाई समारोह आयोजित

मंडावरी, (निसं)। महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय दौसाडा में कक्षा आठ के विद्यार्थियों का आशीर्वाद एवं विदाई समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पीईईओ महारिया कैलाश चंद मीना पीईईओ बिलौना कला मनोज मीना विशिष्ट अतिथि उप प्राचार्य कमलेश गौतम महारिया एवं कैलाश चंद शर्मा पूर्व प्रधानाध्यापक रहे। इस कार्यक्रम में अतिथियों एवं विद्यालय के शिक्षकों ने विद्यार्थियों के बेहतर भविष्य के लिए मार्गदर्शन और शुभकामनाएं दी। कक्षा आठ के विद्यार्थियों को पैन ज्योमेट्री बाक्स एवं डिक्शनरी भेंट की गयी। कार्यक्रम में एसएमसी अध्यक्ष जगदीश मीना रामधन इकबाल खान प्यारे लाल मीना रामकिशन मीना विनोद कुमार माया मीना राजेश मीना भोलाराम सैनी सहित अनेक ग्रामवासी उपस्थित रहे।

महापंचायत में पहुंचने का आव्हान

पावटा, (निसं)। 19 मार्च को विद्याधर नगर जयपुर में आयोजित ब्राह्मण महापंचायत को लेकर तहसील ब्राह्मण महासभा पावटा की एक बैठक भोनावास रोड स्थित शिव शक्ति फार्म हाऊस पर आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता तहसील ब्राह्मण महासभा पावटा अध्यक्ष राजेश शर्मा ने की। बैठक में शर्मा ने बताया कि 19 मार्च को होने वाली महापंचायत में क्षेत्र के विप्र समाज बढ चढकर हिस्सा लेगा जिसके लिए विराटनगर विधानसभा के प्रत्येक क्षेत्र के गांव एवं ढाणी में इकाई अध्यक्षों व पदाधिकारियों सहित विप्र बंधुओं को 19 मार्च को होने वाली महापंचायत में चलने का आव्हान किया गया। शर्मा ने बताया कि विराटनगर विधानसभा से जयपुर में होने वाली ब्राह्मण महापंचायत में हिस्सा लेने के लिए बडी संया में ब्राह्मण बंधु जयपुर कूच करेंगे। महापंचायत को लेकर विराटनगर विधानसभा के प्रत्येक गांव ढाणी, कस्बा और शहर में विप्र समाज की बैठक आयोजित की जाएगी।

खैरथल को जिला बनाने पर मिठाई बांटी

खैरथल, (निसं)। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की ओर से शुक्रवार को खैरथल को भी जिला बनाए जाने की घोषणा से पूरा खैरथल क्षेत्र झूम उठा। लोगों ने जिला बनाने की घोषणा पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत व विधायक दीपचंद खैरिया के पक्ष में जमकर नारे लगाते हुए मिठाइयां बांटकर खुशी जताई। गैर-राजनीतिक संगठन खैरथल विकास मंच की ओर से पिछले लंबे समय से खैरथल को जिला बनाने की मांग की थी। विकास मंच ने बाकायदा नक्शा बना कर दावेदारी पेश की। विधायक दीपचंद खैरिया ने भी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से खैरथल को जिला बनाने की पुरजोर मांग करते रहे। खैरथल विकास मंच के अध्यक्ष मनोहर लाल परवाना, पीसीसी सदस्य गिरीश डाटा, नगरपालिका में प्रतिपक्ष नेता विक्की चौधरी के नेतृत्व सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने मिठाई बांट कर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत व विधायक दीपचंद खैरिया का आभार व्यक्त किया।

'हमें एक बात समझने की जरूरत है कि टेस्ट क्रिकेट आकर्षक होना चाहिए और इस बात पर जोर नहीं होना चाहिए कि यह कितने दिन चलता है। हम (क्रिकेटर) अलग-अलग पिच पर खेलने के लिए बने हैं। पिच चाहे तेज गेंदबाजों की मददगार हो या स्पिनरों के मुताबिक हो हमें हर स्थिति में गेंद का सामना करने आना चाहिये।' -सचिन तेंदुलकर

पूर्व भारतीय बल्लेबाज, टैस्ट क्रिकेट को लेकर

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

टिम पेन

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व टेस्ट कप्तान टिम पेन ने शुक्रवार को तस्मानिया के क्वींसलैंड के खिलाफ शेफील्ड शील्ड प्रथम श्रेणी मैच के समाप्त होने के बाद संन्यास लेने की घोषणा की। विकेटकीपर बल्लेबाज पेन ने आस्ट्रेलिया की तरफ से कुल 35 टेस्ट मैच खेले जिनमें से 2018 से लेकर 2021 तक 23 टेस्ट मैचों में उन्होंने कप्तानी की। दक्षिण अफ्रीका में 2018 में गेंद से छेडछाड के मामले में फंसने के बाद स्टीव स्मिथ से कप्तानी छीन ली गई थी जिसके बाद पेन ऑस्ट्रेलिया के 46वें टेस्ट कप्तान बने थे। पेन ने 2021 में तब टेस्ट कप्तानी छोड दी थी।

क्या आप जानते हैं ?... प्रथम श्रेणी क्रिकेट में सर्वाधिक व्यक्तिगत स्कोर का विश्व रिकॉर्ड ब्रायन लारा के नाम है। लारा ने 1994 में वारविकशायर की तरफ से डरबन के खिलाफ 501 रन की नाबाद पारी खेली।

शमी-सिराज के बाद चले राहुल-जड़ेजा, भारत पांच विकेट से जीता

मुंबई 17 मार्च। गेंदबाजों के दमदार प्रदर्शन के बाद केएल राहुल (75 नाबाद) और रवीन्द्र जडेजा (45 नाबाद) की यादगार शतकीय साझीदारी की बदौलत भारत ने पहले एक दिवसीय मैच में शुक्रवार को आस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच विकेट से जीत दर्ज की।

वानखेडे स्टेडियम पर भारत की 12 सालों बाद यह पहली जीत है। जीत के साथ भारत ने इस मैदान पर तीन साल पहले आस्ट्रेलिया से मिली हार का बदला भी ले लिया।

आस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुये सभी दस विकेट गंवा कर 188 रन बनाये थे और भारत को जीत के लिये 189 रनों का लक्ष्य दिया था, जिसका पीछा करने उतरी टीम इंडिया एक समय अपने पांच महत्वपूर्ण विकेट मात्र 83 रन पर गंवा कर मुश्किल में नजर आ रही थी मगर क्रीज पर उतरे हरफनमौला जडेजा ने एक छोर पर मजबूती से डटे केएल राहुल का बखूबी साथ निभाते हुये भारत को जीत के दरवाजे पर पहुंचा कर ही दम लिया। दोनो बल्लेबाजों ने संयम का परिचय देते हुये आस्ट्रेलियाई गेंदबाजी आक्रमण का सामना किया और 61 गेंद शेष रहने मैच को अपनी झोली में डाल लिया।

राहुल ने फार्म पर लौटने के साथ ही वानखेडे पर खेली गयी पारी को यादगार बना दिया। उन्होने 176 मिनट क्रीज पर बिताये और 91 गेंद खेल कर सात चौके और एक छक्का जड़ा जबकि दूसरे छोर पर जडेजा ने टीम में अपनी उपयोगिता को एक बार फिर साबित करते हुये न सिर्फ दो आस्ट्रेलियाई विकेट अपने नाम किये बल्कि मुश्किलों के भंवर में फंसी टीम को बल्ले से भी मालामाल करते हुये मुस्कराने का मौका दिया।

इशान किशन (3),विराट कोहली (4) और विस्फोटक सूर्य कुमार यादव (शून्य) के आउट होने के बाद भारत की हालत पतली हो गयी थी। बाद में शुभमन गिल (20) और हार्दिक पांड्या 25) के पवेलियन लौटने के बाद आस्ट्रेलिया के खेमे में उत्साह की लहर दौड गयी थी मगर टीम में बल्लेबाजी की गहराई फिर नजर आयी और मेहमानो को निराशा हाथ लगी।

इससे पहले टास जीत कर भारतीय कप्तान हार्दिक पांड्या ने आस्ट्रेलिया को पहले बल्लेबाजी करने का निमंत्रण दिया जिसको सही साबित करते हुये मोहम्मद सिराज (29 रन पर तीन विकेट) और मोहम्मद शमी (17 रन पर तीन विकेट) चटकाये जिसके चलते आस्ट्रेलिया की पारी को महज 35.4 ओवर के खेल में 188 रनों पर ढेर हो गयी। दर्शकों से खचाखच भरे वानखेडे स्टेडियम में उमस भरी गर्मी के बीच शमी और सिराज की जोड़ी के आगे दिग्गज आस्ट्रेलियाई बल्लेबाज पानी मांगते नजर आये। अनुभवी शमी और युवा जोश से लबरेज सिराज की दहकती गेंदों के आगे मेहमान बल्लेबाज शुरू से पारी के अंत तक असहज दिखे।

सलामी बल्लेबाज मिचेल मार्श (81) के अलावा कोई अन्य बल्लेबाज क्रीज पर ज्यादा समय नहीं दे सका। उधर, कुलदीप यादव (48 रन पर एक विकेट),रवीन्द्र जडेजा (46 रन पर दो विकेट) के अलावा हार्दिक पांड्या (29 रन पर एक विकेट) ने कंगारूओं को जमने का मौका नहीं दिया,नतीजन पूरी टीम 188 रनों के स्कोर पर पवेलियन लौट गयी।

भारतीय आक्रमण की धार का अंदाजा इस कदर लगाया जा सकता है कि आस्ट्रेलिया के पांच बल्लेबाज अपने निजी स्कोर को दहाई के अंक तक पहुंचाने में असफल साबित हुये।

एक तरफ से विकेटों के पतझड के बीच मार्श ने जीवटता का प्रदर्शन करते हुये अपनी 65 गेंदो की पारी में पांच लंबे छक्के और दस चौके लगाये। उनके अलावा कप्तान स्टीवन स्मिथ (22) और जोस इंग्लिस (26) ने टीम के स्कोरबोर्ड को गति देने की असफल कोशिश की। एक समय आस्ट्रेलिया 20वें ओवर में दो विकेट खोकर 129 रन बनाकर बड़े स्कोर की ओर अठासर था मगर मार्श के आउट होते ही विकेट का पतझड शुरू हो गया जो पूरी टीम के पवेलियन पहुंचने तक जारी रहा।

स्कोर बोर्ड

आस्ट्रेलिया	रन	गेंद	4	6
ट्रेविस हेड बो सिराज	05	10	1	0
मिशेल मार्श का सिराज बो जडेजा	81	65	10	5
स्टीव स्मिथ का राहुल बो पंड्या	22	30	4	0
मार्नुस का जडेजा बो कुलदीप	15	22	1	0
जोश इंग्लिश बो शमी	26	27	1	1
कैमरुन ग्रीन बो शमी	12	19	0	0
ग्लेन का पंड्या बो जडेजा	08	10	1	0
मार्कस का गिल बो शमी	05	8	1	0
सीन का गिल बो सिराज	00	7	0	0
मिशेल स्टार्क नाबाद	04	10	1	0
एडम जम्पा का राहुल बो सिराज	00	6	0	0
अतिरिक्त:	10			

कुल योग: (35.4 ओवर में सभी आउट) 188 रन

विकेट पतन:-1-5, 2-77, 3-129, 4-139, 5-169, 6-174, 7-184, 8-184, 9-188

गेंदबाजी:-शमी 6-0-17-3, सिराज 5.4-1-29-3, पंड्या 5-0-29-1, शारदुल 2-0-12-0, जडेजा 9-0-46-2, कुलदीप 8-1-48-1

भारत	रन	गेंद	4	6
ईशान किशन पगबाधा बो स्टोइनस	03	8	0	0
शुभमन का मार्नुस लाबुसेन बो स्टार्क	20	3	13	0
कोहली पगबाधा बो स्टार्क	04	9	1	0
सूर्यकुमार पगबाधा बो स्टोक	00	1	0	0
केएल राहुल नाबाद	75	91	7	1
हार्दिक पंड्या का ग्रीन बो स्टाइनिस	25	31	3	1
रविन्द्र जडेजा	45	69	5	0
अतिरिक्त	19			

कुल योग:-.39.5 ओवर में 5 विकेट पर 191 रन

विकेट पतन:-5-1, 16-2, 16-3, 39-4, 83-5

गेंदबाजी:स्टार्क 9.5-0-49-3, स्टाइनिस 7-1-27-2, एबोट 9-00-31-0, ग्रीन 6-0-35-0- जम्पा 6-037-0, मैक्सवैल2-0-7-0

त्रिसा और गायत्री आल इंग्लैंड सेमीफाइनल में

बर्मिंघम, 17 मार्च (भाषा) भारत की त्रिसा जॉली और गायत्री गोपीचंद की जोडी आल इंग्लैंड बैडमिंटन चैम्पियनशिप के महिला युगल वर्ग के सेमीफाइनल में पहुंच गई।

दुनिया की 17वें नंबर की भारतीय जोडी ने चीन की लि वेन मेइ और लियू शुआन शुआन को 64 मिनट तक चले मुकाबले में 21 . 14, 18 . 21, 21 . 12 से हराया।

अब उनका सामना इंडोनेशिया की आठवीं वरीयता प्राप्त अप्रियानी राहायू और सिति फाडिया सिल्वा रामाधांती या कोरिया की बाएक हा ना और ली सो ही की जोडी से होगा। टूर्नामेंट में भारतीय चुनौती का दारोमदार अब त्रिसा और गायत्री पर ही है।

पिछली बार भी दोनों सेमीफाइनल में पहुंची थी जब उन्हें ऐन मौके पर मुख्य ड्रॉ में प्रवेश मिला था। इस बार वे पर्याप्त अनुभव के साथ उतरी हैं और पिछले साल राष्ट्रमंडल खेलों में कांस्य पदक जीता। इसके अलावा फरवरी में बैडमिंटन एशिया मिश्रित टीम चैम्पियनशिप में अपने से ऊंची रैंकिंग वाली टेन पीयरली और टी मुरलीधरन को हराया। पिछले दौर में उन्होंने दुनिया की पूर्व नंबर एक जोडी जापान की युकी फुकुशिमा और सयाका हिरोता को मात दी थी।

उत्तर पश्चिम रेलवे

खुली ई - निविदा सूचना

(ई-निविदा द्वारा 2022-23)

ई निविदा नोटीस संख्या. 03-Elec-WS-BKN-2022-23 दिनांक: 16.03.2023

भारत के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से मुख्य कारखाना प्रबंधक, कैरिज एवं वैगन कारखाना, उत्तर पश्चिम रेलवे, बीकानेर द्वारा खुली ई-निविदा सूचना संख्या 03-Elec-WS-BKN-2022-23 दिनांक 16.03.2023 निम्नलिखित कार्य के लिए आमंत्रित की जाती है ।कार्य का नाम : बीकानेर कार्यशाला में 500 kWp ग्रिड कनेक्टेड रुफ टॉप सोलर पावर प्लांट का प्रावधान । कार्य की अनुमानित लागत : रु 18300000/-. बयाना राशि : रु 241500/-. ई-निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि एवं खुलने का समय व दिनांक : दिनांक 10.04.2023 को 15.00 बजे तक ई-निविदा उसी दिन 15.30 बजे खोली जायेगी। वेबसाइट विवरण जहाँ से ई-निविदा की पूर्ण जानकारी देखी जा सकती हैं: www.ireps.gov.in

268-AK/23

हमें /NWRailways पर फॉलो करें

बेंगलुरु और एटीके मोहना बागान के बीच खिताबी भिडंत में रणनीति और मानसिकता की जंग

मडगांव, 17 मार्च। एटीके मोहन बागान की टीम इंडियन सुपर लीग फुटबॉल के फाइनल में शनिवार को जब 2018-19 सत्र के चैम्पियन बेंगलुरु एफसी के खिलाफ मैदान में उतरेगी तो उसकी कोशिश पहली बार इस खिताब को अपने नाम करने की होगी।

एटलेटिको कोलकाता (एटीके) की फ्रेंचाइजी ने इस खिताब को एक बार जीता है लेकिन मोहन बागान से जुड़ाव के बाद उसे अपने पहले खिताब का इंतजार है। टीम ने लगातार पांच मैचों अजेय रहते हुए फाइनल का टिकट पक्का किया। इन पांच मैचों चार में उसके खिलाफ एक भी गोल नहीं हुए।

क्लब ने लीग चरण में टीम की रक्षापंक्ति ने शानदार खेल दिखाया था। इस दौरान टीम के खिलाफ सिर्फ 17 गोल हुए थे जो गत चैम्पियन हैदराबाद एफसी के बाद सबसे बेहतर आंकड़ा है। फाइनल में जब टीम बेंगलुरु के खिलाफ उतरेगी तो ये आंकड़े ज्यादा मायने नहीं रखेंगे। बेंगलुरु के पास भारत के करिश्माई कप्तान सुनील छेत्री के अलावा रॉय कृष्णा और शिव शक्ति नारायण जैसे अठिम पंक्ति के शानदार खिलाड़ी है।

बेंगलुरु के कोच सिमोन ठोसन ने पिछले कुछ मैचों में 38 साल के छेत्री का इस्तेमाल स्थानापन्न खिलाड़ी के तौर पर किया है और भारतीय कप्तान ने अहम मौकों पर गोल कर टीम को निराश नहीं किया।

हैदराबाद के मुख्य को जुआन फर्नांडो ने कहा, " पिछले कुछ मैचों में उनकी टीम (बेंगलुरु एफसी) ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। वे आत्मविश्वास से खेले हैं। हमें मैच की शुरुआत से ही उन्हें रोकना होगा। इसके लिए हमें अपनी योजना पर भरोसा है।"

बेंगलुरु के कोच ठोसन फाइनल में भी छेत्री को बाद में मैदान में उतारना चाहेगे। उन्होंने कहा, " उनकी तरह की गुणवत्ता, अनुभव और पेशेवर खिलाड़ी को बाहर छोड़ना वास्तव में एक कठिन निर्णय है। लेकिन एक कोच के रूप में, चाहे वह सुनील छेत्री हो या रोहित कुमार, मुझे वही करना है जो मुझे मेरे मुताबिक टीम के हित में होगा।"

रमन विजयन होंगे चेन्नईयिन एफसी के सहायक कोच

चेन्नई 17 मार्च। चेन्नईयिन एफसी (सीएफसी) ने शुक्रवार को भारत के पूर्व स्ट्राइकर रमन विजयन को टीम के सहायक कोच के तौर पर नियुक्त किया है।

खासा अनुभवी तमिलनाडु के 49 वर्षीय विजयन मुख्य कोच थॉमस ब्रेडरिक और शेष कोचिंग स्टाफ के साथ मिलकर चेन्नईयिन एफसी को अपनी सेवा देंगे।

चेन्नईयिन एफसी के सह-मालिक वीटा दानी ने विजयन की नियुक्ति पर कहा, हम रमन विजयन के टीम से जुड़ने से बेहद खुश हैं। विजयन के प्रबंधकीय अनुभव के साथ संयुक्त रूप से जुड़ने और तराशने वाली उनकी प्रतिभा सीएफसी के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित होगी। विजयन ने इससे पहले इंडियन सुपर लीग के 2015-16 सत्र के दौरान दिल्ली डायनामोज के साथ काम किया था। उन्होंने चेन्नई एफसी, चेन्नई यूनाइटेड और बेंगलुरु से साउथ यूनाइटेड के साथ भी महत्वपूर्ण प्रबंधकीय भूमिकाएँ निभाई हैं।

सीएफसी सहायक कोच के रूप में अपनी नई भूमिका पर उत्साह व्यक्त करते हुए विजयन ने कहा, मैं चेन्नईयिन परिवार का हिस्सा बनकर बहुत खुश हूं। खुद एक स्थानीय खिलाड़ी होने के नाते सीएफसी के साथ काम करना बडे सम्मान की बात है। मेरा मकसद दीर्घावधि लक्ष्य रखना और उसे हासिल करना है, खासकर जमीनी-स्तर पर टीम का विकास करना है। मेरे लिए युवा खिलाड़ियों की प्रतिभा में निखार लाना और जमीनी स्तर पर खिलाड़ियों को मजबूत करना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। हर साल हमें और अधिक से अधिक प्रतिभाओं को सामने लाना चाहिए और हमारे लिए खिलाड़ियों को मुख्य टीम का हिस्सा बनाना महत्वपूर्ण होना चाहिए। आगामी वर्षों में यही हमारा बड़ा ध्येय रहेगा। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु से अधिक से अधिक स्थानीय प्रतिभाओं को आगे लाने के लिए हमारे पास उचित स्काउटिंग और संरच नात्मक योजना होगी।

विजियन ने 30 अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन करने के अलावा कोचिंग में सफल बदलाव करने से पहले अपने शानदार पेशेवर करियर के दौरान देश के कुछ शीर्ष क्लबों का प्रतिनिधित्व भी किया। जिसमें ईस्ट बंगाल, मोहम्मडन एससी, डेम्पो एससी, एफसी कोचीन और महिंद्रा यूनाइटेड शामिल हैं। नेशनल फुटबॉल लीग 2007 में आई-लीग के रूप में पुन: ब्रांडेड के रूप में अपने 11 साल के अस्तित्व में विजयन बाइचुंग भूटिया के साथ केवल दो शीर्ष भारतीय गोल स्कोररों में से एक थे।

चेन्नईयिन एफसी वर्तमान में हीरो सुपर कप 2023 की तैयारी कर रहा है, जहां वह 11 अप्रैल को केरल में नॉर्थईस्ट यूनाइटेड के खिलाफ अपने खेल अभियान की शुरुआत करेगा।

भारतीय टीम आयरलैंड में तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की श्रृंखला खेलेगी: क्रिकेट आयरलैंड

डबलिन, 17 मार्च। भारतीय क्रिकेट टीम तीन मैचों की टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला के लिए इस साल अगस्त में आयरलैंड का दौरा करेगी। यह जानकारी क्रिकेट आयरलैंड ने शुक्रवार को दी।

क्रिकेट आयरलैंड ने कहा, " आयरलैंड के क्रिकेट प्रशंसक दुनिया की नंबर एक टी20 अंतरराष्ट्रीय टीम भारत को देखने का लुत्फ उठा सकेंगे, जब एशिया के शीर्ष खिलाड़ी इस अगस्त में तीन मैचों की टी20 श्रृंखला के लिए मालाहाइड लौटेंगे।"

भारतीय टी20 टीम के नये कप्तान हार्दिक पंड्या ने पिछले साल इसी स्थान पर दो मैचों की श्रृंखला के दौरान टीम का नेतृत्व किया था। भारत को अपनी घरेलू सरजमीं पर इस साल एकदिवसीय विश्व कप खेलना है ऐसे में यह देखना होगा कि क्या भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) हार्दिक को एक ऐसी श्रृंखला में खेलने का जोखिम उठाएगा जिसका विश्व कप की तैयारी के मामले में कोई खास महत्व नहीं होगा। यह श्रृंखला हालांकि आयरलैंड क्रिकेट बोर्ड के लिए काफी मायने रखती है क्योंकि इसके प्रसारण राजस्व से उनकी वित्तीय स्थिति बेहतर होगी। इस श्रृंखला का आयोजन 18 से 23 अगस्त तक होगा।

क्रिकेट आयरलैंड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी वारेन डेयूट्रोम ने कहा, "पुरुष क्रिकेट के मामले में गर्मी का 2023 सत्र किसी जश्न की तरह होगा। प्रशंसकों के लिए यह बहुत खास होगा।

प्रारूप-10
नियम 6(7) देखिए

प्राधिकृत अधिकारी का कार्यालय नगर पालिका लालसोट

क्रमांक-न.पा.ल./23/8882 **लोक सूचना** दिनांक-16.03.2023

(1) श्री उपेन्द्र कुमार वैरवा पुत्र पप्पू लाल वैरवा निवासी सुरतपुरा ने इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का गैर-कृषिक (आवासीय) प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारी के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया हैं।

क्र. सं.	जिले सहित तहसील का नाम	राजस्व ग्राम का नाम	खसरा नं.	90-क हेतु प्रस्तावित रकबा का क्षेत्र
1	लालसोट जिला दौसा	थलोज	खसरा नं. 200/18 रकबा 1 बीघा 6 बिस्वा कुल किता 1 रकबा 1 बीघा 6 बिस्वा	सम्पूर्ण

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम 1955 की धारा 63 के अधीन आवासीय प्रयोजन के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो यह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अद्योहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष मर्थक दस्तावेजों के साथ आक्षेप प्रस्तुत कर देगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज 16.03.2023 को जारी की गयी। (सीमा चौधरी)

प्राधिकृत अधिकारी, नगर पालिका लालसोट

उत्तर पश्चिम रेलवे ई-नीलामी माह मार्च - 2023 (संशोधित) G20

No. S4/38/Vol-V दिनांक : 16.03.2023

अनुपयोगी रेल सामग्री एवं अलोह, स्क्रेप सवारी कोच, वैगन सामग्री, मशीन, विविध स्क्रेप रेल तथा अन्य रेल पथ स्क्रेप सामग्री नीचे दर्शाए गए भण्डार डिपो व डिविजन में ई-नीलामी की जायेगी।

डिपो / डिविजन माह मार्च-2023	अजमेर डिपो	अजमेर डिविजन	जोधपुर डिपो	जोधपुर डिविजन
(पूर्व में)	31.03.2023	31.03.2023	31.03.2023	31.03.2023
(संशोधित)	29.03.2023	29.03.2023	29.03.2023	29.03.2023

अन्य तिथियाँ यथावत रहेंगी।

1. नीलामी केटेलोग वेबसाईट www.ireps.gov.in पर अपलोड कर दिये जायेंगे।
2. उत्तर पश्चिम रेलवे अब स्क्रेप नीलामी ई- नीलामी द्वारा करती है । इसलिये सभी बोलीकर्ताओं से अनुरोध है कि जल्दी से जल्दी ई-नीलागी हेतु वेबसाईट www.ireps.gov.in । अपना पंजीकरण करवाये।
3. बोलीकर्ता डिजिटल हस्ताक्षर नीलामी से पूर्व ले लेवे एवं ई-भुगतान से किया जा सकता है। विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट पर सम्पर्क करें।
4. विस्तृत जानकारी के लिए संम्बन्धित नीलामी कर्ता डिपो, डिविजन अधिकारी, उप मुख्य सामग्री प्रबन्धक, वरिष्ठ मण्डल सामग्री प्रबंधक एवं भण्डार विभाग प्रधान कार्यालय, जयपुर में सम्पक करें।

हमें /NWRailways पर फॉलो करें 270-AK/23

कॉनवे का अर्धशतक, न्यूजीलैंड के दो विकेट पर 155 रन

वेलिंगटन, 17 मार्च। सलामी बल्लेबाज डेवोन कॉनवे के अर्धशतक की मदद से न्यूजीलैंड ने श्रीलंका के खिलाफ दूसरे टेस्ट क्रिकेट मैच के बारिश से प्रभावित पहले दिन शुक्रवार को यहां अपनी पहली पारी में दो विकेट पर 155 रन बनाए। बारिश के कारण दिन भर में केवल 48 ओवर का खेल ही हो पाया। श्रीलंका ने टॉस जीतकर न्यूजीलैंड को पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया। कॉनवे ने 78 रन की तेजतर्रार पारी खेली तथा टॉम लैथम (21) के साथ पहले विकेट के लिए 87 रन की साझेदारी करके टीम को अच्छी शुरुआत दिलाई। खराब रोशनी के कारण जब दिन का खेल जल्दी समाप्त किया गया उस समय केन विलियमसन 26 और हेनरी निकोल्स 18 रन पर खेल रहे थे। भारी बारिश के कारण सुबह लंच से पहले का खेल नहीं हो पाया था। इसके बाद श्रीलंका के कप्तान दिमुथ करुणारत्ने ने टॉस जीतकर पहले क्षेत्ररक्षण का फैसला करने में कोई देर नहीं लगाई लेकिन पिच से उनके तेज गेंदबाजों को वैसी मदद नहीं मिली जिस तरह की वह उम्मीद कर रहे थे। कॉनवे और लैथम ने सतर्क शुरुआत की। लैथम ने 73 गेंदों पर 21 रन बनाने के बाद कासुन रजिता की गेंद पर हवा में शॉट खेल कर सीमा रेखा पर कैच दिया। कॉनवे ने 69 गेंदों पर अपना आठवां अर्धशतक पूरा किया। वह बडी पारी खेलने की स्थिति में दिख रहे थे लेकिन इस स्पिनर धनंजय डिसिल्वा की गेंद पर वापस उनको कैच थमा बैठे।

द्रविड की सलाह पर अर्शदीप काउंटी मैचों में केंट का प्रतिनिधित्व करेंगे

केंट, 17 मार्च। भारतीय टीम के मुख्य कोच राहुल द्रविड की सलाह पर बायें हाथ के प्रतिभाशाली तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह इंग्लैंड के आगामी काउंटी सत्र में केंट की टीम के लिए प्रथम श्रेणी के पांच मुकाबले में खेलेंगे।

केंट काउंटी टीम ने अपनी वेबसाइट पर यह घोषणा की।

यहां जारी विज्ञिप्त में कहा गया, " केंट क्रिकेट को यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि भारत के अंतरराष्ट्रीय गेंदबाज अर्शदीप सिंह जून और जुलाई के बीच काउंटी चैंपियनशिप के पांच मैचों में टीम के प्रतिनिधित्व के लिए उपलब्ध रहेंगे। उनकी उपलब्धि हालांकि जरूरी मंजूरी के अधीन होगी।" अर्शदीप ने कहा कि उन्होंने लाल गेंद के खेल में अपने कौशल को निखारने के लिए काउंटी में खेलने का फैसला किया। उन्होंने इस विज्ञिप्त ने कहा, "मैं इंग्लैंड में लाल गेंद से क्रिकेट खेलने के लिए उत्साहित हूं और प्रथम श्रेणी के खेल में अपने कौशल में सुधार करना जारी रखना चाहता हूं।

मैं केंट के सदस्यों और समर्थकों के सामने प्रदर्शन करने के लिए उत्सुक हूं। राहुल द्रविड ने मुझे पहले ही बता दिया है कि इस क्लब का इतिहास शानदार है।" अर्शदीप ने पिछले साल नवंबर में न्यूजीलैंड के खिलाफ एकदिवसीय पदार्पण किया था। उन्होंने सीमित ओवरों मे भारत के लिए कुल 29 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले है। उन्होंने प्रथम श्रेणी के सात मैच में 23.84 की औसत से 25 विकेट लिये है। वह केंट काउंटी टीम से जुड़ने वाले चौथे भारतीय खिलाड़ी है। इससे पहले कुंवर शमशेरा सिंह, द्रविड और नवदीप सैनी इस टीम का प्रतिनिधित्व कर चुके है।

वॉर्नर ने पंत की अनुपस्थिति में अतिरिक्त प्रयास करने का संकल्प लिया

नयी दिल्ली, 17 मार्च। दिल्ली कैपिटल्स के नवनियुक्त कप्तान डेविड वॉर्नर ने कहा कि ऋषभ पंत के अस्वस्थ होने के कारण इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के इस सत्र में उन्हें एक बड़े खिलाड़ी की कमी पूरी करनी होगी और साथ ही संकल्प लिया कि इस भारतीय स्टार की अनुपस्थिति में टीम खिताब जीतने के लिए अतिरिक्त प्रयास करेगी। पंत की अनुपस्थिति में वॉर्नर को दिल्ली कैपिटल्स का कप्तान नियुक्त किया गया है।

उन्होंने इसके बाद टीम के नियमित कप्तान पंत को संदेश भेजा जिनका अभी उपचार चल रहा है। वॉर्नर ने फ्रेंचाइजी द्वारा जारी बयान में कहा," हम हर सत्र में प्रेरित होते हैं लेकिन इस साल आपकी अनुपस्थिति में हम खिताब जीतने के लिए अधिक प्रेरित हैं। हम आपके स्वस्थ होने की यात्रा में आपके साथी बनने जा रहे हैं। हम आपको विशेष संदेश भेजने जा रहे हैं और उम्मीद है कि आप हमारे एक मैच में उपस्थित रहोगे।"उन्होंने कहा," दिल्ली कैपिटल्स परिवार की तरफ से मैं आपके जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूं।"

आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड IDFC FIRST Bank

(पूर्व में केपीटल फर्स्ट लिमिटेड और आईडीएफसी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित)

CIN : L65110TN2014PLC097792

पंजीकृत कार्यालय - केआरएम टॉवर्स, 8वीं मंजिल, हैरिंग्टन रोड, चेटपेट, चैन्नाई-600031

फोन- +91 44 4564 4000 I फैक्स- +91 44 4564 4022

परिशिष्ट- VI {नियम 8 (1)}

कब्जा नोटिस

(अचल सम्पत्ति का)

चूंकि अधोहस्ताक्षरकर्ता आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड (पूर्व में केपीटल फर्स्ट लिमिटेड और आईडीएफसी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित) के प्राधिकृत अधिकारी है अत: वित्तीय आस्तियों के प्रतिभूतिकरण व पुर्न निर्माण एवं प्रतिभूति ब्याज प्रवर्तन अधिनियम, 2002 तथा उपर्युक्त कथित अधिनियम की धारा 13(12) के साथ पठित प्रतिभूति ब्याज (प्रवर्तन) अधिनियम 2002 के नियम 3 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए दिनांक 24.12.2022 को एक मांग पत्र कर्जदारों, सह-कर्जदारों एवं जमानतियों गुरूकृपा ज्वेलर्स प्रो. निरंजन खंडेलवाल, 2. दीपेश जेम्स प्रो. सुनीता खंडेलवाल, 3. दीपेश खंडेलवाल, 4. निरंजन खंडेलवाल, 5. सुनीता खंडेलवाल को जारी किया गया था।, जिसमें 23.12.2022 की तिथी को देय, मांग पत्र में उल्लेखित राशी रुपये 2,16,40,585.73/- (रुपये दो करोड सोलह लाख चालीस हजार पांच सौ पिच्चासी और पैसे तिहतर मात्र) का भुगतान उपयुक्त नोटिस प्राप्ती के 60 दिन के अन्दर करने को कहा गया था।

चूंकि कर्जदार उक्त राशि को वापस चुकाने में विफल रहे है अत: कर्जदारों एवं जनसाधारण को नोटिस के माध्यम से सूचित किया जाता है कि कथित अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (4) के साथ पठित प्रतिभूति ब्याज (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 8 जिसका नोटिस में उल्लेख किया गया है के तहत अधोहस्ताक्षरकर्ता को प्राप्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उन्होंने यहां निम्न वर्णित संपत्तियों के आज मार्च 2023 के 15वें दिन भौतिक रूप से अपने कब्जे/अधिकार में ले लिया है।

विशेष रूप से कर्जदारों एवं आम जनता को एतद्द्वारा सावधान किया जाता है कि वे इन सम्पत्तियों का सौदा लेनदेन नहीं करें तथा इस सम्पत्ति का किसी भी प्रकार से खरीद-बिक्री करने पर उसे आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड (पूर्व में केपीटल फर्स्ट लिमिटेड और आईडीएफसी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित) की प्रभारित शर्तों के अधीन राशि रुपये 2,16,40,585.73/- (रुपये दो करोड सोलह लाख चालीस हजार पांच सौ पिच्चासी और पैसे तिहतर मात्र) का भुगतान उस पर प्रभारित ब्याज सहित करना होगा। कर्जदारों का ध्यान उक्त अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (8) के प्रावधानों की ओर आकर्षित किया जाता है जिसमें प्रतिभूतिकृत सम्पत्तियों को मुक्त करने के बारे में उपलब्ध समयावधि का उल्लेख है।

अचल सम्पत्तियों का विवरण

प्लाट नं. 131, हिम्मत नगर, टौंक रोड, जयपुर, राजस्थान-302017 का पूरा व प्रत्येक भाग, क्षेत्रफल 267.12 वर्गगज, और सीमायें है-पुर्व-रोड 160 फिट चौडी, पश्चिम-प्लाट नं. 130, उत्तर-रोड 30 फिट चौडी, दक्षिण-प्लाट नं. 124

दिनांक- 15 मार्च, 2023 प्राधिकृत अधिकारी,

स्थान- जयपुर आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड

ऋण खाता संख्या-19648872 एवं 36206644 (पूर्व में कैपिटल फर्स्ट लिमिटेड तथा आईडीएफसी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित)

मुख्यमंत्री ने चौंकाया 19 नए जिले और तीन संभागों की घोषणा कर के

पी.सी.सी. अध्यक्ष डोटासरा की मांग पर सीकर को संभाग बनाया, वहीं मालवीय को मजबूत करते हुए बांसवाड़ा भी संभाग बनेगा और पाली भी नया संभाग बना

- जयपुर में अब उत्तर - दक्षिण 2 जिले, वहीं जोधपुर में पूरब और पश्चिम 2 जिले होंगे।
- मुख्यमंत्री ने अपने सलाहकारों, रामकेश मीणा के विधानसभा क्षेत्र गंगापुर सिटी और बाबूलाल नागर के निर्वाचन क्षेत्र दूदू को भी जिला बनाया, रघु शर्मा की मांग पर केकड़ी जिला बना, पायलट समर्थक सुरेश मोदी को नीमकाथाना जिला मिला।

जयपुर, 17 मार्च (का.प्र.)। चुनावी वर्ष में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राजस्थान में पिछले 9 साल से लंबित नए जिलों के गठन की मांग को पूरा करते हुए 19 नए जिलों की घोषणा की है। इसी के साथ उन्होंने 3 नए संभाग भी घोषित किए हैं। अब राजस्थान में कुल 50 जिले होंगे, वही संभागों की संख्या बढ़कर 10 हो जाएगी। राजधानी जयपुर को भी उत्तर और दक्षिण जिलों के रूप में बांटा गया है। वही जोधपुर को पूरब और पश्चिम जिलों के रूप में बांटा गया है। वहीं अब लोग असमंजस में हैं कि राजस्थान की राजधानी जयपुर उत्तर या जयपुर दक्षिण रहेगी या दोनों। यह असमंजस नोटिफिकेशन जारी होने के बाद ही समाप्त होगा। असमंजस यह भी है कि जयपुर में दो जिले के दो कलैक्टर, दो एस.पी. होंगे, तो क्या कमिश्नरेट भी दोहोंगे या कमिश्नरेट समाप्त किया जायेगा।

राजस्थान में वर्ष 2008 में वसुंधरा राजे ने मुख्यमंत्री रहते हुए प्रतापगढ़ को जिला बनाया था। उसके बाद से राजस्थान में नए जिलों के गठन की मांग उठती रही थी। इसको लेकर कई जगह धरने प्रदर्शन हो चुके थे और विधायकों की ओर से सरकार को मांग पत्र दिए गए थे। हाल ही जब रिटायर्ड आईएएस राम लुभाया की अध्यक्षता में कमेटी का गठन हुआ, तो कमेटी के पास 60 से ज्यादा जिलों के गठन के लिए मांग पत्र प्रस्तुत हुए थे। हालांकि 21 मार्च को राम लुभाया कमेटी का समय समाप्त होता, उससे पहले ही सरकार ने कमेटी का समय 6 महीने के लिए बढ़ा दिया था। उस समय माना जा रहा था कि नए जिलों की घोषणा फिलहाल नहीं होगी, लेकिन मुख्यमंत्री ने अनुदान मांगों का जवाब देते हुए 19 नए जिले और तीन नए संभागों की घोषणा करते हुए सभी को चौंका दिया।

सीकर, बांसवाड़ा और पाली के रूप में तीन नए संभागों की घोषणा की गई। जिले की मांग को लेकर चप्पल - जूते पहनना छोड़ चुके विधायक मदन प्रजापत को संबोधित करते हुए गहलोत ने बालोतरा को जिला बनाने का ऐलान किया। उन्होंने विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष कैलाश मेघवाल का भी नाम लिया और शाहपुरा व भीलवाड़ा को जिला बनाने की घोषणा की। गहलोत ने संभाग और जिलों के गठन के लिए शुरुआती तौर पर 2000 करोड़ रुपए का प्रावधान किया है। श्रीगंगानगर जिले से अनूपगढ़, बाड़मेर जिले से बालोतरा, अजमेर से ब्यावर, भरतपुर जिले से डीग, नागौर जिले से डीडवाना-कुचामन, जयपुर जिले से दूदू, सवाई माधोपुर जिले से गंगापुर सिटी, अजमेर जिले से केकड़ी, जयपुर और अलवर जिले से कोटपूतली-बहरोड़, अलवर जिले से खैरथल, सीकर जिले से नीम का थाना, जोधपुर जिले से फलौदी, उदयपुर जिले से सलूंबर, जालौर जिले से सांचौर और भीलवाड़ा जिले से शाहपुरा नए जिले बनेंगे।

जिन 19 जिलों की घोषणा हुई है, उनमें से अभी 8 में अनूपगढ़, बहरोड़, फलोदी, शाहपुरा, ब्यावर, गंगापुर,दूदू और सलूंबर में कांग्रेस के विधायक नहीं है। हालांकि गंगापुर, दूदू और बहरोड़ से जीते निर्दलीयों ने सरकार को समर्थन दिया हुआ है। वही जयपुर जिले के दो हिस्सों की बात करें तो यहां पर अभी जिले का बंटवारा होने पर राजनीतिक स्थिति क्लियर होगी, लेकिन जिले में अभी भाजपा के चार विधायक हैं। यदि संभाग की बात करें, तो सीकर जिले में कांग्रेस के सभी विधायक जीते हैं। वही पाली संभाग के पाली जिले में कांग्रेस के पास एक भी विधायक नहीं है। संभाग घोषित किए गए बांसवाड़ा जिले में कांग्रेस के पास 2 विधायक हैं। मुख्यमंत्री ने संभाग और जिलों की घोषणा करते हुए जहां अपने नजदीकी लोगों का पूरा ध्यान रखा है।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के दो समर्थक निर्दलीय विधायक और सलाहकार रामकेश मीणा और बाबूलाल नागर की विधानसभाओं को भी जिला बनाया गया है। सचिन पायलट समर्थक सुरेश मोदी की मांग पर नीम का थाना जिले का गठन हुआ है। वहीं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा की मांग पर सीकर को संभाग घोषित किया गया है। मुख्यमंत्री के नजदीकी उप सचेतक महेंद्र चौधरी के विधानसभा क्षेत्र से कुचामन को डीडवाना के साथ जिला बनाया गया है। मंत्री महेंद्रजीत मालवीय को मजबूत करते हुए बांसवाड़ा को भी संभाग बनाया गया है।

नए जिले और संभाग

नए जिले

1- अनूपगढ़
2- बालोतरा
3- ब्यावर
4- डीग
5- डीडवाना -कुचामन
6- दूदू
7- गंगापुरसिटी
8- जयपुर उत्तर
9- जयपुर दक्षिण
10- जोधपुर पूर्व
11- जोधपुर पश्चिम
12- केकड़ी
13- कोटपुतली बहरोड़
14- खैरथल
15- नीम का थाना
16- फलौदी
17- सलूम्बर
18- सांचौर
19- शाहपुरा

नए संभाग

1- बांसवाड़ा
2- पाली
3- सीकर

अखिलेश मिले ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ममता, दोनों ने प्रण किया है कि वे कांग्रेस रहित विपक्षी पार्टियों का एक ग्रुप बनाएंगे।

इन दोनों के भाजपा के खिलाफ एक एकीकृत विपक्ष के रूप में एक होने की दूर-दूर तक संभावना नहीं है क्योंकि इनमें एक तो यू.पी. में बुरी तरह हार चुका है और दूसरी पर बंगाल में तृणमूल कांग्रेस (टी.एम.सी.) नेताओं द्वारा बड़े पैमाने पर किए गए भ्रष्टाचार का भारी दबाव है।

वास्तव में, अगर कोई बात है तो वह यह कि तृणमूल सरकार लड़खड़ाती प्रतीत होती है, क्योंकि उसके सभी शीर्ष नेता ई.डी. और सी.बी.आई. के महाजाल में फंसे हुए हैं। उनके लिए बचने का शायद ही कोई रास्ता हो क्योंकि उन्हें उनके घरों और अन्य पतों पर नोटों के ढेर के साथ पकड़ा गया था। बदनामी इतनी ही नहीं है, ऐजेन्सियों ने भारी संख्या में इतनी चल व अचल सम्पत्ति का पता लगाया है कि जिसकी गणना नहीं की जा सकती। इतना ही नहीं, एक आरोपी अनुब्रत मोण्डल के बॉडी गॉर्ड की पहचान रीयल एस्टेट्स के मालिक के रूप में की गई, जो 100 करोड़ रूपयों से अधिक का कारोबार था।

ममता बहुत अधिक बदनाम हो चुकी हैं और उनका राजनीतिक रिकॉर्ड अब इतना खराब है कि राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में उनके शायद ही कोई भूमिका निभाने की उम्मीद है। राहुल गांधी ने नॉर्थ-ईस्ट राज्यों के विधानसभा चुनावों से पूर्व अपने चुनाव प्रचार के दौरान ममता बनर्जी की कड़ी आलोचना की थी।

और, बंगाल से बाहर अपनी पार्टी की उपस्थिति दर्ज कराने के अपने हताशापूर्ण प्रयासों के बावजूद वह बुरी तरह से विफल हुई हैं। वह त्रिपुरा में एक भी सीट नहीं जीत सकीं और ना ही किसी अन्य राज्य में कोई सेंध मार सकीं। मेघालय में कांग्रेस के जो पांच विधायक उनकी पार्टी में शामिल हुए थे, वे अब अपना राजनीतिक अस्तित्व खो चुके हैं।

उत्तर भारत के विभिन्न राज्यों में अपना जनाधार बढ़ा रही आम आदमी पार्टी (आप) एक सम्मानित विपक्षी पार्टी के रूप में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। वह बिना किसी शिष्टता के ममता बनर्जी को खारिज करती है।

भाजपा के विरूद्ध कांग्रेस को विपक्ष के खेमे से बाहर रखने के ममता के प्रमुख दृष्टिकोण का भी कोई तुक नहीं है। कांग्रेस आज की तारीख में भी भाजपा के खिलाफ देश की सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी है। जैसी कि उम्मीद थी, ममता बनर्जी ने कहा है कि यह मानना ग़लत है कि कांग्रेस विपक्ष की "बिग बॉस" है। वास्तव में वह अपना राजनीतिक अस्तित्व बनाए रखने को लेकर ही कांग्रेस का कद छोटा करने की दिशा में काम करती रही हैं।

ममता बनर्जी ने इससे पहले गोवा में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए कांग्रेस के प्रमुख नेताओं की खरीद-फरोख्त की थी, जिसका उलटा असर हुआ क्योंकि विधानसभा चुनाव से पूर्व राज्य के जो नेता उनकी पार्टी में शामिल हुए थे, वे चुनाव के दिन से पहले ही कांग्रेस में लौट आए।

इसके बाद मेघालय में कांग्रेस के आधे विधायक तृणमूल कांग्रेस में शामिल हुए, जिससे राज्य की कांग्रेस सरकार का तुरन्त प्रभाव से पतन हो गया था।

उसके बाद मेघालय में हुए विधानसभा चुनावों में तृणमूल कांग्रेस ने सभी 60 सीटों पर चुनाव लड़ा। उसे उम्मीद थी कि वह कांग्रेस के चुनावी जनाधार की मदद से यहां सत्ता पर काबिज हो जाएगी।, लेकिन ममता की पार्टी 5 सीटों को छोड़कर सभी पर चुनाव हार गई थी। इन पांच सीटों पर भी कांग्रेस छोड़कर टी.एम.सी. में आए नेताओं ने जैसे-तैसे जीत दर्ज की। इसलिए तृणमूल राज्य में सरकार गठित करने के आस पास भी नहीं पहुंच सकी।

'पहले संसद से बाहर माफी मांगें, फिर सदन में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चाहने से पहले, बाहर क्षमा याचना करनी चाहिये। शहज़ाद ने ट्वीट किया "दुख की बात है कि ईगो नं. 1 परिवार संसद की संस्था से ऊपर है।"

उन्होंने कहा कि राहुल ने विदेशी धरती पर विदेशी हस्तक्षेप की माँग करके हमारी सम्प्रमुता के खिलाफ एक घोर अपमानजनक टिप्पणी की है। अगर वे संसद को लेकर गंभीर है तो उन्हें संसद में सम्बल माँगने से पहले, तुरन्त ही बाहर माफी माँगनी चाहिये थे।

उन्होंने ट्वीट किया, "आप संसद की जड़ नहीं काट सकते तथा उसके शरण माँगिये । पहले माफी माँगे देश से।" भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा ने शुक्रवार को कहा कि राहुल गांधी "राष्ट्र विरोधी टूलकिट" का स्थाई हिस्सा बन गये हैं।"

नड्डा ने समाचार एजेंसी ए एन आई से कहा, "यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कांग्रेस पार्टी राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में लिप्त होती जा रही है। राष्ट्र द्वारा बार-बार अस्वीकार कर दिये जाने के बाद, राहुल गांधी अब इस राष्ट्रविरोधी टूल-किट के स्थाई हिस्सा बन गये हैं। उन्होंने यह भी कहा कि जब राहुल गांधी ने "भारत के मामलों में एक अन्य देश के हस्तक्षेप की माँग की", उस समय उनका इरादा क्या था। इंग्लैंड में एक समारोह के दौरान, राहुल गांधी ने कहा था कि भारतीय लोकतंत्र के ढाँचे पर हमला हो रहा है तथा देश की संस्थाओं पर "पूरा-पूरा हमला" हो रहा है। भाजपा नेताओं तथा मोदी सरकार के मंत्रियों के इन आरोपों, कि इंग्लैंड यात्रा के दौरान गांधी के भाषण राष्ट्र-विरोधी थे, के बावजूद, शीर्षस्थ विशेषज्ञों द्वारा उनके संवादों के वीडियोज़ की बारीक संवीक्षा दर्शाती है कि उनमें ऐसा कुछ नहीं है, जिसे "राष्ट्र-विरोधी कहा जा सके।

इससे पूर्व, कांग्रेस सांसद के.सी. वेणुगोपाल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ विशेषाधिकार कार्यवाही किये जाने के लिये राज्य सभा के सभापति जगदीश धनकड़ को पत्र लिख दिया। उन्होंने पत्र में लिखा है कि प्रधानमंत्री मोदी ने पार्टी नेता सोनिया गांधी तथा राहुल गांधी के खिलाफ "अनादरपूर्ण, अप्रिय तथा मानहानि कारक" टिप्पणियाँ की हैं।

नियम 188 के तहत, सभापति को दिये गये अपने नोटिस में, वेणुगोपाल ने प्रधानमंत्री के 9 फरवरी के उस भाषण का हवाला दिया है, जो उन्होंने राष्ट्रपति के सम्बोधन के धन्यवाद प्रस्ताव के जवाब में दिया था।दरअसल, कांग्रेस ने मोदी पर आरोप लगाया था कि वे अपने भाषणों में नेहरू का उल्लेख नहीं करते, जिसके जवाब में, मोदी ने कहा था कि नेहरू का कोई भी वंशज नेहरू सरनेम नहीं लगाता है।

'छह दिन...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के संरक्षण में पल रहे हैं। बच्ची को बरामद नहीं किया गया तो उग्र आंदोलन की राह पकड़नी होगी।

ए.बी.वी.पी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अपर सैशन न्यायालय के समक्ष एबीवीपी के छात्र गुलशन मीना, देव पलसानिया, महेश मीना, विष्णु कुमार, प्रमोद मीना और पीयूष चौधरी की ओर से अधिवक्ता आयुष मल ने जमानत के लिए प्रर्थाना पत्र पेश किया। इसमें कहा गया कि प्राथी सभी छात्र निर्दोष हैं।

'सोमवार से ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दिये बिना, लोकसभा में प्रधानमंत्री मोदी के विरूद्ध टिप्पणी करके, नियम 352 भी तोड़ा है। इस बीच कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने शुक्रवार को दृढ़तापूर्वक कहा कि राहुल द्वारा माफी माँगे जाने का तो प्रश्न ही नहीं है। उन्होंने भाजपा अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के उस बयान को खारिज कर दिया, जिसमें उन्होंने राहुल को "राष्ट्र-विरोधी" बताया है, वहीं, राहुल, जो लोकसभा स्थगित हो जाने के बाद, संसद भवन पहुँचे थे, ने नड्डा के आरोप पर कोई प्रतिक्रिया देने से इनकार कर दिया।

लन्दन में राहुल द्वारा की गई टिप्पणी के लिये, उन पर कड़ा प्रहार करते हुये नड्डा ने कहा था कि राहुल"राष्ट्रविरोधी टूल-किट" का स्थाई हिस्सा बन गये हैं।

नड्डा ने कहा था, "यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कांग्रेस राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में लिप्तहो रही है। राष्ट्रद्वारा बार-बार खारिज कर दिये जाने के बाद, राहुल गांधी अब इस राष्ट्रविरोधी टूल-किट का स्थाई हिस्सा बन गये हैं।"

विपक्षी सांसदों संसद भवन परिसर में महात्मा गांधी की मूर्ति के समक्ष प्रदर्शन किया, जहाँ खड़गे ने कहा कि अड़ानी-प्रकरण की जाँच जॉइन्ट पार्लियामेन्ट्री कमेटी (जेपीसी) की माँग का दफ्न करने की भाजपा की कोशिश, राहुल के झूठं मुद्दे को उठाने से कारगर होने वाली नहीं हैं।

गहलोत...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मुख्यमंत्री को भारी शर्मिंदगी का सामना करना पड़ सकता है। समझा जाता है कि सारे कर्ताधर्ता गहलोत ही है। यह साबित करना मुश्किल नहीं है कि सरकार ने ही फोन टैपिंग की अनुमति दी थी इससे मुख्यमंत्री, जो नए जिलों की घोषणा कर खुशी से झूम रहे हैं, को मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908